Initial ओ३म् ॥

संस्कृत-भाषा-प्रथमं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (जि० मेरठ) निवासि--स्वामि-
तुलसीराम-शर्म-विरचितम् ॥

—+※+—

निर्मात्रा तुलसीराम स्वामिना स्वप्रबन्धेन स्वकीये
स्वामियन्त्रालये मुद्रितम् प्रकाशितञ्च ॥

मेरठ

संवत् १९५३ ता० २१-२-९७

इसकी रजिस्टरी कराई गई और किसीको
छापनेका अधिकार नहीं है ॥

"ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दूपराग द्वितीयोंऽशः"

ऐसा और इतना संक्षेपसे अब तक कोई नहीं छपा ! शब्दप्रमाण द्वारा "मन्त्रब्राह्मण दोनों वेद हैं वा क्या" ? इत्यादिका निर्णय ७१ प्रमाणोंसे किया है। इसमें अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्रा०, सांख्य, आपस्तम्ब, प्रातिशाख्य, कात्यायन, बौधायन, परिशिष्ट, मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेयब्रा०, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौशिकसूत्र, अमरकोश, लघुशब्देन्दुशेखर, निरुक्त, ज्ञाननेत्रभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वेदान्तसूत्र, न्यायदर्शन, तैत्तिरीयआरण्यक, पिङ्गलसूत्र, चरणव्यूह, न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थोंसे बहुत से प्रमाण संग्रह करके (मैंने) तुलसीराम स्वामीने बनाया ।॥

भूमिका ॥

मैंने इस पुस्तकको इसलिये लिखा है कि भारतके ऋषि महर्षियोंने यद्यपि पुराने समयके अनुसार संस्कृतभाषाके उत्तम २ ग्रन्थ रचे, परन्तु समयके हेर फेरसे आज कलके समयमें नई शिक्षाप्रणाली के सम्मुख सुगम प्रतीत नहीं होते। हां, पूर्ण परिश्रम करने पर तो पूर्ण फलदायक हैं, परन्तु जिस प्रकार आज कल छोटे २ विद्यार्थी "प्राइमर" पढ़ते २ ही परस्पर "अंगरेज़ी" शब्द बोल २ कर प्रतिदिन उत्साहको बढ़ाते हैं, जब तक इसी प्रकार हमारी देववाणी की पुस्तकें प्रचरित न की जायें तब तक देववाणीका जीर्णोद्धार दुर्घट है।

द्वितीय कारण पुस्तक लिखनेका यह भी है कि आज कल प्रायः शिक्षित पुरुष संस्कृतमें रुचि करते हैं परन्तु न तो उनको कोई अध्यापक ही सुलभतासे मिलता न अब तक संस्कृतमें कोई ऐसी पुस्तक निर्म्मित हुई कि जिससे विना अध्यापकके स्वयम् कुछ सीख सकें। उनको ये पुस्तकें स्वयम् संस्कृत सिखावेंगी ॥

पांच वारकी छपी ६००० प्रथम पुस्तकोंके शीघ्र चुक जानेसे छठी वार छपी है इससे मैंने अपना श्रम सफल समझा। द्वितीय भाग ३ वार और तृतीय भाग दो वार छप चुके हैं। चतुर्थ भाग छप रहा है ॥

तुलसीराम स्वामी

ज्ञापन ॥

हमारे यहांसे "वेद-[illegible]" नामक मासिक पत्र प्रतिमास मनोहर वैदिकसिद्धान्तोंकी व्याख्यासे विभूषित प्रकाशित होता है जिसके द्वारा वैदिकधर्मका गौरव देश देशान्तरमें प्रचरित होता है। वार्षिक मूल्य केवल १) मात्र ॥

तुलसीराम स्वामी—सम्पादक "वेदप्रकाश"—मेरठ

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-प्रथमं पुस्तकम् ॥

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः* ॥

व्यञ्जन

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण ।
त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व ।
श ष स ह ॥

बारह अक्षरी

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ।
इसी प्रकार, ख खा खि खी खु खू खे खै खो इत्यादि जानो ॥

ज के नीचे बिन्दी लगानेसे ज़ होता है। ऐसे ही ख़ क़ ग़ ड़ ढ़ फ़ जानो ॥

कर । भर । अब । तब । जब । हम । तुम । वह । केवल । पाठक । पूजक । शोभन । संवत् । बैठक । शोभाराम । जयदेव । अंगरेज़ ॥ आओ । जाओ । बैठो । चलो । ठहरो । खाओ ॥ काम कर । जल भर । अब घर जा । तब मत पढ़ना । जब हम जावेंगे । तुम कहां जाते हो । वह नहीं जाता । तुम केवल बैठे रहते हो । अड़तालीसवां संवत् है । अपने पाठकसे पूछो ॥

संयुक्त अक्षर—उदाहरण सहित ॥

न+त+र=न्त्र, यन्त्रालय छापेख़ानेका नाम है । क+र=क्र, कालचक्रका हेर फेर है। ज+य=ज्य, अंगरेज़का राज्य है। स+त=स्त, हमारी पुस्तक लाओ। न+द=न्द, मन्दिरमें बैठो । ण+ड=ण्ड, पण्डितका कहना मानो । द+द=द्द, यह रद्दी काग़ज़ है । द+य=द्य, र+य=र्य, विद्यार्थी पढ़ते हैं । र+ब=र्ब, गर्ब मत करो । व+य=व्य, ख+य=ख्य, व्याख्यान सुननेको चलो । स+क=स्क, तस्कर चोरका नाम है । ग+र=ग्र, यह छोटा ग्राम है । न+त=न्त, सबका अन्त है।

*यद्यपि स्वरोंमें अ इ उ ऋ ऌ ह्रस्व, और आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ, तथा अ३ इ३ उ३ ऋ३ ऌ३ ए३ ऐ३ ओ३ औ३ प्लुत हैं इस कारण ९ स्वरोंके २२ भेद हैं तथा "अं, अः" ये दो स्वर नहीं किन्तु अ के साथ अनुस्वार और विसर्ग का स्वरूप है परन्तु सम्प्रति भाषामें ऐसा ही प्रचार होरहा है ॥

प र–प्र, प्रथम पुस्तक पढ़ो। द ऋ–दृ, दृढ़का अर्थ मज़बूत है। र ण–र्ण, कर्ण कानको कहते हैं। श व–श्व, श र–श्र, द ध–द्ध, ईश्वरमें श्रद्धा करो। द व–द्व, यह द्वितीय पुस्तक है। त स–त्स, कुत्सा बुराई कहाती है। र घ–र्घ, अर्घ हाथ धोनेकेलिये जलको कहते हैं। त ऋ–त्र, तृतीय पुस्तक पढ़। म ब–म्ब, च छ–च्छ, कम्बल अच्छा है। प न–प्न, स व–स्व, स्वप्न देखता था। क ऋ–कृ, प ण–प्ण, कृष्ण बड़े योगी थे। म म–म्म, गुम्मट ऊंची है। त व–त्व, त्वम् का अर्थ तू है। क य–क्य, क्या करते हो। ष ठ–ष्ठ, षष्ठ छठेका नाम है। कुष्ठ रोगका नाम है। ष ट–ष्ट, दुष्ट बुरेको कहते हैं। ग ऋ–गृ, गृह को जाओ। त त–त्त, मत्त पागलको कहते हैं। श य–श्य, श्याम कम्बल है। ब द–ब्द, शब्द सुनो। क त–क्त, रक्त बहता है। भ य–भ्य, पढ़नेका अभ्यास करो। म य–म्य, त य–त्य, आलस्य त्यागदो। ल द–ल्द, जल्दी मत करो। क ष–क्ष, ड क–ङ्क, रुक्मका कङ्कण है। न द र–न्द्र, र य य–र्य्य, इन्द्र सूर्य्यको कहते हैं। स त र–स्त्र, शास्त्रके अनुसार चलो। र ध व–र्ध्व, ग न–ग्न, अग्निशिखा सदा ऊर्ध्वगामिनी रहती है। क ष–क्ष, क्षमा करो। ज ञ–ज्ञ, ज्ञानसे सुख मिलता है॥

संख्या एक से सौ तक॥

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९				
१०	२०	३०	४०	५०	६०	--	--	--	१००

प्रथमः पाठः १॥

सः—वह	त्वम्—तू	अहम्—मैं
तौ—वे दोनों	युवाम्—तुम दोनों	आवाम्—हम दोनों
ते—वे (सब)	यूयम्—तुम (सब)	वयम्—हम (सब)

गम् (लृ) (धातु)—जाना	आगम (धातु) आना
सः गच्छति—वह जाता है	सः आगच्छति—वह आता है
तौ गच्छतः—वे दोनों जाते हैं	तौ आगच्छतः—वे दोनों आते हैं
ते गच्छन्ति—वे (सब*) जाते हैं	ते आगच्छन्ति— वे (सब) आते हैं
त्वम् गच्छसि—तू जाता है	त्वम् आगच्छसि—तू आता है
युवाम् गच्छथः—तुम दोनों जाते हो	युवाम् आगच्छथः—तुम दोनों आते हो
यूयम् गच्छथ—तुम (सब) जाते हो	यूयम् आगच्छथ—तुम (सब) आते हो
अहम् गच्छामि—मैं जाता हूं	अहम् आगच्छामि—मैं आता हूं
आवाम् गच्छावः—हम दोनों जाते हैं	आवाम् आगच्छावः—हम दोनों आते हैं
वयम् गच्छामः—हम (सब) जाते हैं	वयम् आगच्छामः—हम (सब) आते हैं

द्वितीयः पाठः २॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

हम जाते हैं। वे जाते हैं। तुम जाते हो। वह आता है। तू जाता है। हम दोनों आते हैं। तुम दोनों जाते हो। वे दोनों जाते हैं। देवदत्त आता है। शोभाराम आता है। विष्णुदत्त जाता है॥

तृतीयः पाठः ३॥

तिष्ठति—ठहरता है।	पश्यति—देखता है।
पठति—पढ़ता है।	धावति—दौड़ता है।
क्रीडति—खेलता है।	लिखति—लिखता है।

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

मैं ठहरता हूं। वे पढ़ते हैं। तुम खेलते हो। हम देखते हैं। वह दौड़ता है। तू लिखता है। वे दोनों पढ़ते हैं। तुम दोनों खेलते हो। हम दोनों

*"सब" कहनेसे बहुवचन समझो अर्थात् दो से अधिकका अर्थ समझो।
ति, तः, न्ति, सि, थः, थ, मि, वः, मः, ये नौ प्रत्यय लगाकर "पठ" आदि नौ नौ २ रूप "गच्छति" आदि के समान बना लो॥

लिखते हैं। वे दोनों जाते हैं। विष्णुमित्र लिखता है। यज्ञदत्त पढ़ता है। शोभाराम खेलता है॥

चतुर्थः पाठः ४॥

गृह शब्दकी सात विभक्तियां—

१	गृहम्= घर गृहे= दोनों घर गृहाणि= (सब) घर	५	गृहात्—घरसे गृहाभ्याम्—दोनों घरोंसे गृहेभ्यः(सब) घरोंसे
२	गृहम्= घरको गृहे= दोनों घरोंको गृहाणि= (सब) घरोंको	६	गृहस्य—घरका, के, की गृहयोः—दोनों घरोंका, के, की गृहाणाम्—(सब) घरोंका, के, की
३	गृहेण=घरसे, के साथ गृहाभ्याम्=दोनों घरोंसे, के साथ गृहैः=(सब) घरोंसे, के साथ	७	गृहे—घरमें, पै, पर गृहयोः—दोनों घरोंमें, पै, पर गृहेषु—(सब) घरोंमें, पै, पर
४	गृहाय=घरके लिये गृहाभ्याम्=दोनों घरोंके लिये गृहेभ्यः—(सब) घरोंके लिये	इसी प्रकार मन्दिर, पुस्तक, धन, वन, पुष्प, फल, स्थान आदि शब्दोंकी विभक्तियां जानो॥	

(संस्कृत बनाओ)

तुम घरको जाते हो। हम मन्दिरसे आते हैं। तुम घरसे आते हो। वह घरकेलिये दौड़ता है। वे पुस्तकको लिखते हैं। वह पुस्तक के साथ खेलता है। हम मन्दिरसे जाते हैं। तुम मन्दिरमें पढ़ते हो। वे दोनों पुस्तक को लिखते हैं। तुम दोनों घरकेलिये दौड़ते हो। हम (सब) मन्दिरसे आते हैं। वे (सब) पुस्तकोंको पढ़ते हैं। वह धनसे खेलता है। हम वनमें पुष्पों को देखते हैं। यज्ञदत्त फलोंकेलिये दौड़ता है॥

पञ्चमः पाठः ५॥

न=नहीं। सुष्ठु=अच्छे। वरम्=अच्छे। नितान्तम्=बिलकुल। त्वरया=जल्दीसे॥

सः न पठति=वह नहीं पढ़ता। ते त्वरया धावन्ति=वे जल्दीसे दौड़ते हैं। यूयम् सुष्ठु पठथ=तुम (सब) अच्छे पढ़ते हो। वयम् नितान्तम् न क्रीडामः= हम बिलकुल नहीं खेलते। सः त्वरया पठति=वह जल्दीसे पढ़ता है। ते वरम् लिखन्ति=वे अच्छे लिखते हैं। यूयम् त्वरया गच्छथ=तुम जल्दीसे जाते हो। वयम् त्वरया न धावामः= हम जल्दीसे नहीं दौड़ते। युवाम् न पठथः=तुम दोनों घरमें नहीं पढ़ते॥

षष्ठः पाठः ६

कः=(पुल्लिङ्ग) कौन । का=(स्त्रीलिङ्ग) कौन । किम्=(नपुंसक) क्या । अस्ति=है । भवति=है । ददाति=देता है, देती है ॥

कः गच्छति=कौन जाता है । का गच्छति=कौन जाती है । विष्णुमित्रः किम् ददाति=विष्णुमित्र क्या देता है । सः कः अस्ति=वह कौन है । यशोदा का भवति=यशोदा कौन है । त्वम् कः=तू कौन ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ.)

विष्णुशर्मा क्या पढ़ता है । रुक्मिणी क्या देती है । मैं क्या पढ़ता हूं । तुम क्या लिखते हो । यह कौन दौड़ता है । मैं क्या लिखता हूं । कौन नहीं पढ़ता । घरसे कौन आता है । मन्दिरमें कौन पढ़ता है । घरमें कौन दौड़ता है । कौन अच्छा लिखता है । कौन नहीं लिखता । कौन घरसे नहीं आता । धर्मदत्त क्या पढ़ता है । विष्णुमित्र क्या लिखता है ॥

सप्तमः पाठः ७ ॥

कुत्र=कहां । तत्र=वहां । अत्र=यहां । उपरि=ऊपर । नीचैः=नीचे ॥

तत्र कः पठति=वहां कौन पढ़ता है । अत्र अहम् लिखामि=यहां मैं लिखता हूं । कृष्णचन्द्रः उपरि गच्छति=कृष्णचन्द्र ऊपर जाता है । अहम् नीचैः न पठामि=मैं नीचे नहीं पढ़ता । सः उपरि किम् पठति=वह ऊपर क्या पढ़ता है ॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

वह नीचे नहीं जाता । तुम वहां क्या पढ़ते हो । हम यहां नहीं आते । वे नीचे जाते हैं । ऊपर कौन है । वे (सब) वहां क्या लिखते हैं । मैं वहां बिलकुल नहीं जाता । वहां कौन नहीं पढ़ता । ऊपर कौन खेलता है । हम नीचे नहीं जाते । तुम घरमें क्या पढ़ते हो । वे वहां नहीं खेलते । हम ऊपर पढ़ते हैं । वे (सब) वहां मन्दिरमें क्या पढ़ते हैं । हम (सब) घरको नहीं जाते । तुम दोनों नीचे क्या पढ़ते हो ॥

अष्टमः पाठ ८ ॥

दूरम्=दूर । च=और । तदनु=उसके बाद । एवम्=ऐसा । एषः=(पुंल्लिङ्ग) यह । एषा=(स्त्रीलिङ्ग) यह । एतत्=(नपुंसक) यह । यः=(पु०) जो । या=(स्त्री०) जो । यत्=(नपुं०) जो । यथा=जैसे । तथा=वैसे । सा=(स्त्री०) वह । तत्=(नपुंसक) वह ॥

ते दूरम् गच्छन्ति—वे दूर जाते हैं। एषा का अस्ति—यह (स्त्री) कौन है। या गच्छति सा पठति—जो जाती है वह पढ़ती है। एषः यथा पठति तथा लिखति—यह जैसे पढ़ता है, वैसे लिखता है। वयम् तदनु गच्छामः—हम (सब) उसके बाद जाते हैं। सः यूयम् च कुत्र गच्छथ—वह और तुम कहां जाते हो। यूयम् वयम् च तत्र न पठामः—तुम (सब) और हम (सब) वहां नहीं पढ़ते। अहम् युवाम् च न क्रीडामः—मैं और तुम दोनों नहीं खेलते। अत्र तत्र च वयम् एतत् न पठामः—यहां और वहां हम यह नहीं पढ़ते॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

वे और तुम (सब) कहां जाते हो। हम दोनों और तुम दोनों ऐसे नहीं पढ़ते जैसे वह पढ़ता है। वह जो (नपुंसक) पढ़ता है सो नहीं लिखता। विष्णुमित्र कहां जाता है और उसके बाद क्या पढ़ता है। हम दूर नहीं जाते॥

नवमः पाठः ९।

मम—मेरा, मेरी, तव—तेरा, तेरी। तस्य—उसका, के, की। अस्माकम्-हमारा, रे, री। युष्माकम्—तुम्हारा, रे, री। तेषाम्—उनका, के, की। यस्य— जिस का, के, की। येषाम्—जिनका, के, की॥

पुस्तकम्—पोथी। लेखनी--क़लम। वस्त्रम्--कपड़ा। मसीपात्रम्--दावात। पत्रम्--काग़ज। उपानत्--जूता। उपवस्त्रम्--रूमाल। पाषाणपट्टिका—स्लेट॥

मम पुस्तकम्-मेरी पोथी। तव वस्त्रम्-तेरा कपड़ा। तस्य लेखनी-उसका क़लम। तेषाम् पुस्तकम्—उनका पुस्तक। येषाम् पुस्तकम्—जिनका पुस्तक। मम उपानत् कुत्र अस्ति—मेरा जूता कहां है। तव मसीपात्रम् कुत्र अस्ति—तेरी दावात कहां है। सः मम पुस्तकम् न ददाति—वह मेरी पोथी नहीं देता। विष्णुमित्रः तेषाम् गृहं गच्छति—विष्णुमित्र उनके घरको जाता है। एतत् युष्माकम् उपवस्त्रम् अस्ति—यह तुम्हारा रूमाल है। एतत् कस्य अस्ति ?—यह किसका है?। मम पाषाणपट्टिका—मेरी स्लेट॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह मेरी दावात नहीं देता। तुम (सब) मेरा पुस्तक पढ़ते हो। मैं तुम्हारा पुस्तक नहीं पढ़ता। वे सब हमारे घरको जाते हैं। मेरा जूता कहां है। यह (नपुंसक) तुम्हारा पुस्तक है। तुम्हारी स्लेट घरमें है॥

दशमः पाठः १० ॥

माम्–मुझको । त्वाम्–तुझको । तम्–उसको । आवाम्– हम दोनोंको । युवाम्–तुम दोनोंको । तौ–(पु०) उन दोनोंको । अस्मान्–हम (सबों) को । युष्मान्–तुम (सबों) को । तान्–(पु०) उन (सबों) को । मारयति--मारता है । क्रीडयति--खेलाता है । भर्त्सयति--घुड़कता है। भोजयति–खिलाता है। हासयति–हंसाता है । पाठयति–पढ़ाता है । जानाति–जानता है । जानीतः– वे दोनों जानते हैं । जानन्ति–वे (सब) जानते हैं ॥

सः माम् मारयति–वह मुझको मारता है । तौ मां जानीतः-वे दोनों मुझ को जानते हैं । सः अस्मान् जानाति–वह हम (सबों) को जानता है। नन्दकिशोरः माम् क्रीडयति–नन्दकिशोर मुझको खेलाता है। विष्णुशर्मा अस्मान् हासयति–विष्णुशर्मा हम (सबों) को हंसाता है। प्रियदर्शनः आवाम् भोजयति-प्रियदर्शन हम दोनोंको खिलाता है । शम्भुशर्मा अस्मान् भर्त्सयति–शम्भुशर्मा हम (सब) को घुड़कता है । अहम् त्वाम् पाठयामि–मैं तुझको पढ़ाता हूं। आवाम् युष्माम् भोजयावः–हम दोनों तुम दोनोंको खिलाते हैं । ते युष्मान् जानन्ति–वे (सब) तुम (सबों) को जानते हैं । तौ त्वाम् मारयतः--वे दोनों तुझको मारते हैं। अहम् तम् पाठयामि–मैं उस (पु०) को पढ़ाता हूं। त्वम् तौ (पु०) भर्त्सयसि–तू उन दोनोंको घुड़कता है। सः तान् (पु०) क्रीडयति–वह उन सबों को खेलाता है।

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वे (सब) मुझको मारते हैं । हम (सब) उसको जानते हैं । मैं उसको नहीं जानता हूं । मैं तुझको नहीं जानता । तू मुझको जानता है ॥

एकादशः पाठः ११ ॥

मया–मैंने । त्वया–तूने । तेन–उसने । आवाभ्याम्–हम दोनोंने । युवाभ्याम्–तुम दोनोंने । ताभ्याम्–उन दोनोंने । अस्माभिः–हम (सबों) ने । युष्माभिः–तुम (सबों) ने । तैः–उन (सबों) ने। कृतम्–(नपुंसक) किया। पठितम्-(नपुंसक) पढ़लिया । भुक्तम्-(नपुंसक) खालिया । मारितः-(पुरुष) मारा । पाठितः-(पुरुष) पढ़ाया । अलङ्कृतम्-(नपुंसक) सजायदिया । स्थानम्-मकान ॥ मया भुक्तम्-मैंने खालिया । त्वया स्थानम् अलङ्कृतम्-तूने मकान सजायदिया । मया धर्मदत्तः पाठितः-मैंने धर्मदत्त पढ़ाया । तेन अहं मारितः-उसने मुझे मारा । मया सः मारितः-मैंने उसे मारा ॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

हम (सबों) ने पढ़ लिया । तुम (सबों) ने नहीं पढ़ा । उन दोनोंने अच्छा पढ़ा । हम दोनोंने स्थान सजाय दिया । उसने बिलकुल नहीं पढ़ा । उन दोनोंने मकान सजाय दिया । हम (स्त्रीयों) ने नहीं पढ़ा ॥

भुक्ता=खाय ली । मारिता=मारी, पीटी । पाठिता=पढ़ा दी । अलङ्कृता=सजाय दी ॥ मया पाठशाला अलङ्कृता—मैंने पाठशाला सजाय दी । तेन यशोदा पाठिता—उसने यशोदा पढ़ा दी । युवाभ्याम् यशोदा मारिता—तुम दोनोंने यशोदा मारी, पीटी ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

उसने सुभद्रा पढ़ाई । वह उसने पढ़ाई है । मैंने वह (स्त्री) नहीं पीटी । वह (स्त्री) क्या देती है । तुम कहां जाते हो ॥

द्वादशः पाठः १२ ०

किं त्वया देवनागरीपाठशाला दृष्टा—क्या तूने देवनागरीपाठशाला देखी? दृष्टा—देखी । तत्र कति छात्राः पठन्ति—वहां कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं?। सप्त दशतम्—सत्तासौ । तत्र कीदृशी पाठनव्यवस्थाऽस्ति—वहां कैसी पढ़ाने की रीति है?। किं कथयामि अत्युत्तमाऽस्ति—क्या कहूं अत्युत्तम है । छात्राणां भोजनादि-प्रबन्धस्य का व्यवस्थाऽस्ति—विद्यार्थियोंके भोजनादि प्रबन्धकी क्या व्यवस्था है । वासार्थं छात्रालयो वर्त्तते भोजनादिप्रबन्धोऽपि देवनागरीप्रचारिण्याः सभायाः सकाशात् सञ्जायते—रहनेको छात्रालय (बोर्डिङ्गहौस) है, और भोजनादि प्रबन्ध भी देवनागरीप्रचारिणी सभाकी ओरसे हो जाता है । परन्तु केवलं संस्कृताध्येतृणामेवैष नियमः प्रायो दृश्यते—परन्तु केवल संस्कृत पढ़ने वालोंका ही यह नियम प्राय. देखा जाता है । तत्र गत्वा तावत् भवता किं कृतम् ?—वहां जाकर पहिले आपने क्या किया ? तावत् छात्राणां पाठः श्रुतः—पहिले विद्यार्थियोंका पाठ सुना । तदनु योग्यतानुसारतः पारितोषिकं दत्तम्—उसके बाद योग्यतानुसार इनाम दिया ॥

त्रयोदशः पाठः १३ ॥

हरिवर्षस्थं प्रति पातालस्थ उवाच ।

हरिवर्षस्थ । (इंग्लिशमैनसे पातालस्थ (अमेरिकन्) बोला ।

प्रिय मित्र ! इदानीमार्यावर्त्ते कस्य राज्यमस्ति ?=प्यारे मित्र ! आज कल आर्यावर्त्त (हिन्दुस्तान) में किसका राज्य है ?। महाराज्ञ्याः=महाराणीका। तत्र किमपि "कण्टकादि,, तु नास्ति ?=वहां कुछ "झगड़ा बखेड़ा,, तो नहीं है ?। नहि नहि निष्कण्टकं राज्यं वर्त्तते=नहीं २ निष्कण्टक राज्य वर्त्त रहा है। इदानीं भवान् कुत आयाति=अब आप कहांसे आते हैं ?। गान्धारतः=कन्धारसे। तत्र कस्य राज्यमस्ति ?=वहां किसका राज्य है। तत्रापि महाराज्ञ्याः ?=वहां भी महाराणीका। अहो ! अत्यानन्दम्=अहो ! बड़े आनन्दकी बात है।

चतुर्दशः पाठः १४ ॥

(चिट्ठी लिखनेकी रीति)

महाशय !

अयं ममात्मज उत्तमचन्द्रनामा संस्कृतविद्याध्ययनार्थं मया प्रेषितः सन् आगच्छति तन्ममोपरि महतीं कृपां कृत्वाऽध्यापनीयोऽयम् । अलं विद्वत्सु ॥

आषाढशुक्ला १३
सं० ४४ रविः

भवता कृपाकाङ्क्षी
चन्द्रदत्तः

यह मेरा पुत्र उत्तमचन्द्र नाम संस्कृत विद्या पढ़नेके लिये मेरा भेजा हुआ आता है सो मेरे ऊपर बड़ी कृपा करके इसे पढ़ाइये विद्वानोंके लिये अधिक क्या लिखूं ॥

इति तुलसीराम स्वामिकृतं प्रथमं पुस्तकम् ॥

—:x:x:—

इति

ये पुस्तक स्वामियन्त्रालय मेरठ से मिलेंगे ।

*तोप बन्दूक का आविष्कार))॥॥ लघुकौमुदी भाषाटीका सहित २) सुश्रुत मूल १॥) न्यायदर्शनवात्स्यायन भाष्य सहित १) भर्तृहरिशतक तीनों भाषाटीकासहित ।=)॥ दशोपनिषद् बड़े मूल मोटाअक्षर काशी के छपे १) सीताचरित्र नावल (प्रथमभाग हिन्दीभाषा) ॥) पं० गुरुदत्त एम० ए० का ईशोपनिषद्भाष्य ।) कात्यायनश्रौत पूर्वार्ध ॥) वेश्यानाटक ।)॥ आर्य्यसमाजके नियम मोटे अक्षर पुट्ठाकाग़ज़ पर ।) सैंकड़ा, २॥) हज़ार । सामान्य कागज़ पर ≡)सैंकड़ा, २) हज़ार । व्याख्यानका विज्ञापन =) सैंकड़ा १।) हज़ार वेदप्रकाश मासिकपत्र मूल्य १) वार्षिक दसयन्तीस्वयंवरनाटक ≡) धर्मप्रचार)॥ वायुमण्डल)। हारमोनियमगाइड ।=) वैदिकट्रैक्ट अंग्रेज़ी १ नं०)। २ नं०)। ३ नं०)॥ सत्यदर्पण =) ज्योतिषदर्शन=) व्याख्यानसागर ॥) योगानुसार सन्ध्याविधि ≡) बालोपकारी शिक्षा =) दानकरणविधि =) पदार्थविद्या ॥) सभाप्रस्ताव ।) स्वामीजीका चित्र (रङ्गीन) -)॥ पं० गुरुदत्त का चित्र (रङ्गीन) -)॥ सादेचित्र दोनों प्रत्येक -) खेतीकी विद्याके मुख्य सिद्धान्त ॥=) रामायणका आल्लखण्ड)।

विना गुरुके संस्कृत व्याकरणमें प्रवेश और संस्कृत बोलने लिखनेका सामान्य बोध कराने वाली—संस्कृतभाषा प्रथम पुस्तक)॥॥ द्वितीय -)। तृतीय पु० =)॥ चतुर्थ छपरहा है । चाणक्यनीतिसार भाषा टीकासहित -)। प्रश्नोत्तररत्नमाला भाषाटीका सहित इसीमें आर्य्यविवाहमङ्गलाष्टक -) आर्य्यवर्षटपञ्जरी)। भजनेन्दु -) महन्त ब्रह्मकुशलके उत्तरमें—ऋगादि भाष्यभू० उपराग प्रथम -)॥ द्वितीय -)॥॥ शास्त्रार्थकिरणा =) अक्षरप्रदीप (बालकोंको) १) में १०० एकप्रति)।

नालिकाविष्कार ॥

अर्थात् तोप बन्दूक वारूद (शतघ्नी भुशुण्डी अग्निचूर्ण) का आविष्कार (ईजाद) प्राचीन आर्य्यावर्त्तमें ही ऋषि मुनियोंने किया था और "इसको जर्मनी के बांक्धरथोलडम् शवाटरनने सन् १३२० में सबसे प्रथम आविष्कृत किया,, यह विचार तब तक ही है जब तक इस पुस्तक द्वारा सर्वसाधारण ने शुक्रनीति, नीतिप्रकाशिका और महाभारत तथा डाक्टर गस्टैनओपर्ट, वेकन साहबके " विक्षीसीट्यूडस् आफ़ थिंगज़ " मेजर जेनेरल वार्डल आदि के प्रमाणोंसे विभूषित इस पुस्तकको नहीं देखा है । मूल्य)॥॥

पता—पं० तुलसीरामस्वामी—सम्पादक वेदप्रकाश मेरठ

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-द्वितीयं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (ज़िला मेरठ) निवासि-

स्वामि-तुलसीराम-शर्म्मणा विरचितम्

प्रकाशितञ्च

वृटावानगरे सरस्वतीयन्त्रालये-तुलसीराम स्वामिनः

प्रबन्धेन मुद्रितम् ॥

संवत् १९५३ । १२ । ४ । ९६

इस की रजिस्टरी कराई गई किसी को छापने का

अधिकार नहीं है ।

तृतीयवार १००० प्रति] [मूल्य -)।

भूमिका ॥

जिस उद्देश्य से मैंने यह पुस्तक बनाया था वह उद्देश्य सफल होते देख कर (जो कि गुणग्राहकों ने ५००० प्रथम ३००० द्वितीय तथा २५०० तृतीय पुस्तकें हाथों हाथ ले लीं) मुझे उत्साह होता है कि अब की बार इस द्वितीय पुस्तक में कुछ और आवश्यक संशोधन करके अत्यन्त शुद्ध छपाऊं सो इस बार शुद्ध छपने का विशेष उद्योग किया है इतने पर भी यदि मेरी समझ की भूल वा छापे की अशुद्धि कोई पाई जावे तो पाठकगण क्षमापूर्वक शुद्ध कर के मुझे सूचना दें जिस से अगले मुद्रण में वह न्यूनता न रहे और मैं उन का कृतज्ञ होऊं इति ॥

वै० कृ० सं० १९५३] तुलसीराम स्वामी

पवित्र यज्ञोपवीत कार्य्यालय ॥

उत्तम शुद्ध बने बनाये न मिलने से बहुतों को कष्ट उठाना पड़ता है, भद्दे मिलते हैं, अशुद्ध, विधिविरुद्ध सूत्र धारण करने पड़ते हैं क्योंकि कोई कार्य्यालय ऐसा नहीं जहां शास्त्रोक्त विधि से शुद्धि पूर्वक विश्वास्य यज्ञोपवीत बनते हों । इसी अभाव के दूर करने को उपरोक्त कार्य्यालय में शुद्ध ब्राह्मण जो कम से कम सन्ध्यामात्र करते होंगे पूरना, बटना, ग्रन्थि लगाना आदि सब काम उन्हीं से कराये जायंगे । (बीस २० का नाम कोड़ी है)

उत्तम रेशम के यज्ञोपवीत ५) कोड़ी महाराजों लायक । दूसरे दर्जा रेशम का ३) कोड़ी ।

सूत के दर्जा प्रथम १) कोड़ी] धर्मार्थ बांटने वालों को
" दर्जा दूसरा ॥) कोड़ी } अर्ध मोल, विशेष लेने वालों
" दर्जा तीसरा ॥) कोड़ी] को कमीशन भी दिया जायगा पत्र व्यवहार करो पसन्द न आवें वापिस कर दो केवल डाक व्यय का टोटा ग्राहक को होगा । अवश्य देखिये ॥ छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ़, जि० मेरठ

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-द्वितीयं पुस्तकम् ॥

प्रथमः पाठः १ ॥

(गम धातु के भूत भविष्यत् वर्तमान और विधि काल के रूप)

कर्त्ता	भूतक्रिया	कर्त्ता	भविष्यक्रिया
सः	अगच्छत्=वह गया है	सः	गमिष्यति=वह जायगा
तौ	अगच्छताम्=वे दोनों गये हैं	तौ	गमिष्यतः=वे दोनों जायंगे
ते	अगच्छन्=वे सब गये हैं	ते	गमिष्यन्ति=वे सब जायंगे
त्वम्	अगच्छः=तू गया है	त्वम्	गमिष्यसि=तू जायगा
युवाम्	अगच्छतम्=तुम दोनों गये हो	युवाम्	गमिष्यथः=तुम दोनों जाओगे
यूयम्	अगच्छत=तुम सब गये हो	यूयम्	गमिष्यथ=तुम सब जाओगे
अहम्	अगच्छम्=मैं गया हूं	अहम्	गमिष्यामि=मैं जाऊंगा
आवाम्	अगच्छाव=हम दोनों गये हैं	आवाम्	गमिष्यावः=हम दोनों जायंगे
वयम्	अगच्छाम=हम सब गये हैं	वयम्	गमिष्यामः=हम सब जायंगे

द्वितीयः पाठः २ ॥

कर्त्ता	वर्तमानक्रिया	कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	गच्छति=वह जाता है	सः	गच्छतु, गच्छतात्=वह जावे
तौ	गच्छतः=वे दोनों जाते हैं	तौ	गच्छताम्=वे दोनों जावें
ते	गच्छन्ति=वे सब जाते हैं	ते	गच्छन्तु=वे सब जावें
त्वम्	गच्छसि=तू जाता है	*त्वं	गच्छ, गच्छतात्=तू जा
युवाम्	गच्छथः=तुम दोनों जाते हो	युवां	गच्छतम्=तुम दोनों जाओ
यूयम्	गच्छथ=तुम सब जाते हो	यूयं	गच्छतः=तुम सब जाओ
अहम्	गच्छामि=मैं जाता हूं	अहम्	गच्छानि=मैं जाऊं
आवाम्	गच्छावः=हम दोनों जाते हैं	आवां	गच्छाव=हम दोनों जावें
वयम्	गच्छामः=हम सब जाते हैं	वयं	गच्छाम=हम सब जावें

* "त्वम्" इत्यादि में 'म्' को (ं) अनुस्वार भी रहता है जब कि व्यञ्जन परे हो ।

जिस प्रकार गम (जाना) धातु के रूप हुये इसी प्रकार आगम (आना) धातु के भी जानने चाहियें केवल गम के पूर्व "आ" लगाने से बनते हैं जैसेः—

आगच्छति=आता है । आगच्छत्=आया है । आगमिष्यति=आवेगा । आगच्छ=आव ॥

तृतीयः पाठः ३ ॥

कृत्वा=करके । भुक्त्वा=खा के । गत्वा=जा के । मत्वा=मान के । श्रुत्वा=सुन के । मेलित्वा, मिलित्वा=मिल के । आगत्य=आ के । प्रणम्य=प्रणाम करके । पृष्ट्वा=पूंछ के । आदाय=ले कर । दत्वा=दे कर ॥

किं विष्णुमित्रः गृहं गमिष्यति ?=क्या विष्णुमित्र घर को जायगा ? । किं त्वं मन्दिरात् आगमिष्यसि ?=क्या तू मन्दिर से आवे गा ? । अहं मन्दिरात् न आगमिष्यामि=मैं मन्दिर से नहीं आऊंगा । किं तौ मां पृष्ट्वा गमिष्यतः=क्या वे दोनों मुझ को पूंछ के जायंगे ? । नो=नहीं । ते पुस्तकं दत्वा गमिष्यन्ति=वे सब पुस्तक को देकर जायंगे । अहं पाठं श्रुत्वा आगमिष्यामि=मैं पाठ को सुन के आऊंगा । किं युवां पठित्वा न गमिष्यथः=क्या तुम दोनों पढ़ के नहीं जाओगे ? । महाशय! आवां पठित्वा एव गमिष्यावः=महाशय! हम दोनों पढ़ के ही जायंगे । मया गत्वा भुक्तम्=मैंने जा के खालिया । किं सः भुक्त्वा गमिष्यति=क्या वह खा के जायगा ? । यूयं कदा गमिष्यथ=तुम सब कब जाओगे । विष्णुमित्रः पुस्तकम् आदाय अगच्छत्=विष्णुमित्र पुस्तक को लेकर गया है । ते मम पुस्तकम् आदाय अगच्छन्=वे सब मेरी पुस्तक को लेकर गये हैं । तौ आवयोः पाषाणपट्टिकाम् आदाय अगच्छताम्=वे दोनों हम दोनों की सलेटु को ले कर गये हैं । अहं भुक्त्वा अगच्छम्=मैं खा कर गया हूं । त्वं पठित्वा अगच्छः=तू पढ़ के गया है । युवां मिलित्वा अगच्छतम्=तुम दोनों मिल के गये हो । वयं मिलित्वा न अगच्छाम=हम सब मिल के नहीं गये हैं । यूयम् आवयोः उपवस्त्रम् आदाय अगच्छत=तुम सब हम दोनों के रूमाल को लेकर गये हो । वयं युवयोः उपवस्त्रम् आदाय न अगच्छाम=हम सब तुम दोनों का रूमाल लेकर नहीं गये हैं । त्वं श्रुत्वा आगच्छ=तू सुन के आ । अहं पठित्वा गच्छानि=मैं पढ़ के जाऊं । † स मम वस्त्राणि आदाय गच्छतु=वह मेरे कपड़े लेकर जावे । युवां

† सः के आगे जो (:) विसर्ग है वह व्यञ्जन परे हो तो लुप्त कर दिया जाता है ।

पठित्वा गच्छतम्=तुम दोनों पढ़ के जाओ। आवां न गच्छाव=हम दोनों न जावें। तौ श्रुत्वा न आगच्छताम्=वे दोनों सुन के न आवें। ते गच्छन्तु=वे सब जावें। यूयं न गच्छत=तुम सब मत जाओ। वयं न गच्छाम=हम सब न जावें। यूयं मम उपानहम् आदाय न गच्छत=तुम सब मेरा जूता लेकर मत जाओ। त्वं तत्र न गच्छतात्=तू वहां मत जा। वयं पठित्वा न गच्छाम=हम सब पढ़ के न जावें। यदा अहं गमिष्यामि तदा त्वम् आगमिष्यसि=जब मैं जाऊंगा तब तू आवेगा॥

चतुर्थः पाठः ४॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह वहां न जावे। तुम यहां मत आओ। हम वहां जायंगे। तुम वहां आओगे। वे दोनों वहां न जावें। तुम दोनों वहां जाओगे। हम वहां नहीं जायंगे। यहां आओ। वहां मत जाओ। हम सब वहां गये हैं। तुम दोनों यहां नहीं आये हो। वे वहां गये हैं। तुम सब वहां नहीं गये हो। तुम सब पढ़ कर जाओ। हम दोनों मिल के जायंगे। तुम सब खाके जाओ। तुम सब मेरी पुस्तक लेकर मत जाओ। हम दोनों तुम दोनों की स्लेट लेकर जायंगे। क्या तुम व्याख्यान को सुन के नहीं आओगे?॥

(संस्कृत से भाषा बनाओ)

अहं पठित्वा गमिष्यामि। त्वं मम वस्त्रम् आदाय गच्छतात्। मम कथनं श्रुत्वा आगच्छ। अहं पुस्तकम् आदाय अगच्छम्। यूयं कुत्र गत्वा आगच्छत। किं स गृहात् न आगमिष्यति?। अहं वेदं श्रुत्वा गमिष्यामि। स तत्र किं कृत्वा अगच्छत्। किं युवां मम पुस्तके आदाय अगच्छतम्?। किं स मन्दिरात् आगमिष्यति?। वयं तत्र न अगच्छाम। किं स उपरि अगच्छत्। आवां नीचैः न अगच्छाव। किं स न पठति। अहं तत्र गत्वा न पठिष्यामि। स गच्छतु तत्र॥

पञ्चमः पाठः ५ ॥

(स्था=ठहरना)

कर्त्ता, भूतकालिक क्रिया		कर्त्ता, वर्त्तमानकालिक क्रिया	
सः	अतिष्ठत्=वह ठहरा है	सः	तिष्ठति=वह ठहरता है
तौ	अतिष्ठताम्=वे दोनों ठहरे हैं	तौ	तिष्ठतः=वे २*ठहरते हैं
ते	अतिष्ठन्=वे सब ठहरे हैं	ते	तिष्ठंन्ति=वे ३*ठहरते हैं
त्वम्	अतिष्ठः=तू ठहरा है	त्वं	तिष्ठसि=तू ठहरता है
युवाम्	अतिष्ठतम्=तुम दोनों ठहरे हो।	युवां	तिष्ठथः=तुम २ ठहरते हो
यूयम्	अतिष्ठत=तुम सब ठहरे हो	यूयं	तिष्ठथ=तुम ३ ठहरते हो
अहम्	अतिष्ठम्=मैं ठहरा हूं	अहं	तिष्ठामि=मैं ठहरता हूं
आवाम्	अतिष्ठाव=हम सब ठहरे हैं	आवां	तिष्ठावः=हम २ ठहरते हैं
वयम्	अतिष्ठाम=हम सब ठहरे हैं	वयं	तिष्ठामः=हम ३ ठहरते हैं

कर्त्ता, भविष्यत्कालिकक्रिया		कर्त्ता, विधिक्रिया	
सः	स्थास्यति=वह ठहरेगा	सः	तिष्ठतु, तिष्ठतात्=वह ठहरे
तौ	स्थास्यतः=वे २ ठहरेंगे	तौ	तिष्ठताम्=वे २ ठहरें
ते	स्थास्यन्ति=वे ३ ठहरेंगे	ते	तिष्ठन्तु=वे ३ ठहरें
त्वं	स्थास्यसि=तू ठहरेगा	त्वम्	तिष्ठ, तिष्ठतात्=तू ठहर
युवां	स्थास्यथः=तुम २ ठहरोगे	युवाम्	तिष्ठतम्=तुम २ ठहरो
यूयं	स्थास्यथ=तुम ३ ठहरोगे	यूयम्	तिष्ठत=तुम ३ ठहरो
अहं	स्थास्यामि=मैं ठहरूंगा	अहम्	तिष्ठानि=मैं ठहरूं
आवां	स्थास्यावः=हम २ ठहरेंगे	आवाम्	तिष्ठाव=हम २ ठहरें
वयं	स्थास्यामः=हम ३ ठहरेंगे	वयम्	तिष्ठाम=हम ३ ठहरें

षष्ठः पाठः ॥

सः तत्र न तिष्ठति=वह वहां नहीं ठहरता। अहम् कुत्र तिष्ठानि=मैं कहां ठहरूं। यूयम् तत्र न तिष्ठत=तुम ३ वहां मत ठहरो। ते गृहे तिष्ठन्ति=वे ३ घर में ठहरते हैं। वयम् उपरि स्थास्यामः=हम ३ ऊपर ठहरेंगे। किं यूयम्

* २ अङ्क से द्विवचन ३ अङ्क से बहुवचन समझना चाहिये।

नीचैः स्थास्यथ ?=क्या तुम सब नीचे ठहरोगे ? । युवां तत्र न अतिष्ठतम्=तुम दोनों वहां नहीं ठहरे हो । त्वम् दूरम् तिष्ठ=तू दूर ठहर । किं वयम् तत्र न तिष्ठाम ?=क्या हम ३ वहां न ठहरें ? । यूयम् तत्र आगत्य तिष्ठत=तुम ३ वहां आकर ठहरो । वयम् उपरि गत्वा अतिष्ठाम=हम ३ ऊपर जाके ठहरे हैं । त्वं तं प्रणम्य तिष्ठतात्=तू उस को प्रणाम करके ठहर । तौ श्रुत्वा न अतिष्ठताम्=वे २ सुन के नहीं ठहरे हैं । अहं सत्यं मत्वा अतिष्ठम्=मैं सत्य मान के ठहरा हूं । अहं भुक्त्वा स्थास्यामि=मैं खाके ठहरूंगा । विद्यार्थी पृष्ट्वा अगच्छत्=विद्यार्थी पूंछ के गया है । सः पठित्वा तिष्ठतु=वह पढ़ के ठहरे । वयं पठित्वा न स्थास्यामः=हम ३ पढ़ के नहीं ठहरेंगे । ते प्रणम्य अतिष्ठन्=वे प्रणाम करके ठहरे हैं । यूयं श्रुत्वा तिष्ठत=तुम ३ सुनके ठहरो । तौ आगत्य तिष्ठताम्=वे २ आके ठहरें । किं त्वं भुक्त्वा न स्थास्यसि ?=क्या तू खाके नहीं ठहरेगा ? । अहं पठित्वा न स्थास्यामि=मैं पढ़ के नहीं ठहरूंगा ॥

सप्तमः पाठः ७ ॥

कर्त्ता	भूतक्रिया,	कर्त्ता,	वर्त्तमानक्रिया,
सः	अपठत्=उस ने पढ़ा है	सः	पठति=वह पढ़ता है
तौ	अपठताम्=उन दोनों ने पढ़ा है	तौ	पठतः=वे २ पढ़ते हैं
ते	अपठन्=उन्हों ने पढ़ा है	ते	पठन्ति=वे ३ पढ़ते हैं
त्वम्	अपठः=तूने पढ़ा है	त्वम्	पठसि=तू पढ़ता है
युवाम्	अपठतम्=तुम २ ने पढ़ा है	युवाम्	पठथः=तुम दोनों पढ़ते हो
यूयम्	अपठत=तुम ३ ने पढ़ा है	यूयम्	पठथ=तुम ३ पढ़ते हो
अहम्	अपठम्=मैंने पढ़ा है	अहम्	पठामि=मैं पढ़ता हूं
आवाम्	अपठाव=हम २ ने पढ़ा है	आवाम्	पठावः=हम २ पढ़ते हैं
वयम्	अपठाम=हम ३ ने पढ़ा है	वयम्	पठामः=हम ३ पढ़ते हैं
कर्त्ता,	भविष्यक्रिया,	कर्त्ता,	विधिक्रिया,
सः	पठिष्यति=वह पढ़ेगा	सः	पठतु, पठतात्=वह पढ़े
तौ	पठिष्यतः=वे २ पढ़ेंगे	तौ	पठताम्=वे २ पढ़ें
ते	पठिष्यन्ति=वे ३ पढ़ेंगे	ते	पठन्तु=वे ३ पढ़ें
त्वम्	पठिष्यसि=तू पढ़ेगा	त्वम्	पठ, पठतात्=तू पढ़

युवाम् पठिष्यथः=तुम २ पढ़ोगे	युवाम् पठतम्=तुम २ पढ़ो
यूयम् पठिष्यथ=तुम ३ पढ़ोगे	यूयम् पठत=तुम ३ पढ़ो
अहम् पठिष्यामि=मैं पढ़ूंगा	अहम् पठानि=मैं पढ़ूं ?
आवाम् पठिष्यावः=हम दोनों पढ़ेंगे	आवाम् पठाव=हम २ पढ़ें ?
वयम् पठिष्यामः=हम ३ पढ़ेंगे	वयम् पठाम=हम ३ पढ़ें ?

अष्टमः पाठः ८ ॥

भोक्तुम्=खाने को । मार्ष्टुम्=बुहारने को । पातुम्= पीने को । गन्तुम्=जाने को । चिन्तयितुम्=याद करने को । स्वप्तुम्=सोने को । पठितुम्=पढ़ने को । जागरितुम्=जागने को । ज्ञातुम्=जानने को । सङ्गन्तुम्=मिलने को । हन्तुम्=मारने को । प्रष्टुम्=बूझने को । आगन्तुम्=आने को । हसितुम्=हँसने को । संमन्तुम्=सलाह देने को । आस्तुम्=बैठने को । जेतुम्=जीतने को । स्थातुम्=ठहरने को । उत्थातुम्=उठने को । पराजेतुम्=हारने को । कर्तुम्=करने को । मर्त्तुम्=मरने को । हर्त्तुम्=मल त्यागने को । मन्तुम्=मानने को । मारयितुम्=मारने को । जीवितुम्=जीने को । सीवितुम्=सीने को । चोरयितुम्=चुराने को ॥

नवमः पाठः ९ ॥

[रामशब्द (पुंल्लिङ्ग) की सात विभक्तियां]

१	राम.=राम, ने रामौ= २ रामों, ने रामाः=सब रामों, ने	५	रामात्, द्=राम से रामाभ्याम्=२ रामों से रामेभ्यः=सब रामों से
२	रामम्=राम को रामौ=२ रामों को रामान्=३ रामों को	६	रामस्य=राम का, के, की, रामयोः=२ रामों का, के, की रामाणाम्=३ रामों का, के, की
३	रामेण=राम ने, से, के साथ रामाभ्याम्=२ रामों ने, से, के साथ रामैः=सब रामों ने, से, के साथ	७	रामे=राम में, पै, पर रामयोः=२ रामों में, पै, पर रामेषु=३ रामों में, पै, पर
४	रामाय=राम के लिये रामाभ्याम्=२ रामों के लिये रामेभ्यः=३ रामों के लिये	सम्बोधन	हे राम= ओ राम हे रामौ=२ " हे रामाः=३ "

जिस प्रकार राम शब्द की ७ विभक्तियां हैं इसी प्रकार कदम्ब, मुकुन्द, देव, पुरुष, यज्ञदत्त, देवदत्त, विष्णुमित्र आदि अकारान्त (पुंल्लिङ्ग) शब्दों की विभक्तियां जानो ।

दशमः पाठः १० ॥

[तद् शब्द (पुंल्लिङ्ग) की ७ विभक्तियां]

१	सः=वह, उस ने	५	तस्मात्=उस से
	तौ=वे २, उन्होंने		ताभ्याम्=उन २ से
	ते=वे ३, उन्होंने		तेभ्यः=उन ३ से
२	तम्=उस को	६	तस्य=उस का, के, की
	तौ=उन २, को		तयोः=उन २ का, के, की
	तान्=उन ३ को		तेषाम्=उन ३ का, के, की
३	तेन=उस से, ने, के, साथ	७	तस्मिन्=उस में, पै, पर
	ताभ्याम्=उन २ से, ने, के साथ		तयोः=उन २ में, पै, पर
	तैः=उन ३ से, ने, के साथ		तेषु=उन ३ में, पै, पर
४	तस्मै=उस के लिये		सम्बोधन इस का नहीं होता
	ताभ्याम्=उन २ के लिये		
	तेभ्यः=उन ३ के लिये		

इसी प्रकार यद् (जो) शब्द के भी रूप हैं किन्तु इतना भेद है कि प्रथमा विभक्ति के एक वचन में "यः" ऐसा रूप होता है आगे "यौ, ये, यम्, यौ, यान्, येन, याभ्याम्, यैः" इत्यादि सब तद् शब्द के समान हैं सो पढ़ने वालों को बुद्धि से समझने और समझाने चाहियें ॥

एकादशः पाठः ११ ॥

विष्णुमित्रः भोक्तुं गच्छति=विष्णुमित्र खाने को जाता है । यज्ञदत्तः ग्रामं गन्तुम् आगच्छतु=यज्ञदत्त ग्राम को जाने को आवे । त्वं पठितुं गच्छ=तू पढ़ने को जा । त्वं वेदान् ज्ञातुं पठसि=तू वेदों को जानने को पढ़ता है । किं त्वं प्रष्टुम् आगच्छः ?=क्या तू पूछने को गया है ? । देवदत्तः सम्मन्तुम् गत्वा आगच्छत्=देवदत्त सलाह करने को जाके आया है । किं स तस्मिन् गृहे स्थातुं अगच्छत् ?=क्या वह उस घर में ठहरने को गया है ? । स किं कर्तुम् पठतु ?=वह क्या करने को पढ़े ? । अहं वेदं मन्तुं अपठम्=मैं ने वेद को मानने को पढ़ा है । स वस्त्रं सीवितुं गच्छति किम् ?=वह कपड़ा (नपुं०) सीने को जाता

है क्या ? । शोभारामः गृहं मार्ष्टुं गच्छतु=शोभाराम घर बुहारने को जावे । तौ पाठं चिन्तयितुम् अगच्छताम्=वे दोनों पाठ (को) याद करने को गये हैं । सः गृहम् आगन्तुं धावति=वह घर आने को दौड़ता है । स आसने आस्तुं गच्छतु= वह आसन पै बैठने को जावे । आवाम् आसनात् उत्थातुं न इच्छावः=हम २ आसन से उटने को नहीं चाहते । किं स तेन मर्त्तुम् इच्छति ?= क्या वह उस के साथ मरने को चाहता है ? । त्वं तं मारयितुं गच्छसि=तू उस को मारने को जाता है ॥

द्वादशः पाठः १२ ॥

सः धनं दत्त्वा अपठत्=वह धन देकर पढ़ा । किं युवां धनाय पठथः=क्या तुम २ धन के लिये पढ़ते हो ? । वयं धनाय न अपठाम=हम धन के लिये नहीं पढ़े हैं । तौ धर्म्माय पठतः=वे दोनों धर्म के लिये पढ़ते हैं । विद्यार्थी नियमं कृत्वा पठतु=विद्यार्थी नियम करके पढ़े । अहं भुक्त्वा पठिष्यामि=मैं खाके पढूंगा । किं त्वं ग्रामं गत्वा पठिष्यसि ?=क्या तू ग्राम को जाकर पढ़ेगा ? । आवां सत्यं मत्वा अपठाव=हम २ सत्य मान के पढ़े हैं । वेदं चोरयितुं पठति= वेद चुराने को पढ़ता है । यूयं जलं पातुं गच्छथ=तुम ३ जल पीने को जाते हो । त्वं स्वप्तुं गच्छ=तू सोने को जा । किम् अहं जागरितुम् तिष्ठानि?=क्या मैं जागने को ठहरूं ? । अहं विष्णुमित्रं हन्तुं न गमिष्यामि=मैं विष्णुमित्र को मारने को नहीं जाऊंगा । तौ हसितुम् अगच्छताम्=वे २ हंसने को गये हैं । यज्ञदत्तः देवदत्तं जेतुम् अगच्छत्=यज्ञदत्त देवदत्त को जीतने गया है । युवां पराजेतुं गमिष्यथः=तुम २ हारने को जाओगे । देवदत्तविष्णुमित्रौ हसुं गच्छताम्=देवदत्त विष्णुमित्र २ मलत्यागने को जावें । दशरथः जीवितुं न इच्छति=दशरथ जीने को नहीं चाहता । अहं ग्रामं गन्तुम् इच्छामि=मैं ग्राम को जाना चाहता हूं । तौ सुदर्शनेन सङ्गन्तुं आगच्छताम्=वे २ सुदर्शन से मिलने को आवें । अहं यज्ञदत्तविष्णुमित्राभ्यां पुस्तकं दातुं न इच्छामि=मैं यज्ञदत्त विष्णुमित्रों २ के लिये पुस्तक देने को नहीं चाहता ॥

त्रयोदशः पाठः १३ ॥

(संस्कृत से भाषा बनाओ)

स रामाय वस्त्रं ददातु । अहं रामात् उपानहम् आदातुम् इच्छामि । आवां रामस्य उपवस्त्रम् आदाय गमिष्यावः । वयं रामे

विश्वासं कृत्वा आगच्छामः । हे राम ! किं त्वं पठिष्यसि ? । अहं तं पृष्ट्वा गच्छानि ? । त्वं ताभ्याम् मिलित्वा न आगच्छः । युवां तेभ्यः पुस्तकं दत्वा गमिष्यथः किम् ? । अहं तस्मात् न पठिष्यामि । त्वं तयोः पुस्तकं न पठ । स तेषु विश्वासं कृत्वा न आगच्छति । ये पठन्ति ते गमिष्यन्ति । यत् जानामि तत् पठामि । येन सङ्गन्तुम् अगच्छम् स न मिलितः । यस्मै धनं दत्तं स नास्ति । यस्मात् भयं भवति तस्य समीपे न गच्छ ॥

चतुर्दशः पाठः १४ ॥

[भाषा से संस्कृत वाक्य बनाओ]

हम ने क्या पढ़ा है ? । तुम पुस्तक नहीं पढ़ोगे ? । हम ने पुस्तक नहीं पढ़ा है । तुम दुष्ट पुस्तक मत पढ़ो । विद्यार्थी श्रेष्ठ पुस्तक को पढ़े । क्या तुम उस का पुस्तक लेकर गये हो ? । हम ने उन २ का पुस्तक नहीं पढ़ा है । वे २ मेरा पुस्तक पढ़ते हैं । तुम वेद को पढ़ो । तू विद्यार्थी नहीं [illegible] विद्याध्ययन के लिये जायगे । क्या तू हमारा पुस्तक लेकर जायगा [illegible] । यदि तू यहां आवे गा तब हम तुझ को नहीं १ पढ़ावेंगे (१ पाठयिष्यामः) ॥

पञ्चदशः पाठः १५ ॥

युष्मद् (अर्थात् तू, तुम) शब्द की ७ विभक्तियां । तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं ॥

१	त्वम्=तू, तूने	४	तुभ्यम्, ते=तेरे लिये
	युवाम्=तुम २, तुम २ ने		युवाभ्याम्, वाम्=तुम्हारे २ लिये
	यूयम्=तुम ३, तुम ३ ने		युष्मभ्यम्, वः=तुम्हारे ३ लिये
२	त्वाम्, त्वा=तुझ को	५	त्वत्=तुझ से
	युवाम्, वाम्=तुम २ को		युवाभ्याम्=तुम २ से
	युष्मान्, वः=तुम ३ को		युष्मत्=तुम ३ से
३	त्वया=तूने, तुझ से, तेरे साथ	६	तव, ते=तेरा, रे, री
	युवाभ्याम्=तुम २ ने, से, तुम्हारे साथ		युवयोः वाम्=तुम दोनों का, के, की
	युष्माभिः=तुम ३ ने, से, तुम्हारे साथ		युष्माकम्, वः=३ तुम्हारा, रे, री

७ { त्वयि=तुझ में, पै, पर
युवयोः=तुम २ में पै, पर
युष्मासु=तुम ३ में, पै, पर }

{ युष्मद् और अस्मद् शब्द के सम्बोधन के रूप नहीं होते ॥

षोडशः पाठः १६ ॥

अस्मद् (अर्थात् मैं हम) शब्द की ७ विभक्तियां। इस के भी ३ लिङ्गों में समान ही रूप होते हैं॥

१ { अहम्=मैं वा मैंने
आवाम्=२ हम वा हम दोनों ने
वयम्=हम ३ वा हम ३ ने }

५ { मत्=मुझ से
आवाभ्याम्=हम २ से
अस्मत्=हम ३ से }

२ { माम्, मा=मुझ को
आवाम्, नौ=हम २ को
अस्मान्, नः=हम ३ को }

६ { मम, मे=मेरा, रे, री
आवयोः, नौ=हमारा २ रे, री
अस्माकम्, नः=हमारा३,रे,री }

३ { मया=मैंने, मुझ से, मेरे साथ
आवाभ्याम्=हम२ने,से,हमारेसाथ
अस्माभिः=हम ३ ने,से, हमारेसाथ }

७ { मयि=मुझ में, पै, पर
आवयोः=हम २ में, पै, पर
अस्मासु=हम ३ में, पै, पर }

४ { मह्यम्, मे=मेरे लिये
आवाभ्याम्, नौ=हमारेके लिये
अस्मभ्यम्, नः=हमारे ३ के लिये }

{ सम्बोधन नहीं होता ॥

सप्तदशः पाठः १७ ॥

दा धातु=देना के भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान, विधि,

कर्त्ता,	भूतकालिकक्रिया,	कर्त्ता,	भविष्यक्रिया,
सः	अददात्=उस ने दिया, दी है	सः	दास्यति=वह देगा
तौ	अदत्ताम्=उन२ ने दिया, दी है	तौ	दास्यतः=वे २ देंगे
ते	अददुः=उन ३ ने दिया, दी है	ते	दास्यन्ति=वे ३ देंगे
त्वम्	अददाः=तूने दिया, दी है	त्वम्	दास्यसि=तू देगा
युवाम्	अदत्तम्=तुम २ ने दिया, दी है	युवाम्	दास्यथः=तुम २ दोगे
यूयम्	अदत्त=तुम ३ ने दिया, दी है	यूयम्	दास्यथ=तुम ३ दोगे
अहम्	अददाम्=मैंने दिया, दी है	अहम्	दास्यामि=मैं दूंगा
आवाम्	अदद्व=हम २ ने दिया, दी है	आवाम्	दास्यावः=हम २ देंगे
वयम्	अदद्म=हम३ ने दिया, दी है	वयम्	दास्यामः=हम ३ देंगे

कर्त्ता,	वर्त्तमानक्रिया,	कर्त्ता,	विधिक्रिया,
सः	ददाति=वह देता है	सः	ददातु, दत्तात्=वह देवे
तौ	दत्तः=वे २ देते हैं	तौ	दत्ताम्=वे २ देवें
ते	ददति=वे ३ देते हैं	ते	ददतु=वे ३ देवें
त्वम्	ददासि=तू देता है	त्वम्	देहि, दत्तात्=तू दे
युवाम्	दत्थः=तुम २ देते हो	युवाम्	दत्तम्=तुम २ दो
यूयम्	दत्थ=तुम ३ देते हो	यूयम्	दत्त=तुम ३ दो
अहम्	ददामि=मैं देता हूं	अहम्	ददानि=मैं दूं
आवाम्	दद्वः=हम २ देते हैं	आवाम्	ददाव=हम २ दें
वयम्	दद्मः=हम ३ देते हैं	वयम्	ददाम=हम ३ दें

इस दा धातु=देना, से पहिले आ लगाने से "लेना" अर्थ हो जाता है परन्तु उस दशा में आत्मनेपद के रूप होते हैं जैसेः--

कर्त्ता	भूतक्रिया ।	कर्त्ता	भविष्यक्रिया
सः	आदत्त	सः	आदास्यते
तौ	अददाताम्	तौ	आदास्येते
ते	आददत	ते	आदास्यन्ते
त्वम्	आदत्थाः	त्वम्	आदास्यसे
युवाम्	आददाथाम्	युवाम्	आदास्येथे
यूयम्	आदद्ध्वम्	यूयम्	आदास्यध्वे
अहम्	आददि	अहम्	आदास्ये
आवाम्	आदद्वहि	आवाम्	आदास्यावहे
वयम्	आदद्महि	वयम्	आदास्यामहे

कर्त्ता	वर्त्तमानक्रिया ।	कर्त्ता	वर्त्तमानक्रिया
सः	आदत्ते	यूयम्	आदद्ध्वे
तौ	आददाते	अहम्	आददे
ते	आददते	आवाम्	आदद्वहे
त्वम्	आदत्से	वयम्	आदद्महे
युवाम्	आददाथे		

कर्त्ता	विधिक्रिया		
सः	आदत्ताम्	युवाम्	आददाथाम्
नौ	आददाताम्	यूयम्	आदत्त
ते	आददताम्	अहम्	आददै
त्वम्	आदत्स्व	आवाम्	आददावहै
		वयम्	आददामहै

अर्थ परस्मैपद के तुल्य ही है ॥

अष्टादशः पाठः १८ ॥

नरसिंहः मह्यं किं ददाति?=नरसिंह मुझ को क्या देता है ? । विष्णुशर्मा आवाभ्याम् भोजनं दास्यति=विष्णुशर्मा हम २ दो को भोजन देगा । अहम् युष्मभ्यं वस्त्रं न दास्यामि=मैं तुम ३ को वस्त्र नहीं दूंगा । किं स त्वत् पुस्तकम् आदास्यते ?=क्या वह तुझ से पुस्तक लेगा ? । अहम् तव उपवस्त्रं न ददानि=मैं तेरा रूमाल न दूं । त्वम् तस्य उपानहम् देहि=तू उस का जूता दे । अहम् त्वयि भारं न ददामि=मैं तुझ पर भार नहीं देता । कस्य अपि वस्तु न आदत्ताम्=किसी का भी वस्तु न ले । त्वम् मह्यं पुस्तकं दत्तात्=तू मुझ को पुस्तक दे । स आवाभ्याम् मङ्क्तुम् आगच्छति=वह हम २ से मिलने को आता है । स स्वकीयं पुस्तकं मह्यम् अददात्=उस ने अपना पुस्तक मेरे लिये दिया है । त्वम् तस्मै किमपि अददाः ?=तूने उस के लिये कुछ दिया है ? । अहम् युवाभ्यां किमपि न अददाम्=मैंने तुम २ को कुछ नहीं दिया है । तौ आवाभ्यां किम् अदत्ताम् ?=उन दोनोंने हम २ को क्या दिया है ? । युवां तेभ्यः स्वं पुस्तकम् आददाथाम्=तुम २ उन से अपना पुस्तक ले लो । आवां तुभ्यं वस्त्रं न दास्यावः=हम २ तुझ को कपड़ा नहीं देंगे । त्वं मोहनसिंहस्य पुस्तकम् आदत्स्व=तू मोहनसिंह का पुस्तक ले ले । अहं तव समीपे न आगमिष्यामि=मैं तेरे समीप में नहीं आऊंगा । त्वं मम पुस्तकं लेखनीं च कदा दास्यसि ?=तू मेरा पुस्तक और कलम कब देगा ? । सः अस्मत् लेखनीं आदत्त=उस ने हम से कलम लिया है ॥

ऊनविंशः पाठः १९

(भाषा से संस्कृत बनाओ)

वह तुम्हारे लिये कुछ देने को आया है । सहायक बल देगा । हम उसके समीप में पढ़ने को नहीं जायंगे । वे सब हमारे समीप में पढ़ने को नहीं आये

हैं । क्या तुम उन का पुस्तक नहीं दोगे ? । हम स्वकीय (अपनी) पुस्तक उस के लिये नहीं देंगे । क्या तुम उस के साथ मिलने को जाओगे ? । हम उन से मिलने को नहीं गये । तुम्हारा सुहृद् कब आवेगा । हम मित्र से मिलने को गये । तुम्हारा सुहृद् कौन है ? । वह हमारे साथ नहीं जायगा । उस ने सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा है । वह उस के साथ मिलने को नहीं गया है । क्या तुम ने सत्यार्थप्रकाश को नहीं पढ़ा है ? ।

विंशः पाठः ॥

"क्रीड" धातु="खेलना" के भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान और विधि ॥

कर्त्ता,	भूतक्रिया,
सः	अक्रीडत्=वह खेला है
तौ	अक्रीडताम्=वे २ खेले हैं
ते	अक्रीडन्=वे ३ खेले हैं
त्वम्	अक्रीडः=तू खेला है
युवाम्	अक्रीडतम्=तुम २ खेले हो
यूयम्	अक्रीडत=तुम ३ खेले हो
अहम्	अक्रीडम्=मैं खेला हूं
आवाम्	अक्रीडाव=हम २ खेले हैं
वयम्	अक्रीडाम=हम ३ खेले हैं

कर्त्ता	भविष्यत् क्रिया,
सः	क्रीडिष्यति=वह खेलेगा
तौ	क्रीडिष्यतः=वे २ खेलेंगे
ते	क्रीडिष्यन्ति=वे ३ खेलेंगे
त्वम्	क्रीडिष्यसि=तू खेलेगा
युवाम्	क्रीडिष्यथः=तुम २ खेलोगे
यूयम्	क्रीडिष्यथ=तुम ३ खेलोगे
अहम्	क्रीडिष्यामि= मैं खेलूंगा
आवाम्	क्रीडिष्यावः=हम २ खेलेंगे
वयम्	क्रीडिष्यामः=हम ३ खेलेंगे

कर्त्ता	वर्त्तमान क्रिया,
सः	क्रीडति=वह खेलता है
तौ	क्रीडतः=वे २ खेलते हैं
ते	क्रीडन्ति=वे ३ खेलते हैं

इत्यादि,

कर्त्ता	विधिक्रिया,
सः	क्रीडतु, क्रीडतात्=वह खेले
तौ	क्रीडताम्=वे २ खेलें
ते	क्रीडन्तु=वे ३ खेलें
त्वम्	क्रीड, क्रीडतात्=तू खेल
युवाम्	क्रीडतम्=तुम २ खेलो,
यूयम्	क्रीडत=तुम ३ खेलो
अहम्	क्रीडानि=मैं खेलूं,
आवाम्	क्रीडाव=हम २ खेलें
वयम्	क्रीडाम=हम ३ खेलें

इसी प्रकार "हस" धातु "हँसना" के भी रूप, भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान और विधि क्रियाओं के जानने चाहिये । जैसेः—

सः अहसत्=वह हँसा है

इत्यादि

एकविंशः पाठः ॥

"पश्य (दृश्)" धातु="देखना" के भूतक्रिया आदि ॥

कर्त्ता	भूतक्रिया,
सः	अपश्यत्=उसने देखा,
तौ	अपश्यताम्=उन २ ने देखा
ते	अपश्यन्=उन ३ ने देखा

इत्यादि

कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	पश्यतु, पश्यतात्=वह देखे
तौ	पश्यताम्=वे २ देखें,
ते	पश्यन्तु=वे ३ देखें,
त्वम्	पश्य, पश्यतात्=तू देख,
युवाम्	पश्यतम्=तुम २ देखो इत्यादि।

कर्त्ता	भविष्यत् क्रिया
सः	द्रक्ष्यति=वह देखेगा
तौ	द्रक्ष्यतः=वे २ देखेंगे
ते	द्रक्ष्यन्ति=वे ३ देखेंगे
त्वम्	द्रक्ष्यसि=तू देखेगा,
युवाम्	द्रक्ष्यथः=तुम २ देखोगे,
यूयम्	द्रक्ष्यथ=तुम ३ देखोगे,
अहम्	द्रक्ष्यामि=मैं देखूंगा,
आवाम्	द्रक्ष्यावः=हम २ देखेंगे
वयम्	द्रक्ष्यामः=हम ३ देखेंगे,

वर्त्तमानक्रिया—सः पश्यति इत्यादि।

संस्कृत से भाषा बनाओ ॥

नेत्राभ्यां स न पश्यति। अहम् तैः न क्रीडिष्यामि,। त्वं तत्र मां विष्णुमित्रेण सह अपश्यः। अहं त्वा तत्र गत्वा द्रक्ष्यामि। युवाम् बालकैः अक्रीडतम्?। अहं तु न अक्रीडम्। स अक्रीडत्। यूयं राजगृहं द्रक्ष्यथ न वा?। स मया क्रीडिष्यति। त्वं मह्यं लेखनीं दास्यसि?। न अहं तुभ्यं किञ्चित् अपि दास्यामि। पश्य मे ऐश्वर्य्यम्। पश्यत मृगम् ॥

द्वाविंशः पाठः २२ ॥

"लिख" धातु"=लिखना" के भू० भ० वर्त्त० विधि ॥

कर्त्ता	भूतक्रिया
सः	अलिखत्=उस ने लिखा है इत्यादि

कर्त्ता	वर्त्तमानक्रिया
सः	लिखति=वह लिखता है इत्यादि।

कर्त्ता,	भविष्यक्रिया
सः	लेखिष्यति=वह लिखेगा इत्यादि।

कर्त्ता	विधिक्रिया
सः	लिखतु, लिखतात्=वह लिखे इत्यादि।

त्रयोविंशः पाठः २३ ॥

"स्मृ" धातु="यादकरना" के भू० भ० वर्त्त० विधि ॥

कर्त्ता, भूतक्रिया	कर्त्ता, भविष्यक्रिया
सः अस्मरत्=उस ने याद किया है इत्यादि	सः स्मरिष्यति=वह याद करेगा इत्यादि
कर्त्ता, वर्त्तमानक्रिया	**कर्त्ता, विधिक्रिया**
सः स्मरति=वह याद करता है इत्यादि।	सः स्मरतु, स्मरतात्=वह याद करे इत्यादि

चतुर्विंशः पाठः २४ ॥

सः सूक्ष्माणि अक्षराणि पश्यति=वह बारीक अक्षरों को देखता है। तौ वृथा क्रीडतः=वे २ वृथा खेलते हैं। ते किं लिखन्ति ?=वे क्या लिखते हैं ?। त्वं मातरं स्मरसि=तू माता को याद करता है। युवाम् किं पश्यथः ?=तुम २ क्या देखते हो ?। यूयम् वृथा क्रीडथ=तुम वृथा खेलते हो। अहम् सारस्वतम् लिखामि=मैं सारस्वत लिखता हूं। आवाम् स्वं पाठं स्मरावः=हम २ अपने पाठ को याद करते हैं। वयम् त्वाम् न पश्यामः=हम तुम को नहीं देखते हैं। सः न अक्रीडत्=वह नहीं खेला है। तौ लिखतः=वे २ लिखते हैं। ते पितरम् न स्मरन्ति=वे पिता को नहीं याद करते। त्वम् तं न अपश्यः=तूने उस को नहीं देखा है। युवाम् न अक्रीडतम्=तुम २ नहीं खेले हो। यूयम् किम् अलिखत?=तुम ने क्या लिखा है ?। अहम् आचार्य्यम् अस्मरम्=मैंने गुरु को याद किया है। आवाम् इन्द्रप्रस्थम् अपश्याव=हम २ ने दिल्ली को देखा है। वयम् न अक्रीडाम=हम नहीं खेले हैं ॥

संस्कृत से भाषा बनाओ ॥

स सायं लेखिष्यति। तौ पाठं न स्मरिष्यतः। ते उत्सवं द्रक्ष्यन्ति। किं त्वं न क्रीडिष्यसि ?। युवाम् मध्यान्हे किं लेखिष्यथः ?। यूयम् भ्रातरं न स्मरिष्यथ?। अहं समाजं द्रक्ष्यामि। आवाम् न क्रीडिष्यावः। वयम् अष्टाध्यायीं लेखिष्यामः ॥

भाषा से संस्कृत बनाओ ॥

वह पाठ को याद करे। वे २ पुस्तक को देखें। वे न खेलें। तू अष्टाध्यायी

को लिख । तुम २ अपने पाठ को याद करो । तुम ३ उत्सव न देखो । अब मैं न खेलूं । हम २ पुस्तक लिखें । हम ३ पाठ को याद करें ॥

पञ्चविंशः पाठः २५ ॥

निम्नलिखित संस्कृत चिट्ठी, ऐसी रीति से लिखी है कि इस पुस्तक के समस्त आशय वाले पद आजायँ ॥

मित्रवर्य्य !

अस्माकं भृत्यः युष्माकं समीपे अगच्छत् न वा ? अहम् तुभ्यम् प्रणामं कृत्वा तव यशः श्रुत्वा धन्यवादं दत्वा त्वया प्रेषितं पत्रं पठित्वा आनन्दं मत्वा हर्षम् आदाय तुभ्यं किञ्चित्कष्टं दातुं लिखामि; त्वया सह व्याकरणं पठितुम् आगत्य कञ्चित्कालं तव पार्श्वे स्थास्यामि तदा वर्षचतुष्टयं व्याकरणं पठिष्यामि; अहं च वेदपर्य्यन्तं पठितुं, तेषां पारं गन्तुं, तेन ब्रह्म ज्ञातुं, गुरुकुले स्थातुं, पण्डितैः शास्त्रार्थं कर्तुं, सत्यं मन्तुम्, अविद्यां मार्ष्टुं, ब्रह्म लोकहितं च चिन्तयितुं, धार्म्मिकैः सङ्गन्तुं, सत्पुरुषेषु आस्तुं, दुर्जनेभ्यः दूरे स्थातुं, अधार्म्मिकान् जेतुम्, इच्छामि; यदि यूयं आशिषो दास्यथ तर्हि स्वनेत्राभ्यां तत्सर्वं द्रक्ष्यामि, वेदार्थान् लेखिष्यामि, शास्त्रविचारे क्रीडिष्यामि, परं ब्रह्म स्मरिष्यामि--इति आश्विनकृष्णाऽष्टम्यां सोमे संवत् १९४७ वि० ॥

भवन्मित्रवर्य्यः

भवदत्तः

इति

पुस्तकों की सूची ॥

ऐसा और इतना संक्षेप से अब तक कोई नहीं छपा !

"ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे द्वितीयोंऽशः"

शब्दप्रमाण द्वारा «मन्त्र ब्राह्मण दोनों वेद हैं वा क्या» ? इत्यादि का निर्णय ७१ प्रमाणों से किया है। इस में अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्रा०, सांख्य, आपस्तम्ब, प्रातिशाख्य, कात्यायन, बौधायन, परिशिष्ट, मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेय ब्रा०, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौशिकसूत्र, अमरकोश, लघुशब्देन्दुशेखर, निरुक्त, सायणभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वेदान्तसूत्र, न्यायदर्शन, तैत्तिरीय आरण्यक, पिङ्गलसूत्र, चरणव्यूह, न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थों से बहुत से प्रमाण संग्रह करके पं० तुलसीराम स्वामी ने बनाया -)॥ प्रथमोंऽशः -)॥

संस्कृत ग्रेमेटिकल प्राइमर ॥

बिना गुरु के संस्कृत सिखाती हैं—संस्कृत का प्रथम पुस्तक)॥ द्वितीय -)। तृतीय में अब की बार छपाने में सन्धि का विषय बढ़ाया गया है मूल्य घटाया ≡)॥ चतुर्थ भी तैयार हो रहा है ॥ प्रश्नोत्तरशतक (आर्य्यधर्म पर) ≡) प्रबन्धार्कोदय ।-) शिक्षाध्याय)॥ आयुर्वेदशब्दार्णवकोष ॥≡) यमयमीसूक्त पादरी सिनियम आदि के दिये दूषणों से उद्धारपूर्वक अर्थ संस्कृत तथा भाषा ≡) भजगोविन्दु -) शास्त्रार्थ किराणा ≡) रामायण का आलहा पहली लड़ाई)। अष्टाध्यायी ≡) भर्तृहरिनीतिशतक भाषा टीका ≡) गणरत्नमहोदधि कोष १॥) मनुभाष्यभूमिका १॥) «तारीखदुनियां» (नागरी) संसार की उत्पत्ति को कितने वर्ष हुये ज्ञात होता है ≡) यज्ञोपवीतशं० -) फगे समाशबीनी (उर्दू) (वेश्यागामियों की दुर्दशा दिखाई है ≡)॥ यहीं नागरी में।)॥ कुमारीभूषण -) उपनिषद् संस्कृत और भाषाटीका ईश ≡) केन ।) कठ ॥।) प्रश्न ॥≡) मुण्डक ॥।) माण्डूक्य ≡) तैत्तिरीय ॥।) ये सात उपनिषद् भिन्न २ तो ३॥) के हैं परन्तु सातों इकट्ठे ३) में। विदुरनीति ≡) दशोपनिषद् ।-) जीवनयात्रा ४ आश्रमों के धर्म हैं ≡) सीताचरित्र नावल नागरी (प्रथम भाग) ॥।) उर्दू में चारों भाग १॥।) प्रति भाग ॥) दमयन्तीस्वयंवरनाटक ≡) ये दोनों नये छपे हैं ॥

इकट्ठे पुस्तक लेने वालों को ४) में ५) के, ७) में १०) के, २०) में ३०) के और ५०) में १००) के पुस्तक मिलेंगे।

पता—पं० छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ़ (जि० मेरठ)

स्वामी औषधालय परीक्षितगढ़ जि० मेरठ

१ ज्वरघ्न भस्म १) तोला।

नित्य ज्वर तथा तेइया में रामबाण है धातुर्धक में भी कुछ २ काम देती है

२ "अतीसारारि चूर्ण"

यह चूर्ण सब प्रकार के दस्तों में जब २ दिशा से आओ हाथ पांव धो कर ९ मासे की फंकी करलो ॥) छिटकी।

३ दद्रुघ्न

दाद को धो कर नित्य लगा दो तीन दिन में आराम होगा ॥) छिटकी।

४ अर्क प्रसूतारि

यह अर्क सभी वैद्य जानते हैं मूखं नहीं, आधी छटांक प्रातः सायं पीये। सौभाग्य शुंठीपाक इसके साथ बड़ा उपकारी है १) बोतल १

५ खांसी की गोली

मुख में गेर घुलती रहेगी आठ घड़ी तक रखने से आराम भाग होता है १०८ का दाम १)

६ सुरमा सुधाञ्जन

इसे नेत्रों में लगाने से सब नेत्र रोग नष्ट होते हैं कुछ दिन सेवन से फुल्ली तक जाती रहती है। नेत्र साफ होते हैं ॥) तोला।

७-योगराजगुग्गुलवटी-गोली।

प्रसिद्ध औषध है। भिन्न २ अनुपानों से अनेक रोगों पर काम देती है और नित्यप्रति की बदहजमी जो प्रायः लिखने पढ़ने आदि बैठने का काम करने वालों को रहती है १ गोली सायंकाल नित्य खाने से सर्वथा दूर रहेगी १०८ गोली का मूल्य १)

१-डाक व्यय पुस्तकादि सब वस्तुओं का मूल्य के अतिरिक्त ग्राहक को देना होगा ॥

२-कमीशन-४) में ५) तथा ७) में १०) और २०) में ३०) का माल मिलेगा

पता-छुट्टनलाल स्वामी

परीक्षितगढ़-ज़िला, मेरठ

ओ३म् ॥

संस्कृत-भाषा-तृतीयं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (ज़िला मेरठ) निवासि—
स्वामि-तुलसीराम-शर्म्म-विरचितम् ॥

A

SANSKRIT-

GRAMMATICAL PRIMER.

THIRD PART, III

BY

Pundit Tulsi Ram Sharma, Parichatgarh District Meerut

Printed at the Saraswati Press Allahabad.

संवत् १९५२ ता० ७ । ९ । ९५

इसकी रजिस्टरी कराई गई और किसी को छापने का अधिकार नहीं है ॥

Second Edition
1000 Copies.

द्वितीयवार १०००
मूल्य =)॥।

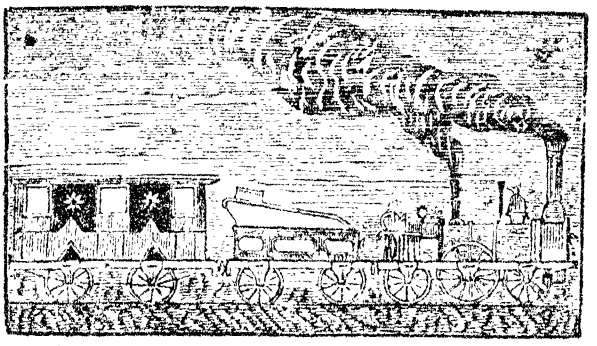
ओ३म्

भूमिका

इस पुस्तक में सामान्यतया व्याकरण का सुबन्तप्रकरण इसलिये पूरा कर दिया है कि अब केवल कारक समास और तद्धित तथा बड़ा प्रकरण तिङन्त रहा है सो चतुर्थपुस्तक में संक्षेप से उस को भी लिख देने का विचार है। प्रथमवार सन्धि विषय में कई सन्धि छूट गई थीं इस वार वे भी सम्मिलित कर दी हैं। जब कि चारों भाग छपकर तैयार हो जावेंगे तब एक छोटामा संस्कृतव्याकरण पूरा हो जायगा। प्रथमवार की छपी १५०० पुस्तकों के इतना शीघ्र बिक जाने के कारण मैंने अपने परिश्रम को सफल समझा और विदित हुआ कि पाठकवर्ग इस पुस्तक को उपयोगी समझते हैं। सो चारों भाग पढ़ने पर निश्चय है कि उस को घर बैठे संस्कृत समझने और लिखने तथा बोलने की शक्ति हो जावेगी। चतुर्थभाग छपना आरम्भ होगया॥

और प्रथम पुस्तक ४००० कापी छपी थीं सो सब समाप्त हुईं अब चतुर्थवार छपी है॥ इति॥

तुलसीराम स्वामी



रेलगाड़ी

अथ

संस्कृत-भाषा-तृतीयं-पुस्तकम् ॥

(१)-जब इ, उ, ऋ, ऌ, वर्णों से कोई स्वर परे होता है तो उक्त चारों वर्णों के स्थान में क्रम से य् व् र् और ल् ये आदेश किये जाते हैं ॥

(२)-जो किसी वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण बनाया जाता है तो उसे "आदेश" कहते हैं ॥ उदाहरण, जैसेः-दधि+ओदनम्=दध्योदनम् यहां इ को य् । और मधु+अत्र=मध्वत्र यहां उ को व् । और पितृ+अर्थः=पित्रर्थः यहां ऋ को र् । और ऌ+इत्=लित् यहां ऌ को ल् होता है ॥

(३)-जब ए ओ ऐ औ से परे कोई स्वर होता है तब उक्त चारों वर्णों को अय् अव् आय् और आव् ये आदेश क्रम से होते हैं । जैसेः-ने+अनम्=नयनम् । भो+अति=भवति । नै+अकः=नायकः । पौ+अकः=पावकः ॥

(४)-परन्तु जब एक पद के अन्त में ए या ओ होते हैं और इन से आगे ह्रस्व अ होता है तब अ का लोप हो जाता है ॥

(५)-जिस शब्द के अन्त में विभक्ति हो उस (विभक्तिसहित) को पद कहते हैं ॥

(६) ६-अ इ उ ऋ ऌ ह्रस्व, और आ ई ऊ ॠ ए ओ ऐ औ दीर्घ और अ ३, इ ३, उ ३, ऋ३, ऌ ३, ए ३, ओ ३, ऐ ३, औ ३, ये प्लुत कहाते हैं ॥

उदाहरण (देखो संख्या ४) जैसेः-ते+अत्र=तेत्र । पटो+अत्र=पटोत्र ॥

(७) ७-अ वर्ण से इ वर्ण मिल के दोनों को ए होता है और अ वर्ण से उ वर्ण मिल के दोनों को ओ आदेश होता है । जैसेः-उप+इन्द्रः=उपेन्द्रः । सूर्य्य+उदयः=सूर्य्योदयः ॥

(८) ८-परन्तु जहां २ हमने वर्ण शब्द कहा है वहां २ ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीनों समझने चाहिये । जैसेः-संख्या ७ में अवर्ण कहने से अ, आ अ ३, और इवर्ण कहने से इ, ई, इ ३, समझे जाते हैं और संख्या १ में भी इ, उ, ऋ, ऌ कहने से ह्रस्व दीर्घ प्लुत तीनों समझे जाते हैं । उदाहरण संख्या ७ का जैसेः-गङ्गा+उद-

कम्=गङ्गोदकम् । ईश्वर+ऊतिः=ईश्वरोतिः । अम्बा+इन्द्रः=अम्बेन्द्रः । देव+ईशः=देवेशः । उदाहरण संख्या १ में जैसेः-लक्ष्मी+आगमनम्=लक्ष्म्यागमनम् । वधू+आसनम्=वध्वासनम् इत्यादि जानो । प्लुत को ११ नियम से सन्धि का निषेध है॥

९-अ, आ, आ ३, ये तीनों आपस में सवर्ण कहाते हैं और इ, ई, ई ३ इत्यादि समस्त स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तीनो भेद सवर्ण कहाते हैं ॥

१०-जब अ इ उ ऋ वर्णों से कोई इन का ही सवर्ण स्वर परे हो तब दोनों को मिल के एक दीर्घ आदेश होता है जैसेः-दैत्य+अरिः=दैत्यारिः श्री+ईशः=श्रीशः । भानु+उदयः=भानूदयः । होतृ+ऋकारः=होतॄकारः ॥

११-जब किसी सम्बोधनान्त (दूर से बुलाने) में स्वर हो तो वह प्लुत होता है और प्लुत को अगले स्वर से सन्धि नहीं होती । जैसे-देवदत्त ३ एहि । यहां अ ३+ए को मिल कर ऐ नहीं होता इसी प्रकार पुत्र ३ इति इत्यादि ॥

१२-स और तवर्ग को श और चवर्ग क्रम से होता है यदि श और चवर्ग से मेल हो तो । जैसे-रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति । सत्+चित्=सच्चित् । राजन्+जय=राजञ्जय । समिध्+चीयते=समिच्चीयते इत्यादि ॥

१३-स और तवर्ग को क्रम से ष और टवर्ग आदेश होते हैं यदि ष और ट वर्ग से मेल हो तो । जैसे—तत्+टीका=तट्टीका । तत्+टीकते=तट्टीकते । अग्निमथ्+टङ्कारः=अग्निमट्टङ्कारः । उद्+टङ्कनम्=उट्टङ्कनम् । टित्+ढाणञ्=टिड्ढाणञ् । पेष्+ता=पेष्टा । शिष्+तः=शिष्टः इत्यादि ॥

१४-पद के अन्त में य व ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प आदि से परे ङ ञ, ण, न, म, हों तो पूर्वोक्त अक्षरों में जो जिस वर्ग का हो उस को उसी वर्ग का अनुनासिक* अक्षर प्रायः आदेश होता है । जैसे-एतद्+मुरारिः=एतन्मुरारिः । यहां तवर्ग के द् को म परे है इसलिये तवर्ग को अनुनासिक न् होता है । तत्+मात्रम्=तन्मात्रम् । चित्+मयम्=चिन्मयम् इत्यादि ॥

१५-तवर्ग से लकार परे हो तो उस को भी लकार ही हो जाता है । जैसे-तत्+लयः=तल्लयः । विद्वान्+लिखति=विद्वाँल्लिखति न् को अनुनासिक लँ हुवा॥

१६-च ट त क प को ज ड द ग ब आदेश होते हैं यदि स्वर वा हयवरल झ ढ ध घ भ ज ड द ग ब परे हों । जैसे-अच्+अन्तः=अजन्तः । षट्+अत्र=षडत्र । तत्+अत्र=तदत्र । वाक्+यथा=वाग्यथा । ककुप्+ऐन्द्री=ककुबैन्द्री । वाक्+वज्रम्=वाग्वज्रम् इत्यादि ॥

---

* जो नाक में बोले जाते हैं जैसे ङ, ञ, ण, न, म, आदि ।

१७—किसी वर्ग के दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को उन २ का पहला अक्षर आदेश होता है यदि ख फ छ ठ थ च ट त क प परे हों तो। जैसे—उद्+थानम्=उत्थानम्। यहां तवर्ग का तीसरा द् वर्ण है उस को पहिला त् आदेश हुआ। त्वग्+तत्र=त्वक्तत्र। इत्यादि॥

१८—यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय वा चतुर्थ वर्ण से ह् परे हो तो ह् को उसी वर्ग का चतुर्थ अक्षर आदेश होता है। जैसे वाक्+ह्रासः=वाग्घ्रासः। यहां ह् को कवर्ग का चतुर्थ घ् आदेश होकर १६ नियम के अनुसार क् को ग् होगया। ऐसे ही—त्वच्+हीनः=त्वग्घीनः। षट्+हसन्ति=षड्ढसन्ति। तत्+हविः=तद्धविः। ककुप्+हासः=ककुद्भासः। इत्यादि॥

१९—झ भ घ ढ ध ज ब इत्यादि से परे श् को छ आदेश होता है यदि कोई स्वर वा ह य व र ल न ङ म परे हों। जैसे—तच्+शिवः=तच्छिवः इत्यादि॥

२०—यदि अनुस्वार से पांचों वर्गों में से किसी वर्ग का अक्षर परे हो तो उस अनुस्वार को उसी वर्ग का पांचवां अक्षर आदेश होता है। जैसे—त्वं+करोषि=त्वङ्करोषि। यहां अनुस्वार को कवर्ग परे है इसलिये कवर्ग का पञ्चम ङ् होकर ककार में मिल गया। इसी प्रकार त्वं+तनोषि=त्वन्तनोषि। इत्यादि॥

२१—यदि ह्रस्व स्वर से परे ङ् ण् न् हों और इन से परे स्वर हो तो इन को द्वित्व होता है। जैसे सुगण्+इह=सुगण्णिह। राजन्+इह=राजन्निह। प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा इत्यादि॥

२२—जब थ, त और स परे हों तब विसर्ग (:) को स् होता है। जैसे:—रामः+थं वदति=रामस्थं वदति। देवः+तिष्ठति=देवस्तिष्ठति। यज्ञदत्तः+सनोति=यज्ञदत्तस्सनोति। इत्यादि॥

२३—यदि विसर्ग से ट ठ और ष परे हों तो विसर्ग को ष् आदेश होता है। जैसे:—रामः+टीकते=रामष्टीकते। बालः+ठं पठति=बालष्ठं पठति। कः+षण्ढः=कष्षण्ढः। कः+षण्डः=कष्षण्डः इत्यादि॥

२४—यदि च छ और श परे हों तो विसर्ग को श् होता है। जैसे:—हरिः+चन्द्रः=हरिश्चन्द्रः। धनुः+छत्रे=धनुश्छत्रे। शंभुः+शङ्कते=शंभुश्शङ्कते। इत्यादि।

२५—यदि व्यञ्जन परे हों तो म् को अनुस्वार (ं) होता है। जैसे:—

त्वम्+तिष्ठसि=त्वं तिष्ठसि । आवाम्+गच्छावः=आवां गच्छावः । यूयम्+क्रीड-थ=यूयं क्रीडथ । वयम्+दास्यामः । वयं दास्यामः। धर्मानुकूलम्+धनम्+देहि= धर्मानुकूलं धनं देहि । हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे इत्यादि ॥

२६–यदि अकार से परे के विसर्ग को अ ही परे हो तो उ होता है । जैसेः– रामः+अर्च्यः=राम+उ+अर्च्यः, इस में संख्या ७ से अ+उ को ओ होकर रामो+ अर्च्यः, फिर संख्या ४ से अ का लोप होकर रामोर्च्यः ॥

२७–यदि ह, य, व, र, ल, न, म, झ, ढ, ध, घ, भ, ज, ड, द, ग, ब, परे हों तो अः को ओ होता है । जैसेः–चौरः+हरति=चौरो हरति । नरः+याति= नरो याति । अश्वः+रंहति=अश्वो रंहति । वायवः+यान्ति=वायवो यान्ति । कः+लोकः=को लोकः । शिष्यः+नमति=शिष्यो नमति । रुग्णः+म्रियते=रुग्णो म्रियते । वातः+झनझनायति=वातो झनझनायति । कः+ढौकते=को ढौकते । धर्मः+धरति=धर्मो धरति । इन्द्रः+घटते=इन्द्रो घटते । पण्डितः+भवति=प-ण्डितो भवति । परमेश्वरः+जानाति=परमेश्वरो जानाति । शोभनः+डमरुः= शोभनो डमरुः । देवदत्तः+दास्यति=देवदत्तो दास्यति । दूतः+गमिष्यति=दूतो गमिष्यति । दुष्टः+बाधते=दुष्टो बाधते । इत्यादि ॥

२८–यदि ह, उ, ए, ओ, ऐ, औ, वर्णों से परे विसर्ग हो और विसर्ग से कोई स्वर वा ह, य, व, ल, न, म, झ, ढ, ध, घ, भ, ज,ड, द, ग, ब, ये वर्ण परे हों तो विसर्ग को र् होता है । जैसे–शत्रुः+हतः=शत्रुर्हतः । हरिः+याति=हरिर्याति । हरेः+ वचनम्=हरेर्वचनम् । बाह्वोः+लम्बः=बाह्वोर्लम्बः । देवैः+नमस्यः=देवैर्नमस्यः । गौः+गच्छति=गौर्गच्छति । कपिः+मृतः=कपिर्मृतः । वायुः+झञ्झा=वायुर्झ-ञ्झा । शंभुः+ढौकते=शंभुर्ढौकते । वायुः+धरति=वायुर्धरति । इन्दुः+उदेति= इन्दुरुदेति । पत्युः+भार्य्या=पत्युर्भार्य्या । विष्णुः+जागर्त्ति=विष्णुर्जागर्त्ति । शंभोः+ डमरुः=शंभोर्डमरुः । पत्युः+दयिता=पत्युर्दयिता । कपेः+गर्जनम्=कपेर्गर्जनम् । पादयोः+बन्धः=पादयोर्बन्धः । इत्यादि ।

२९–यदि सः और एषः से व्यञ्जन परे हो तो विसर्ग का लोप होजाता है । जैसे–सः+गच्छति=स गच्छति । एषः+क्रीडति=एष क्रीडति । इत्यादि ॥

३०–सन्धि उस को कहते हैं जो वर्ण वा पद आपस में मिलकर बोले जाते और उन में जो आदेशादि होते हैं । और वह सन्धि इस नियम से होता है–

संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः ॥
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥ १ ॥

अर्थः—एक पद में और धातु+उपसर्ग में और समास में सन्धि नित्य अर्थात् अवश्य होता है। और जब पद २ मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के आधीन है। यह संक्षेप से सन्धि का प्रकरण पूरा हुआ ॥

अब अकारान्तादि क्रम से पुँल्लिङ्गवाचक शब्दों के सात विभक्तियों और सम्बोधन के रूप दिखलाते हैं—

३१—जिस शब्द का कुछ अर्थ हो परन्तु वह केवल धातु वा प्रत्यय न हो वह प्रातिपदिक कहलाता है ॥

३२—प्रातिपदिक से आगे सात विभक्तियां होती हैं। अकारान्त "राम" शब्द की सात विभक्तियों का वर्णन "संस्कृत भाषा द्वितीय पुस्तक" में लिख आये हैं उसी रीति से समस्त अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं। परन्तु सर्वनाम संज्ञक शब्दों के रूपों में भेद है:—

३३—सर्व, विश्व, उभ, उभय, अन्य, अन्यतर, इतर, इतरप्रत्ययान्त, इतमप्रत्ययान्त, सम, सिम, नेम, एक, पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, द्वि, किम्, युष्मद्, अस्मद्, भवत्। ये ३३ प्रातिपदिक सर्वनाम कहाते हैं। इन में से सर्व (सब):—

प्रथमा विभक्ति	एकवचन	सर्वः=सब सब ने
	द्विवचन	सर्वौ= * २ सब, २ सबों ने
	बहुवचन	सर्वे= * ३ सब, ३ सबों ने
द्वितीया वि०	एकवचन	सर्वम्=सब को
	द्विवचन	सर्वौ=२ सबों को
	बहुवच०	सर्वान्=३ सबों को
तृतीया वि०	एकव०	सर्वेण=सब ने, से, के साथ
	द्विव०	सर्वाभ्याम्=२ सबों ने, से, "
	बहुव०	सर्वैः=३ सबों ने, से, "

* आगे २ अङ्क से द्विवचन और ३ अङ्क से दो से अधिक समझो ॥

चतुर्थी वि० { १ व०–सर्वस्मै=सब के लिये; २ व०–सर्वाभ्याम्=२ सबों के लिये; ३ बहुव०–सर्वेभ्यः=३ सबों के लिये }

पञ्चमी वि० { १ व०–सर्वस्मात्=सब से; २ व०–सर्वाभ्याम्=२ सबों से; ३ व०–सर्वेभ्यः=३ सबों से }

षष्ठी वि० { १ व०–सर्वस्य=सब का, के, की; २ व०–सर्वयोः=२ सबों का, के, की; ३ व०–सर्वेषाम्=३ सबों का, के, की }

सप्तमी वि० { १ व०–सर्वस्मिन्=सब में, पै, पर; २ व०–सर्वयोः=२ सबों में, पै, पर; ३ व०–सर्वेषु=३ सबों में, पै, पर }

सम्बोधन में प्रथमा वि० { १ हे सर्व=हे सब; २ हे सर्वौ=२ सबो; ३ हे सर्वे=३ हे सबो } सम्बोधन हे शब्द के बिना भी होता है ॥

अकारान्त सर्वनाम "विश्व=सब शब्द"

१*	१ विश्वः	४	विश्वस्मै	७	विश्वस्मिन्
	२ विश्वौ		विश्वाभ्याम्		विश्वयोः
	३ विश्वे		विश्वेभ्यः		विश्वेषु
२	१ विश्वम्	५	विश्वस्मात्	सम्बोधन १	हे विश्व
	२ विश्वौ		विश्वाभ्याम्		हे विश्वौ
	२ विश्वान्		विश्वेभ्यः		हे विश्वे
३	१ विश्वेन	६	विश्वस्य	अर्थ–सर्व शब्द के समान जानो ।	
	२ विश्वाभ्याम्		विश्वयोः		
	३ विश्वैः		विश्वेषाम्		

"उभ=दोनों" सर्वनाम से सब विभक्तियों के केवल द्विवचन ही आते हैं। जैसेः–

१ उभौ=दोनों, ने
२ उभौ=दोनों को
३ उभाभ्याम्=दोनों ने, से, के साथ
४ उभाभ्याम्=दोनों के लिये
५ उभाभ्याम्=दोनों से
६ उभयोः=दोनों का, के, की
७ उभयोः=दोनों में, पै, पर
सम्बोधन १ हे उभौ=हे दोनो

*१,२,३,४,५,६,७ ये अङ्क पुस्तक भर में प्रथमा द्वितीयादि विभक्तियों के हैं ॥

अन्य शब्द (और वा दूसरा)

१	अन्यः=और वा दूसरा अन्यौ= २ और वा दूसरे अन्ये= ३ और वा दूसरे	५	अन्यस्मात् अन्याभ्याम् अन्येभ्यः
२	अन्यम्=और को, वा दूसरे को अन्यौ=और दोनों को, वा दूसरों को अन्यान्=और सब को, वा दूसरों को	६	अन्यस्य अन्ययोः अन्येषाम्
३	अन्येन=और से, के साथ अन्याभ्याम्=और दोनों से, के साथ अन्यैः=और सबों से, के साथ	७	अन्यस्मिन् अन्ययोः अन्येषु
४	अन्यस्मै अन्याभ्याम् अन्येभ्यः	पूर्व शब्दों के तुल्य ही विभक्तिकार्य जानने चाहिये ॥	सम्बोधन हे अन्य हे अन्यौ हे अन्ये

उभय शब्द (बहुतों वा एक के दो भाग) सर्वनाम से सब विभक्तियों के केवल एकवचन और बहुवचन होते हैं, द्विवचन नहीं होता । जैसेः—

१	१—उभयः ३—उभये	४	१—उभयस्मै ३—उभयेभ्यः	७	१—उभयस्मिन् ३—उभयेषु
२	१—उभयम् ३—उभयान्	५	१—उभयस्मात् ३—उभयेभ्यः	१	१—हे उभय ३—हे उभये
३	१—उभयेन ३—उभयैः	६	१—उभयस्य ३—उभयेषाम्	सम्बोधन प्रथमा विभक्ति के तुल्य जानो ॥	

अन्यतर शब्द (कोई एक)—

१	अन्यतरः=कोई एक अन्यतरौ=कोई दो अन्यतरे=कोई सब	२	अन्यतरम्=किसी एक को अन्यतरौ=किन्हीं दो को अन्यतरान्=किन्हीं सब को
३	अन्यतरेण=किसी एक ने, के साथ अन्यतराभ्याम्=किन्हीं दो ने, के साथ अन्यतरैः=किन्हीं सब ने, के साथ	४	अन्यतरस्मै=किसी एक के लिये अन्यतराभ्याम्=किन्हीं दो के लिये अन्यतरेभ्यः=किन्हीं सब के लिये
५	अन्यतरस्मात् इसी प्रकार पञ्चमी अन्यतराभ्याम् षष्ठी वा सप्तमी के अन्यतरेभ्यः रूपों के अर्थ जानो	६	अन्यतरस्य अन्यतरयोः अन्यतरेषाम्
७	अन्यतरस्मिन् अन्यतरयोः अन्यतरेषु		

इसी प्रकार "इतर" (दूसरा) "कतर," "कतम" (कौनसा) "सम" (सब) और "एक" शब्द के रूप तथा अर्थ, जानो ॥

उदाहरण, जैसेः—

सर्वो जनः चन्द्रं पश्यति=सब लोग चांद को देखता है। मया सर्वे गमिष्यन्ति=मेरे साथ सब जायंगे। अहं सर्वान् पाठयामि=मैं सब को पढ़ाता हूं। तैः सर्वैरध्ययनं कृतम्=उन सबों ने पढ़लिया। यजमानः सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो धन ददाति=यजमान सब ब्राह्मणों के लिये धन देता है। सर्वेभ्यो याचनं वरं नास्ति=सब से मांगना अच्छा नहीं है। सर्वेषां पश्य पराक्रमम्=सबों का पराक्रम देख। सर्वस्मिन् ग्रामे मूर्खा वसन्ति=सब ग्राम में मूर्ख बसते हैं। हे सर्व यूयं नाट्यं न पश्यत=हे सबो तुम नांच मत देखो। विश्वे देवाः पश्यत यूयम्=हे सब देवताओ तुम देखो। विश्वेभ्यो जनेभ्यः शुभं चिन्तनीयम्=सब लोगों के लिये भलाई सोचनी चाहिये। विश्वे भद्राणि पश्यन्तु=सब, सुखों को देखें। उभौ विद्यासम्पन्नौ भवतः=दोनों विद्यायुक्त हैं। इदम् अन्येषां गृहम्=यह औरों का घर। द्वयोरन्यतरः पण्डितोऽस्ति=दोनों में कोई एक पण्डित है। युष्मास्वन्यतरेण भुक्तम्=तुम सब में किसी एक ने खालिया। सोऽस्मदितरः पुरुषोऽस्ति=वह हम से दूसरा पुरुष है। युष्मासु कतमः शूरोऽस्ति=तुम में कौनसा शूर है। अस्मासु कतरस्मै दास्यसि द्रव्यम्=तू हम में कौन से के लिये द्रव्य देगा। यः पण्डितोऽस्ति तस्मै दास्यामि=जो पण्डित है उस के लिये दूंगा ॥

३४—पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर इन ९ सर्वनामों के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन और पञ्चमी तथा सप्तमी के एकवचन में दो दो रूप होते हैं। अन्य सब रूप सर्व शब्द के तुल्य हैं। जैसेः—

प्रथमा बहुवचन।	
पूर्वे, पूर्वाः=पहिले सब	उत्तरे, उत्तराः=बायें सब
परे, पराः=अगले सब	अपरे, अपराः=दूसरे सब
अवरे, अवराः=उरले सब	अधरे, अधराः=नीचे के सब
दक्षिणे, दक्षिणाः=दहिने सब	स्वे, स्वाः=अपने सब
	अन्तरे, अन्तराः=भीतर वा बाहर के सब

स पूर्वेषां कीर्त्तिं श्रुत्वा हृष्टो भवति=वह पहलों की कीर्त्ति को सुन कर प्रसन्न होता है। तेऽस्मत् परे भवन्ति=वे हम से अगले हैं। अवरस्य वाक्यं न श्रूयते=उरले का वचन नहीं सुना जाता है।

पञ्चमी का एक वचन—	सप्तमी का एक वचन—
पूर्वस्मात्, पूर्वात्=पहिले से	पूर्वस्मिन्, पूर्वे=पहिले में
परस्मात्, परात्=परले से	परस्मिन्, परे=परले में
अवरस्मात्, अवरात्=उरले से	अवरस्मिन्, अवरे=उरले में
दक्षिणस्मात्, दक्षिणात्=दहिने से	दक्षिणस्मिन्, दक्षिणे=दहिने में
उत्तरस्मात्, उत्तरात्=बायें से	उत्तरस्मिन्, उत्तरे=बायें में
अपरस्मात्, अपरात्=दूसरे से	अपरस्मिन्, अपरे=दूसरे में
अधरस्मात्, अधरात्=नीचे के से	अधरस्मिन्, अधरे=नीचे के में
स्वस्मात्, स्वात्=अपने से	स्वस्मिन्, स्वे=अपने में
अन्तरस्मात्, अन्तरात्=बाहरी वा भीतरी से	अन्तरस्मिन्, अन्तरे=बाहरी वा भीतरी में

३५–प्रथम, चरम, तय, अल्प, अर्द्ध, कतिपय, और नेम शब्द के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में दो २ रूप होते हैं। जैसेः—

१–प्रथमाः, प्रथमे=पहिले सब।
१–चरमाः, चरमे=पिछले सब।
१–द्वितयाः, द्वितये=दो प्रकार के सब
१–अल्पाः, अल्पे=थोड़े सब।
१–अर्द्धाः, अर्द्धे=आधे सब।
१–कतिपयाः, कतिपये=कुछ वा कितने ही सब।

शेष रूप राम शब्द के सदृश होते हैं॥

नेमाः, नेमे=आधे सब।

शेष नेम शब्द के रूप सर्व शब्द के तुल्य जानो क्योंकि नेम शब्द की सर्वनाम संज्ञा कह चुके हैं॥

३६–जिन शब्दों के अन्त में तीय (प्रत्यय) है उन के चतुर्थी पञ्चमी और सप्तमी के एकवचनों में दो २ रूप होते हैं। जैसेः—

४ { द्वितीयस्मै, द्वितीयाय=दूसरे के लिये
तृतीयस्मै, तृतीयाय=तीसरे के लिये

५ { द्वितीयस्मात्, द्वितीयात्=दूसरे से
तृतीयस्मात्, तृतीयात्=तीसरे से

७ { द्वितीयस्मिन्, द्वितीये=दूसरे में
तृतीयस्मिन्, तृतीये=तीसरे में

३७–"निर्जर" (देवता) शब्द के रूपों में भी भेद है। जैसेः–

१	१ निर्जरः=देवता।	५	१ निर्जरात्, निर्जरसः
	२ निर्जरौ, निर्जरसौ		२ निर्जराभ्याम्=२ देवतों से
	३ निर्जराः, निर्जरसः		३ निर्जरेभ्यः=३ देवतों से
२	१ निर्जरम्, निर्जरसम्	६	१ निर्जरस्य, निर्जरसः
	२ निर्जरौ, निर्जरसौ		२ निर्जरयोः, निर्जरसोः
	३ निर्जरान्, निर्जरसः		३ निर्जराणाम्, निर्जरसाम्
३	१ निर्जरेण, निर्जरसा	७	१ निर्जरे, निर्जरसि
	२ निर्जराभ्याम्		२ निर्जरयोः, निर्जरसोः
	३ निर्जरैः=देवतों ने		३ निर्जरेषु=३ देवतों में
४	१ निर्जराय, निर्जरसे	सम्बोधन	१ हे निर्जर=हे देवता
	२ निर्जराभ्याम्		२ निर्जरौ, हे निर्जरसौ
	३ निर्जरेभ्यः=		३ निर्जराः, हे निर्जरसः

उदाहरणानिः–

निर्जरसां मध्ये प्रथमः परमेश्वरोऽस्ति। युष्मासु कतमश्चरसोऽस्ति। द्वितये युद्धाय गच्छन्ति। अल्पेन पुरुषार्थेन कार्य्याणां सिद्धिरपि अल्पा भवति। अहं पण्डिताय दास्यामि। कतिपयाः वीराः युद्धाय समर्था भवन्ति। नेमं गच्छं देहि। द्वितीयस्माद् गृहात् आगच्छामि। तृतीयस्मिन् गृहे कोऽस्ति। कतिपये निर्जरसः प्रत्यक्षाः न भवन्ति। वायुजलयोः निर्जरसोः कोऽधिकोऽस्ति। उभावपि तुल्यौ भवतः ॥

(आकारान्ताः)

आकारान्त "विश्वपा" (सर्वरक्षक, सबकी रक्षा करने वाला) शब्द के रूपः–

१	विश्वपाः विश्वपौ विश्वपाः	३	विश्वपा विश्वपाभ्याम् विश्वपाभिः	५	विश्वपः विश्वपाभ्याम् विश्वपाभ्यः
२	विश्वपाम् विश्वपौ विश्वपः	४	विश्वपे विश्वपाभ्याम् विश्वपाभ्यः	६	विश्वपः विश्वपोः विश्वपाम्

७	विश्वपि	सं०	हे विश्वपाः
	विश्वपोः		हे विश्वपौ
	विश्वपासु		हे विश्वपाः

इसी प्रकार "शंखध्माः" (शङ्ख बजाने वाला) आदि शब्दों के रूप होते हैं। जैसेः—

१-शङ्खध्माः २-शङ्खध्मौ ३-शङ्खध्माः इत्यादि ॥

उदाहरणानि—

विश्वपां जगदीश्वरं स्तुत्वा पाठः कार्यः=सर्वरक्षक परमेश्वर की स्तुति कर के पाठ करना। शङ्खध्माः युद्धे शङ्खान् धमन्ति=शङ्ख बजाने वाले युद्ध में शङ्खों को बजाते हैं। विश्वपा ईश्वरेण सर्वेषां रक्षा कृता=सर्वरक्षक ईश्वर ने सब की रक्षा की। वयं विश्वपः प्रार्थनं कर्त्तुं गच्छामः=हम सर्वरक्षक की प्रार्थना करने को जाते हैं। विश्वपि विश्वे जनाः तिष्ठन्ति=सर्वरक्षक में सब जन ठहरते हैं। इत्यादि ॥

(इकारउकारान्त)

इकारान्त पुँल्लिङ्ग "कवि" शब्द के रूप जैसेः—

१	कविः=कवि "शाहर"	५	कवेः=कवि से
	कवी=२ कवि		कविभ्याम्=२ कवियों से
	कवयः=३ कवि		कविभ्यः=३ कवियों से
२	कविम्=कवि को	६	कवेः=का, के, की
	कवी=२ कवियों को		कव्योः=२ का, के, की
	कवीन्=३ कवियों को		कवीनाम्=३ का, के, की,
३	कविना=कवि ने, के साथ	७	कवौ=में, पै पर
	कविभ्याम्=२ ने, के साथ		कव्योः=२ में, पै, पर
	कविभिः=३ ने, के साथ		कविषु=३ " " "
४	कवये=कवि के लिये	सं०	हे कवे=हे कवि
	कविभ्याम्=२ कवियों के लिये		हे कवी=हे २ कवियो
	कविभ्यः=३ " "		हे कवयः=हे ३ कवियो

उकारान्त "भानु" शब्द के रूप जैसेः—

१	भानुः=सूर्य	३	भानुना=सूर्य ने, के साथ
	भानू=२ "		भानुभ्याम्=२ " "
	भानवः=३ "		भानुभिः=३ " "
२	भानुम्=सूर्य को	४	भानवे=सूर्य के लिये
	भानू=२ " को		भानुभ्याम्=२ "
	भानून्=३ " को		भानुभ्यः=३ "

५	भानोः=सूर्य से भानुभ्याम्=२ ” भानुभ्यः=३ ”	७	भानौ=सूर्य में, पै, पर भान्वोः=२ ” ” ” भानुषु=३ ” ” ”
६	भानोः=सूर्य का, के, की भान्वोः=२ ” ” ” भानूनाम्=३ ” ” ”	सं०	हे भानो हे भानू हे भानवः

३८—इसी प्रकार हरि, ऋषि, मुनि, गिरि, रवि, कलि, निधि, विधि आदि इकारान्तों और वायु, पायु, मायु, विष्णु, शम्भु, प्रभु, विभु आदि उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप जानने चाहियें। केवल पति शब्द में इतना भेद है कि:—

तृतीया—एकवचन—पत्या=पति ने, के साथ

चतुर्थी—एकव०—पत्ये=पति के लिये

पञ्चमी, षष्ठी—एकव०—पत्युः—पति से, वा का, के, की

सप्तमी—एकवचन—पत्यौ=पति में, पै, पर

३९—शेष सब रूप कवि शब्द के सदृश होते हैं। हां, पति शब्द जब किसी शब्द से मिलकर समास में आता है तो यह भेद नहीं होता किन्तु सभी रूप “कवि” के तुल्य होते हैं। जैसे:—

भूपतिना (तृ०१) प्रजापतये (चतु०१) गोपतेः (पञ्चमी१) गोपतौ (सप्तमी१)

इकारान्त “कति” शब्द (कितने) के रूप केवल बहुवचन में आते हैं। जैसे:—

१ कति=कितने	५ कतिभ्यः=कितनों से
२ कति=कितनों को	६ कतीनाम्= ” का, के, की
३ कतिभिः=कितनों ने, के साथ	७ कतिषु= ” में, पै, पर
४ कतिभ्यः=कितनों के लिये	

उदाहरणानि:—

कविः काव्यं करोति=कवि काव्य को बनाता है। हरी क्रीडतः=२ हरि खेलते हैं। ऋषयस्तपश्चक्रुः=सब ऋषि तप करते थे। रामो विश्वामित्रं मुनिं पप्रच्छ=रामचन्द्र ने विश्वामित्र मुनि को पूंछा था। द्वौ गिरी कीदृशौ शोभेते=दो पर्वत कैसे सुहाते हैं। किं त्वं रवीन् बहून् मन्यसे?=क्या तू सूर्यों को बहुत से मानता है? । कलिनाऽधर्मो वर्धितः=कलियुग ने अधर्म बढ़ाया है। न कलिरधर्महेतुरस्ति=कलियुग अधर्म—हेतु नहीं है। द्वौ निधी पश्यामी=दो

खज़ाने पूरे हैं। तैर्विधिभिः कार्यं करणीयम्=उन विधियों के साथ कार्य करना चाहिये। वायवे स्वाहा=वायु के लिये आहुति। शम्भुविष्णुभ्यां नमः=शम्भु और विष्णु दोनों के लिये नमस्कार। प्रभुभ्यो नमः=प्रभुओं के लिये नमस्कार। अर्शो–रोगे पायोः रुधिरवर्षा भवति=बवासीर–रोग में गुदा से रुधिरवर्षा होती है। शम्भुविष्णुभ्यां धनुषी गृहाण=शम्भु और विष्णु से २ धनुषों को ग्रहण कर। वायूनां कोपः=वायुओं का क्रोध। उदरकारके मायौ पर्पटस्य क्वाथं पिबेत्=उदरकारक पित्त में पितपापड़े का क्वाथ (काढ़ा) पीवे। मायुवायवोर्महद्बलम्=पित्त वायुओं का बड़ा बल है। कविषु चातुर्य्यं भवति=कवियों में चतुराई होती है। हे हरे! मां रक्ष=हे हरि मुझ को बचा। हे मुनयो! धर्मं ब्रूत=हे मुनियो! धर्म को बताओ। कति छात्राः पठन्ति?=कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं?। कतीनां छात्राणां पाठः श्रुतः?=कितने विद्यार्थियों का पाठ सुना। इत्यादि ॥

३९–"द्वि" शब्द केवल द्विवचन में आता है। जैसेः—

१	द्वौ=दो	५	द्वाभ्याम्=दोनों से
२	द्वौ=दोनों को	६	द्वयोः=दोनों का, के, की
३	द्वाभ्याम्=दोनों ने, से, के साथ	७	द्वयोः=दोनों में, पै, पर
४	द्वाभ्याम्=दोनों के लिये		सम्बोधन नहीं होता ॥

४०–सखि शब्द में बहुत भेद हैं। जैसेः–

१	सखा=मित्र सखायौ=२ " सखायः=३ "	२	सखायम्=मित्र को सखायौ=२ " सखीन्=३ "	३	सख्या=से, ने सखिभ्याम्=२ " सखिभिः=३ "
४	सख्ये=के लिये सखिभ्याम्=२ " सखिभ्यः=३ "	५	सख्युः=से सखिभ्याम्=२ " सखिभ्यः=३ "	६	सख्युः=का, के, की सख्योः=२ " " सखीनाम्=३ " "
७	सख्यौ=में सख्योः=२ " सखिषु=३ "	सं०	हे सखे हे सखायौ हे सखायः		

"त्रि" शब्द केवल बहुवचन में आता है
१–त्रयः। २–त्रीन्। ३–त्रिभिः।
४–त्रिभ्यः। ५–त्रिभ्यः। ६–त्रयाणाम्।
७–त्रिषु।

उदाहरणानि–

कति छात्रान् पाठयसि=तू कितने विद्यार्थियों को पढ़ाता है। कतिभिः

सखिभिः क्रीडसि=तू कितने मित्रों के साथ खेलता है। सखिभ्यो हितं करणीयम्=मित्रों के लिये हित करना चाहिये। द्वौ सखायौ परस्परं हसतः=दो मित्र आपस में हंसते हैं। सख्यौ विश्वसिहि=मित्र में विश्वास कर। सखीनां वचनं हितकारि भवति=मित्रों का वचन हितकारी होता है। सख्युर्मा बिभीत=मित्र से मत डरो। त्रयाणां भागः=तीनों का भाग ॥

४१—ईकारान्त पती (सूर्य्य) शब्द के रूप। जैसेः—

१	पतीः पत्यौ पत्यः	३	पत्या पतीभ्याम् पतीभिः	५	पत्यः पतीभ्याम् पतीभ्यः	७	पतौ पत्योः पतीषु
२	पतीम् पत्यौ पतीन्	४	पत्ये पतीभ्याम् पतीभ्यः	६	पत्यः पत्योः पत्याम्	सं०	हे पतीः हे पत्यौ हे पत्यः

इसी प्रकार "वातप्रमी" आदि शब्दों के रूप हैं ॥

पतीः उदेति=सूर्य्य उदय होता है। वातप्रमीं पश्य=वायुमापने वाले को देख। पत्या शुक्रः उदेति=सूर्य्य के साथ शुक्र उदय होता है। वातप्रम्ये पारितोषिकं देयम्=वायुमापक के लिये इनाम देना चाहिये। पत्यः अर्चिषो निस्सरन्ति=सूर्य्य से किरणें निकलती हैं। वातप्रम्यो बुद्धिं पश्य=वायुमापक की बुद्धि को देख ॥

१	बहुश्रेयसी बहुश्रेयस्यौ बहुश्रेयस्यः	४	बहुश्रेयस्यै बहुश्रेयसीभ्याम् बहुश्रेयसीभ्यः	७	बहुश्रेयस्याम् बहुश्रेयस्योः बहुश्रेयसीषु
२	बहुश्रेयसीम् बहुश्रेयस्यौ बहुश्रेयसीन्	५	बहुश्रेयस्याः बहुश्रेयसीभ्याम् बहुश्रेयसीभ्यः	सं०	हे बहुश्रेयसि हे बहुश्रेयस्यौ हे बहुश्रेयस्यः
३	बहुश्रेयस्या बहुश्रेयसीभ्याम् बहुश्रेयसीभिः	६	बहुश्रेयस्याः बहुश्रेयस्योः बहुश्रेयसीनाम्		

४२—बहुलक्ष्मी शब्द में केवल प्रथमा विभक्ति के एकवचन में इतना भेद है कि—"बहुलक्ष्मीः" यह विसर्गान्त रूप होता है। शेष सब रूप बहुश्रेयसी के तुल्य होते हैं ॥

ईकारान्त «प्रधी» (पण्डित) शब्द के रूप । जैसेः—

१	प्रधीः	३	प्रध्या	५	प्रध्याः	७	प्रधि
	प्रध्यौ		प्रधीभ्याम्		प्रधीभ्याम्		प्रध्योः
	प्रध्यः		प्रधीभिः		प्रधीभ्यः		प्रधीषु
२	प्रध्यम्	४	प्रध्यै	६	प्रध्याः	सं०	हे प्रधि
	प्रध्यौ		प्रधीभ्याम्		प्रध्योः		हे प्रध्यौ
	प्रध्यः		प्रधीभ्यः		प्रधीनाम्		हे प्रध्यः

४३—इसी प्रकार ग्रामणी और सेनानी शब्दों के रूप हैं । परन्तु सप्तमी के एकवचन में इतना भेद है कि:—ग्रामण्याम् । सेनान्याम् । शेष प्रधीवत् ॥

४४—जिन शब्दों में केवल एक स्वर है उन के रूप भिन्न हैं । जैसेः—

१	नीः	२	नियम्	३	निया	४	नियै
	नियौ		नियौ		नीभ्याम्		नीभ्याम्
	नियः		नियः		नीभिः		नीभ्यः
५	निया:	६	निया:	७	नियाम्	सं०	हे नीः
	नीभ्याम्		नियोः		नियोः		हे नियौ
	नीभ्यः		नीनाम्		नीषु		हे नियः

४५—«सुश्री» और «यवक्री» आदि शब्दों के रूप भी «नी» शब्द के तुल्य जानो परन्तु «सुश्री» शब्द के सम्बोधन एकवचन में ह्रस्व इकार रहता है । जैसेः— हे सुश्रि ॥

«सुधी» और "शुद्धधी" शब्द भी «सुश्री» शब्द के तुल्य हैं ॥

४६—«क्रोष्टु» शब्द उकारान्त है परन्तु «भानु» शब्द के तुल्य नहीं क्योंकि उस के रूपों में बहुत भेद है । जैसेः—

१	क्रोष्टा	४	क्रोष्ट्रे, क्रोष्टवे	७	क्रोष्टरि, क्रोष्टौ		
	क्रोष्टारौ		क्रोष्टुभ्याम्		क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वोः		
	क्रोष्टारः		क्रोष्टुभ्यः		क्रोष्टुषु		
२	क्रोष्टारम्	५	क्रोष्टुः, क्रोष्टोः	सं०	हे क्रोष्टः		
	क्रोष्टारौ		क्रोष्टुभ्याम्		हे क्रोष्टारौ		
	क्रोष्टून्		क्रोष्टुभ्यः		हे क्रोष्टारः		
३	क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना	६	क्रोष्टुः, क्रोष्टोः				
	क्रोष्टुभ्याम्		क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वोः				
	क्रोष्टुभिः		क्रोष्टूनाम्				

उदाहरणानि:-

पपीः उदेति=सूर्य्य उदय होता है । वातप्रम्यौ गच्छतः=दो वायुमापक जाते हैं । कलौ राजानः "बहुश्रेयस्यः" भवन्ति=कलियुग में राजे लोग "बहुत स्त्रियों वाले" हैं । बहुलक्ष्मीं नरं सर्वे चाटु वदन्ति=बहुधन वाले पुरुष को सब लोग खुशामद की कहते हैं । प्रध्यौ पश्य=*२ विशेषबुद्धि वालों को देख । ग्रामण्यः पश्य=ग्राम के नेताओं को देख । सेनान्या महायुद्धं कृतम्=सेनापति ने बड़ा युद्ध किया । नीभ्यां गच्छ=२ ले चलने वालों के साथ जा । सुश्रीभिः राजभिः महान् यज्ञः कृतः=उत्तम धन वाले राजों ने महान् (बड़ा) यज्ञ किया । यवक्र्यः यवान् देहि=जौ खरीदने वाले के जौ दे । सुधीभ्यां दक्षिणां देहि=२ उत्तम बुद्धि वालों के लिये दक्षिणा दे । शुद्धधीभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः=पवित्रबुद्धि-ब्राह्मणों के लिये नमस्कार । क्रोष्टुः मा बिभीत=शृगाल से मत डरो । वातप्रमीभ्यां तद्विद्यां गृहाण=२ वायुमापकों से उन की विद्या को ग्रहण कर । बहुश्रेयसीनां धातुः क्षीणो भवति=बहुत स्त्री वालों का धातु क्षीण होता है । बहुलक्ष्म्याः मान्यं सर्वे कुर्वन्ति=बहुधनी का मान्य सब करते हैं । प्रधीभ्यः किं न सिध्यति=तीव्रबुद्धि वालों से क्या नहीं सिद्ध होता ? । ग्रामणीधनं देहि=२ ग्राम के नेताओं का धन दे । सेनानीनां बलं पश्य=सेनापतियों के बल को देख । सुश्रियां "चाटुकाराः" मा भवत=बहुधनियों की "खुशामद करने वाले" मत होओ । यवक्रोरस्ति धैर्य्यम्=२ जौ खरीदने वालों में धैर्य्य है । क्रोष्टुषु परस्परस्य रुतं शृणु=शृगालों में आपस के शब्द को सुन । हे बहुश्रेयसि ! बहु मा क्रीड़=हे बहुस्त्रीक बहुत मत क्रीडा कर । हे बहुलक्ष्म्यौ गर्वं मा कुरुतम्=२ हे बहु धनियो ! गर्व मत करो । हे ग्रामण्यः कृषकान् दुःखितान् मा कुरुत=हे ग्राम के नेताओ ! कृषकों को दुःखित मत करो । इत्यादि ॥

१	अतिचमूः	३	अतिचम्वा	५	अतिचम्वाः	७	अतिचम्वाम्
	अतिचम्वौ		अतिचमूभ्याम्		अतिचमूभ्याम्		अतिचम्वोः
	अतिचम्वः		अतिचमूभिः		अतिचमूभ्यः		अतिचमूषु
२	अतिचमूम्	४	अतिचम्वै	६	अतिचम्वाः		हेअतिचमु
	अतिचम्वौ		अतिचमूभ्याम्		अतिचम्वोः	सं०	हेअतिचम्वौ
	अतिचमन्		अतिचमूभ्यः		अतिचमूनाम्		हेअतिचम्वः

*द्विवचन का चिन्ह अङ्क २ है ॥

१	खलपूः	५	खलपूत्वः	१	स्वभूः	५	स्वभुवः
	खलपूत्वौ		खलपूभ्याम्		स्वभुवौ		स्वभूभ्याम्
	खलपूत्वः		खलपूभ्यः		स्वभुवः		स्वभूभ्यः
२	खलपूत्वम्	६	खलपूत्वः	२	स्वभुवम्	६	स्वभुवः
	खलपूत्वौ		खलपूत्वोः		स्वभुवौ		स्वभुवोः
	खलपूत्वः		खलपूनाम्		स्वभुवः		स्वभूनाम्
३	खलपूत्वा	७	खलपूत्वि	३	स्वभुवा	७	स्वभुवि
	खलपूभ्याम्		खलपूत्वोः		स्वभूभ्याम्		स्वभुवोः
	खलपूभिः		खलपूषु		स्वभूभिः		स्वभूषु
४	खलपूत्वे	सं०	हे खलपूः	४	स्वभुवे	सं०	हे स्वभूः
	खलपूभ्याम्		हे खलपूत्वौ		स्वभूभ्याम्		हे स्वभुवौ
	खलपूभ्यः		हे खलपूत्वः		स्वभूभ्यः		हे स्वभुवः

४७—"स्वयम्भू" शब्द भी "स्वभू" के तुल्य है। परन्तु "वर्षाभू" "पुनर्भू" "दून्भू" "करभू" ये चार शब्द "स्वभू" के तुल्य नहीं किन्तु "खलपू" शब्द के सदृश हैं। और "सुलू" "यवलू" आदि शब्द तो "खलपू" शब्द के तुल्य हैं ही। जैसेः—

अतिबलमूर्जितयते=अधिक सेना वाला जीतता है। खलपूत्वा कीदृशीं स्फूर्तिः आविष्करोति=बुहारने वाले ने कैसी फुरती प्रकट करी है। जीवात्मा परमात्मा च द्वावपि स्वभुवौ स्तः=जीव और ब्रह्म दोनों ही अजन्मा (स्वभू) हैं। त्रयोऽपि स्वयम्भुवः सन्ति जीव ईश्वरः प्रकृतिश्च=तीनों ही अजन्मा हैं जीव, ईश्वर और प्रकृति। शब्दायमानं वर्षाभुवं पश्य=बोलते मेंडक को देख। किं शास्त्रं पुनर्भुवं निन्दति=क्या शास्त्र दूसरे वर को निन्दा करता है। ? "यवलवः" "सुलवः" सन्ति="यवकाटने वाले" "अच्छे काटने वाले" हैं। स्वयम्भुवे नमः=स्वयम्भू के लिये नमस्कार। वर्षाभुवः भयं मा कुरु=मेंडक से भय मत कर। यवलवोः, हस्तौ लूनौ=जव काटने वालों के, २ हाथ कटगये। हे स्वयम्भूः परमेश्वर ३ अस्मान् रक्ष=हे अजन्मा परमेश्वर हम को रक्षा कर। हे खलपूत्वौ तिष्ठतम्=ऐ बुहारने वालो ठहरो ॥

ऋकारान्त "विधातृ" शब्द ॥

१	विधाता	५	विधातारौ	१	विधातारः	२	विधातारम्
२	विधातारौ	३	विधातारः	२	विधातॄन्	३	विधात्रा
३	विधातृभ्याम्	३	विधातृभिः	४	विधात्रे	४	विधातृभ्याम्
३	विधातृभ्यः	५	विधातृभ्याम्	३	विधातृभ्यः	६	विधातारौ
६	विधातारः	७	विधातरि	७	विधातृषु	सं०	हे विधातः
सं०	हे विधातारौ	सं०	हे विधातारः				

५–विधातुः २विधातृभ्याम् ३विधातृभ्यः ६–विधातुः २विधात्रोः ३विधातॄणाम् ७–विधातरि २विधात्रोः ३विधातृषु सं० हे विधातः हेविधातारौ हेविधातारः १–पिता २पितरौ ३पितरः २–पितरम् २पितरौ ३पितॄन् आगे विधातृ शब्द के सदृश है ॥

४८–"धातृ" "नप्तृ" "त्वष्टृ" "क्षत्तृ" "होतृ" "प्रशास्तृ" इत्यादि शब्दों के रूप तो "विधातृ" शब्द के तुल्य हैं परन्तु "जामातृ" "भ्रातृ" और "नृ" शब्द के रूप प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन तक "पितृ" शब्द के तुल्य हैं ॥

४९–केवल "नृ" शब्द के षष्ठी बहुवचन में–नृणाम्, नॄणाम् । ये दो रूप होते हैं ।

ओकारान्त "गो" शब्द के रूप ॥

१–गौः	२गावौ	३गावः ।	२–गाम्	२गावौ	३गाः ।
३–गवा	२गोभ्याम्	३गोभिः ।	४–गवे	२गोभ्याम्	३गोभ्यः ।
५–गोः	२गोभ्याम्	३गोभ्यः ।	६–गोः	२गवोः	३गवाम् ।
७–गवि	२गवोः	३गोषु ।	सं०–हे गौः	२हे गावौ	३हे गावः ।

"द्यौ" आदि शब्दों के रूप "गो" शब्द के सदृश हैं ।

ऐकारान्त "रै" शब्द ॥

१–राः	२रायौ	३रायः ।	२–रायम्	२रायौ	३रायः ।
३–राया	२राभ्याम्	३राभिः ।	४–राये	२राभ्याम्	३राभ्यः ।
५–रायः	२राभ्याम्	३राभ्यः ।	६–रायः	२रायोः	३रायाम् ।
७–रायि	२रायोः	३रासु ।	सं०–हेराः	२हे रायौ	३हे रायः ॥

औकारान्त "ग्लौ" शब्द ॥

१–ग्लौः	२ग्लावौ	३ग्लावः ।	२–ग्लावम्	२ग्लावौ	३ग्लावः ।
३–ग्लावा	२ग्लौभ्याम्	३ग्लौभिः ।	४–ग्लावे	२ग्लौभ्याम्	३ग्लौभ्यः ।
५–ग्लावः	२ग्लौभ्याम्	३ग्लौभ्यः ।	६–ग्लावः	२ग्लावोः	३ग्लावाम् ।
७–ग्लावि	२ग्लावोः	३ग्लौषु ।	सं०–हेग्लौः	२हेग्लावौ	३हेग्लावः ॥

सब ऐकारान्त शब्द "रै" शब्द के तुल्य और सब औकारान्त शब्द "ग्लौ" शब्द के तुल्य हैं ॥

उदाहरण–

हे विधातः ! दयां कुरु=हे ईश्वर ! दया कर । पितरौ सेवस्व=२ पितरों को सेवाकर । धात्रा जगत् रचितम्=प्रभु ने जगत् रचा । पितामहो नप्त्रे मिष्टं

ददाति=बाबा पोते के लिये मिठाई देता है । त्वष्टुः मञ्जूषामानय=बढई से सिन्दूकची को ला । सेवा क्षत्तुः धर्मोऽस्ति=सेवा शूद्र का धर्म है । प्रशास्तृणामाज्ञा मन्तव्या=हाकिमों की आज्ञा माननी चाहिये । जामात्रे कन्यां ददाति=जामाता के लिये कन्या को दान करता है । नृषु देवेषु च किमन्तरमस्ति=मनुष्यों और देवतों में क्या अन्तर है । भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ बभूवतुः=रामलक्ष्मण २ भाई थे । गां देहि=गौको दे । द्यौः प्रकाशते=आकाश प्रकाशित होरहा है । राया सर्वाणि कार्य्याणि सिध्यन्ति=धन के साथ सब कार्य्य सधते हैं । ग्लावः कराः शीतलाः सन्ति=चन्द्रमा की किरणें ठण्ढी हैं । इत्यादि ॥

हकारान्त "मधुलिह्" शब्द ॥

१–मधुलिट्, ड् २ मधुलिहौ ३ मधुलिहः २–मधुलिहम् २ मधुलिहौ ३ मधुलिहः ३–मधुलिहा २मधुलिड्भ्याम् ३मधुलिड्भिः ४–मधुलिहे२मधुलिड्भ्याम् ३मधुलिड्भ्यः ५–मधुलिहः २मधुलिड्भ्याम् ३मधुलिड्भ्यः ६–मधुलिहः २मधुलिहोः ३मधुलिहाम् ७–मधुलिहि २ मधुलिहोः ३ मधुलिट्सु, मधुलिट्त्सु ॥

५०–प्रथमाविभक्ति में हे लगाने से सम्बोधन बनता है ॥

१–मित्रध्रुक्, मित्रध्रुग्, मित्रध्रुट्, मित्रध्रुड् । २ मित्रद्रुहौ ३ मित्रद्रुहः । २–मित्रद्रुहम् २मित्रद्रुहौ ३मित्रद्रुहः । ३–मित्रद्रुहा २मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम् । ३मित्रध्रुग्भिः, मित्रध्रुड्भिः । ४–मित्रद्रुहे २मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम् ३मित्रध्रुग्भ्यः, मित्रध्रुड्भ्यः । ५–मित्रद्रुहः २मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम् ३मित्रध्रुग्भ्यः, मित्रध्रुड्भ्यः । ६–मित्रद्रुहः २मित्रद्रुहोः ३मित्रद्रुहाम् । ७–मित्रद्रुहि २मित्रद्रुहोः ३ मित्रध्रुट्सु, मित्रध्रुट्सु, मित्रध्रुक्षु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

१–गोधुक्, गोधुग् २ गोदुहौ ३ गोदुहः । २–गोदुहम् २ गोदुहौ ३ गोदुहः । ३–गोदुहा २ गोधुग्भ्याम् ३ गोधुग्भिः । ४–गोदुहे २ गोधुग्भ्याम् ३ गोधुग्भ्यः । ५–गोदुहः २ गोधुग्भ्याम् ३ गोधुग्भ्यः । ६–गोदुहः २ गोदुहोः ३ गोदुहाम् । ७–गोदुहि ३ गोदुहोः ३ गोधुक्षु । सं० प्रथमा के तुल्य है ॥

५१–"तत्त्वमुह्" "स्नुह्" और "स्निह्" शब्दों के रूप "मित्रद्रुह्" शब्द के तुल्य हैं ॥

१–भारवाट्, भारवाड् २ भारवाहौ ३ भारवाहः । २–भारवाहम् २ भारवाहौ ३ भारौहः । ३–भारौहा २ भारवाड्भ्याम् ३ भारवाड्भिः । ४–भारौहे

२भारवाड्भ्याम् ३ भारवाड्भ्यः । ५–भारौहः २ भारवाड्भ्याम् ३ भारवाड्भ्यः । ६–भारौहः २ भारौहोः ३ भारौहाम् । ७–भारौहि २ भारौहोः ३ भारवाट्सु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य जानो ॥

१–अनड्वान् २ अनड्वाहौ ३ अनड्वाहः । २–अनड्वाहम् २ अनड्वाहौ ३ अनडुहः । ३–अनडुहा २ अनड्वद्भ्याम् ३ अनड्वद्भिः । ४–अनडुहे २ अनड्वद्भ्याम् । ३ अनड्वद्भ्यः ५–अनडुहः २ अनड्वद्भ्याम् ३ अनड्वद्भ्यः । ६–अनडुहः २ अनडुहोः । ३अनडुहाम् । ७–अनडुहि २ अनडुहोः ३ अनडुत्सु । सम्बो०–हे अनड्वन् २ हे अनड्वाहौ ३ हे अनड्वाहः ॥

५२–"तुराषाह्" शब्द "मधुलिह्" के तुल्य है परन्तु इतना भेद है कि जहां २ ह् को ड् वा ट् होता है वहां २ सा को षा ऐसा मूर्धन्य होता है । जैसे–

तुराषाड् । तुराषाट् । इत्यादि ॥

मधुलिट् रसं लेढि=भौंरा रस को चाटता है । मित्रद्रुहः मुखं नावलोकनीयम्=मित्रद्रोही का मुंह न देखना चाहिये । गोदुहम् आह्वयस्व=गौदुहने वाले को बुलाओ । तत्त्वमुहा भ्रमः कृतः=तत्त्वभूला ने भ्रम किया । स्नुहः दन्तधावनं भलीभांति सम्पद्यते=सिहोड़े की दतौन अच्छी बनती है । स्निहे प्रियं वस्तु देहि=प्यारे के लिये प्यारी वस्तु दे । भारौहो भारम् उद्धर=बोझ उठाने वाले से बोझ उतार । अनडुहां बलं पश्य=बैलों का बल देख । तुराषाड् जलवर्षाः करोति=इन्द्र जल वर्षाओं को करता है । इत्यादि ॥

रेफान्त–"चतुर्" शब्द केवल बहुवचन में है जैसे:–

१–चत्वारः । २–चतुरः । ३–चतुर्भिः । ४–चतुर्भ्यः । ५–चतुर्भ्यः । ६–चतुर्णाम् । ७–चतुर्षु ॥

मकारान्त "प्रशाम्" शब्द–

१–प्रशान् २ प्रशामौ ३ प्रशामः । २–प्रशामम् २ प्रशामौ ३ प्रशामः । ३–प्रशामा २ प्रशान्भ्याम् ३ प्रशान्भिः । ४–प्रशामे २ प्रशान्भ्याम् ३ प्रशान्भ्यः । ५–प्रशामः २ प्रशान्भ्याम् ३ प्रशान्भ्यः । ६–प्रशामः २ प्रशामोः ३ प्रशामाम् । ७–प्रशामि २ प्रशामोः ३ प्रशान्सु । हे प्रशान् । हे प्रशामौ । हे प्रशामः ॥

५३–"किम्" शब्द सर्वनाम है और उस के रूप "सर्व" शब्द के तुल्य होते हैं । जैसे–कः को के । कम् को कान् । इत्यादि ॥

मकारान्त "इदम्" शब्द सर्वनाम । जैसेः—

१—अयम् । इमौ । इमे । २—इमम् । इमौ । इमान्, एनान् ।
३—अनेन, एनेन । आभ्याम् । एभिः । ४—अस्मै । आभ्याम् । एभ्यः ।
५—अस्मात् । आभ्याम् । एभ्यः । ६—अस्य । अनयोः, एनयोः । एषाम् ।
७—अस्मिन् । अनयोः, एनयोः । एषु ॥

उदाहरण—

चतुर्थी देहि=चारों के लिये दे । प्रशामं पश्य=प्रशाम् को देख । इमौ कस्य पुत्रौ स्तः=ये २ किस के पुत्र हैं । अनेन व्याकरणम् अधीतम् एनम् न्यायमध्यापय=इस ने व्याकरण पढ़लिया इस को न्याय पढ़ाव । इत्यादि ॥

नकारान्त "राजन्" शब्द । जैसेः—

१—राजा । २राजानौ । ३राजानः । २—राजानम् । २राजानौ । ३राज्ञः ।
३—राज्ञा । २राजभ्याम् ३राजभिः । ४—राज्ञे । २राजभ्याम् । ३राजभ्यः ।
५—राज्ञः । २ राजभ्याम् । ३राजभ्यः । ६—राज्ञः । २राज्ञोः । ३राज्ञाम् ।
७—राज्ञि, राजनि । २राज्ञोः । ३राजसु । सम्बो० हेराजन् । २हेराजानौ । हेराजानः ॥
१—यज्वा । २यज्वानौ । ३यज्वानः । २—यज्वानम् । २यज्वानौ । ३यज्वनः ।
३—यज्वना । २यज्वभ्याम् । ३यज्वभिः ४—यज्वने । २यज्वभ्याम् । ३यज्वभ्यः ।
५—यज्वनः । २यज्वभ्याम् । ३यज्वभ्यः । ६—यज्वनः । २यज्वनोः । ३यज्वनाम् ।
७—यज्वनि । २यज्वनोः । ३यज्वसु । सं०—हेयज्वन् । २हेयज्वानौ । ३हेयज्वानः ॥

५४—"ब्रह्मन्" शब्द भी "यज्वन्" के तुल्य है परन्तु न को ण हो जाता है । जैसे—ब्रह्माणौ । ब्रह्माणः । इत्यादि ॥
१—ब्रह्महा । २ब्रह्महणौ । ३ब्रह्महणः । २—ब्रह्महणम् । २ब्रह्महणौ । ३ब्रह्मघ्नः ।
३—ब्रह्मघ्ना । २ब्रह्महभ्याम् । ३ब्रह्महभिः । ४—ब्रह्मघ्ने । २ब्रह्महभ्याम् । ३ब्रह्महभ्यः ।
५—ब्रह्मघ्नः । २ब्रह्महभ्याम् । ३ब्रह्महभ्यः । ६—ब्रह्मघ्नः । २ब्रह्मघ्नोः । ३ब्रह्मघ्नाम् ।
७—ब्रह्मघ्नि, ब्रह्महणि । २ब्रह्मघ्नोः । ३ब्रह्महसु । सम्बोधन—हे ब्रह्महन् । २ हे ब्रह्महणौ । ३हे ब्रह्महणः ॥
१—मघवा, मघवान् । २मघवानौ, मघवन्तौ । ३मघवानः, मघवन्तः ।
२—मघवानम्, मघवन्तम् । २मघवानौ, मघवन्तौ । ३मघोनः, मघवतः ।
३—मघोना, मघवता । २मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । ३मघवभिः, मघवद्भिः ।

४–मघोने, मघवते । मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । मघवभ्यः, मघवद्भ्यः ।
५–मघोनः, मघवतः । मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । मघवभ्यः, मघवद्भ्यः ।
६–मघोनः, मघवतः । मघोनोः, मघवतोः । मघोनाम्, मघवताम् ।
७–मघोनि, मघवति । मघोनोः, मघवतोः । मघवसु, मघवत्सु ।
संबो० हे मघवन् । हे मघवानौ, हे मघवन्तौ । हे मघवानः, हे मघवन्तः ॥
१—श्वा । श्वानौ । श्वानः । २–श्वानम् । श्वानौ । शुनः ।
३–शुना । श्वभ्याम् । श्वभिः । ४–शुने । श्वभ्याम् । श्वभ्यः ।
५–शुनः । श्वभ्याम् । श्वभ्यः । ६–शुनः । शुनोः । शुनाम् ।
७–शुनि । शुनोः । श्वसु । सम्बो० हे श्वन् । हे श्वानौ । हे श्वानः ॥
१–युवा । युवानौ । युवानः । २–युवानम् । युवानौ । यूनः ।
३–यूना । युवभ्याम् । युवभिः । ४–यूने । युवभ्याम् । युवभ्यः ।
५–यूनः । युवभ्याम् । युवभ्यः । ६–यूनः । यूनोः । यूनाम् ।
७–यूनि । यूनोः । युवसु । सं०–हे युवन् । हे युवानौ । हे युवानः ॥

उदाहरण–

राजा प्रजाः पालयति=राजा प्रजाओं को पालता है । यज्वानः यजन्ति=यज्ञकर्त्ता लोग यज्ञ करते हैं । ब्रह्मणे नमः=ब्रह्मा के लिये नमस्कार । ब्रह्मघ्नः दण्डय=ब्रह्महत्यारों को दण्ड दे । मघवतो भागः=इन्द्र का भाग । श्वभिर्भुक्तः=कुत्तों ने खालिया । यूनां विवाहः कार्य्यः=जवानों का विवाह करना चाहिये । राजानं पश्य=राजा को देख । ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते=ब्रह्म से प्रजा उत्पन्न होती हैं । ब्रह्महणो नरकं यान्ति=ब्रह्महत्यारे नरक को जाते हैं । राक्षसाः शुनो भुञ्जते=राक्षस लोग कुत्तों को खाते हैं । हे राजन् पाहि माम्=हे राजा बचा मुझे । हे युवानौ कुत्र गच्छथः=हे २ जवानो कहां जाते हो । हे ब्रह्महणः धिक् युष्मान्=हे ब्रह्महत्यारो धिक्कार है तुम को । इत्यादि ॥

" पथिन् ,, शब्द ॥

१–पन्थाः । पन्थानौ । पन्थानः । २–पन्थानम् । पन्थानौ । पथः ।
३–पथा । पथिभ्याम् । पथिभिः । ४–पथे । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।
५–पथः । पथिभ्याम् । पथिभ्यः । ६–पथः । पथोः । पथाम् ।
७–पथि । पथोः । पथिषु । सं० हे पन्थाः । हे पन्थानौ । हे पन्थानः ॥

पथिन् शब्द के तुल्य ही "मथिन्" शब्द है ॥

१—ऋभुक्षाः । ऋभुक्षाणौ । ऋभुक्षाणः । २—ऋभुक्षाणम् । ऋभुक्षाणौ । ऋभुक्षः । ३—ऋभुक्षा । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभिः । ४—ऋभुक्षे । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभ्यः । ५—ऋभुक्षः । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभ्यः । ६—ऋभुक्षः । ऋभुक्षोः । ऋभुक्षाम् । ७—ऋभुक्षि । ऋभुक्षोः । ऋभुक्षिषु । सं०हे ऋभुक्षाः । हे ऋभुक्षाणौ । हे ऋभुक्षाणः ॥

"पञ्चन्" शब्द केवल बहुवचनान्त है । जैसेः—

१—पञ्च २—पञ्च ३—पञ्चभिः ४—पञ्चभ्यः ५—पञ्चभ्यः ६—पञ्चानाम् ७—पञ्चसु ॥

"अष्टन्" शब्द भी बहुवचनान्त है । जैसेः—

१—अष्टौ, अष्ट । २—अष्टौ, अष्ट । ३—अष्टभिः, अष्टाभिः । ४—अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः । ५—अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः । ६—अष्टानाम् । ७—अष्टसु, अष्टासु ॥

"सप्तन्" और "नवन्" तथा "दशन्" शब्द भी "पञ्चन्" के तुल्य हैं ॥

उदाहरण—

कस्य ग्रामस्य पन्थानं गच्छसि=किस ग्राम के मार्ग को जाता है (तू) । मथा दधि मन्थति=मथनी से दही बिलोता है । ऋभुक्षे भागः=इन्द्र के लिये भाग । पञ्च पुरुषा आगताः=पांच पुरुष आये । सप्तानां सिन्धूनां पारे=सात समुद्रों के पार में । अष्टासु ग्रामेषु भ्रान्तः=आठ ग्रामों में भ्रमा । हे ऋभुक्षाः=हे इन्द्र ॥

जकारान्त "ऋत्विज्" शब्द । जैसेः—

१—ऋत्विक्, ऋत्विग् । ऋत्विजौ । ऋत्विजः । २—ऋत्विजम् । ऋत्विजौ । ऋत्विजः । ३—ऋत्विजा । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भिः । ४—ऋत्विजे । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भ्यः । ५—ऋत्विजः । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भ्यः । ६—ऋत्विजः । ऋत्विजोः । ऋत्विजाम् । ७—ऋत्विजि । ऋत्विजोः । ऋत्विक्षु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

इसी प्रकार "रथयुज्" आदि जकारान्त शब्दों के रूप हैं ॥

५५—परन्तु "सम्राज्" "देवेज्*" "विश्वसृज्*" "पात्रमृज्*" आदि कई शब्द "सम्राज्" के तुल्य हैं । यथा—

१—सम्राट्, सम्राड् । सम्राजौ । सम्राजः । २—सम्राजम् । सम्राजौ । सम्राजः । ३—सम्राजा । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भिः । ४—सम्राजे । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भ्यः । ५—सम्राजः । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भ्यः । ६—सम्राजः । सम्राजोः । सम्राजाम् ।

* इन शब्दों को भाष्यकार "रथयुज्" के सदृश मानते हैं ॥

७—सम्राजि । सम्राजोः । सम्राट्सु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

ऐसे ही परिव्राट् । परिव्राजौ । इत्यादि जानो ॥

१—विश्वाराड्, ट् । विश्वराजौ । विश्वराजः ।

२—विश्वराजम् । विश्वराजौ । विश्वराजः ।

३—विश्वराजा । विश्वाराड्भ्याम् । विश्वाराड्भिः ।

४—विश्वराजे । विश्वाराड्भ्याम् । विश्वाराड्भ्यः । इत्यादि ॥

५६—जहां २ ज् को ड् वा ट् होता है वहां २ विश्व को विश्वा होजाता है ॥

उदाहरण—

वेद्याः समन्तात् ऋत्विजः शोभन्ते=वेदी के चारों ओर ऋत्विज् (हवन कर्त्ता) सुहाते हैं । रथयुजम् आहूय=रथजोता को बुला । तेन सम्राजा को योत्स्यति=उस सम्राट् (शहंशाह) के साथ कौन युद्ध करेगा । देवेजे नमः=देव पूजक के लिये नमस्कार । विश्वसृजः प्रजाः प्रजायन्ते=विधाता से प्रजा उत्पन्न होती हैं । पश्य पात्रमृजो हस्तौ—देख बरतन मांजने वाले के, हाथों को । अयं विश्वाराडस्ति=यह विश्वाराट् है ॥

दकारान्त "तद्" शब्द सर्वनाम द्वितीयपुस्तक में लिख चुके हैं । और "त्यद्" शब्द भी उस के तुल्य ही है । जैसे—स्यः त्यौ त्ये । त्यम् त्यौ त्यान् । त्येन त्याभ्याम् इत्यादि जानो ॥

और "यद्" शब्द भी तद् के ही सदृश है । जैसे—

१—यः । यौ । ये । २—यम् । यौ । यान् । ३—येन । याभ्याम् । इत्यादि ॥

५७—"एतद्" शब्द के रूपों में कुछ ही भेद है । जैसेः—

१—एषः । एतौ । एते । २—एतम्, एनम् । एतौ, एनौ । एतान्, एनान् ।

३—एतेन, एनेन । एताभ्याम् । एतैः । ४—एतस्मै, एताभ्याम् । एतेभ्यः ।

५—एतस्मात् । एताभ्याम् । एतेभ्यः । ६—एतस्य । एतयोः, एनयोः । एतेषाम् ।

६—एतस्मिन् । एतयोः, एनयोः । एतेषु ॥

दकारान्त "युष्मद्" और "अस्मद्" शब्द के रूप द्वितीय पुस्तक में आ-चुके हैं और वे तीनों लिङ्ग अर्थात् पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में एक से ही रहते हैं ॥

उदाहरण—

स गच्छति=वह जाता है। त्वं पश्य=तुम को देख। येन दूषितं तं मारय=जिस ने बिगाड़ किया उस को मार। एतस्मै किं दास्यसि=इस के लिये क्या देगा (तू)। तव गृहं क्वास्ति=तेरा घर कहां है। मयि पापं नास्ति=मुझ में पाप नहीं है ॥

१-द्विपात्, द्विपाद्। द्विपादौ। द्विपादः। २—द्विपादम्। द्विपादौ। द्विपदः।
३-द्विपदा। द्विपाद्भ्याम्। द्विपाद्भिः। ४-द्विपदे। द्विपाद्भ्याम्। द्विपाद्भ्यः।
५-द्विपदः। द्विपाद्भ्याम्। द्विपाद्भ्यः। ६-द्विपदः। द्विपदोः। द्विपदाम्।
७-द्विपदि। द्विपदोः। द्विपात्सु। सं०-हे द्विपात् इत्यादि ॥

थकारान्त "अग्निमथ्" शब्द। जैसेः-

१-अग्निमत्, द्। अग्निमथौ। अग्निमथः। २-अग्निमथम्। अग्निमथौ। अग्निमथः।
३-अग्निमथा। अग्निमद्भ्याम्। अग्निमद्भिः। ४-अग्निमथे। अग्निमद्भ्याम्।
अग्निमद्भ्यः। इत्यादि ॥

चकारान्त "प्रत्यच्" शब्द। जैसेः-

१-प्रत्यङ्। प्रत्यञ्चौ। प्रत्यञ्चः। २-प्रत्यञ्चम्। प्रत्यञ्चौ। प्रतीचः।
३-प्रतीचा। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भिः। ४-प्रतीचे। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भ्यः।
५-प्रतीचः। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यग्भ्यः। ६-प्रतीचः। प्रतीचोः। प्रतीचाम्।
७-प्रतीचि। प्रतीचोः। प्रत्यक्षु। सं०—हे प्रत्यङ् इत्यादि ॥

"उदच्" शब्द के रूप। जैसेः-

१-उदङ्। उदञ्चौ। उदञ्चः। २-उदञ्चम्। उदञ्चौ। उदीचः।
३-उदीचा। उदग्भ्याम्। उदग्भिः। ४-उदीचे। उदग्भ्याम्। उदग्भ्यः।
५—उदीचः। उदग्भ्याम्। उदग्भ्यः। इत्यादि ॥

१-सम्यङ्। सम्यञ्चौ। सम्यञ्चः। २-सम्यञ्चम्। सम्यञ्चौ। समीचः।
३-समीचा। सम्यग्भ्याम्। सम्यग्भिः। ४-समीचे। इत्यादि ॥

१-सध्र्यङ्। सध्र्यञ्चौ। सध्र्यञ्चः। २-सध्र्यञ्चम्। सध्र्यञ्चौ। सध्रीचः।
३-सध्रीचा। सध्र्यग्भ्याम्। सध्र्यग्भिः। ४-सध्रीचे। इत्यादि ॥

१-तिर्यङ्। तिर्यञ्चौ। तिर्यञ्चः। २-तिर्यञ्चम्। तिर्यञ्चौ। तिरश्चः।
३-तिरश्चा। तिर्यग्भ्याम्। तिर्यग्भिः। ४-तिरश्चे। तिर्यग्भ्याम्। तिर्यग्भ्यः। इत्यादि ॥

१–पयोमुग्, क्। पयोमुचौ। पयोमुचः। २–पयोमुचम्। पयोमुचौ। पयोमुचः। ३–पयोमुचा। पयोमुग्भ्याम्। पयोमुग्भिः। ४–पयोमुचे। इत्यादि।
७–बहुवचने–पयोमुक्षु ॥

उदाहरण–

द्विपाद् मनुष्यः चतुष्पाद्भ्यो बुद्धिमान् भवति=दुपाया मनुष्य चौपायों से बुद्धिमान् है। अग्निमथाऽग्निः उन्मथितः=अग्निमथ् ने अग्नि मथा। प्रत्यङ्ङं पश्य=पीछे चलते को देख। उदीचा कुत्र विश्रामः कृतः=उत्तर को चलने वाले ने कहां विश्राम किया। समीचे नमः=सीधा चलने वाले के लिये नमस्कार। समीचः पन्थाः=सीधा चलने वाले का मार्ग। समीचि प्रसीदति लोकः=सीधा चलने वाले पर प्रसन्न–होता है संसार। हे अग्निमत् क्व यासि=हे अग्निमथ् कहां जाता है (तू)। शृणु तिरश्चां कीदृशः शब्दः=सुन तिरछा चलने वालों (सर्पादि) का कैसा शब्द है। पयोमुचः प्रावृषि वर्षन्ति=बादल वर्षा में बरसते हैं। पयोमुचां गर्जनं शृणु=बादलों के गर्जने को सुन ॥

तकारान्त "महत्" शब्द ॥

१–महान्। महान्तौ। महान्तः। २–महान्तम्। महान्तौ। महतः।
३–महता। महद्भ्याम्। महद्भिः। ४–महते। महद्भ्याम्। महद्भ्यः।
५–महतः। महद्भ्याम्। महद्भ्यः। ६–महतः। महतोः। महताम्।
७–महति। महतोः। महत्सु। सं०–हे महन्। हे महान्तौ। हे महान्तः ॥
१–भवान्। भवन्तौ। भवन्तः। २–भवन्तम्। भवन्तौ। भवतः।
३–भवता। भवद्भ्याम्। इत्यादि आगे महत् शब्द के सदृश जानो ॥

"ददत्" शब्द (ददत् के ऋकार का लोप हुवा है) ॥

१–ददन्। ददतौ। ददतः। २–ददतम्। ददतौ। ददतः।
३–ददता। ददद्भ्याम्। आगे "महत्" के सदृश है ॥

इसी "ददत्" के तुल्य "जक्षत्" "जाग्रत्" "दरिद्रत्" "शासत्" और "चकासत्" के रूप भी जानो। जैसे:–

महानयं तरुः=यह बड़ा वृक्ष है। भवते नमस्करोमि=आप को नमस्कार करता हूं। धनं ददता क्रोधः कृतः=धन देते हुए ने क्रोध किया। जक्षते ब्राह्मणायाऽन्नं परिवेषय=खाते हुए ब्राह्मण के लिये अन्न परोस। जाग्रतश्चोरा वि-

भ्यति=जागते हुए से चोर डरते हैं। दरिद्रतः हास्यं सर्वे कुर्वन्ति=दरिद्र होते की हंसी सब करते हैं। शासति रामे प्रजाः प्रसीदन्ति स्म=राज्य करते हुए रामचन्द्र जी पर प्रजा प्रसन्न होती थीं। चकासतम् रविं पश्य=चमकते हुए सूर्य को देख। हे महन् गर्वं मा कुरु=बड़े! गर्व मत कर॥

पकारान्त "गुप्" शब्द॥

१—गुप्, गुब्। गुपौ। गुपः। २—गुपम्। गुपौ। गुपः ३—गुपा। गुड्भ्याम्। गुब्भिः। ४—गुपे। गुड्भ्याम्। गुड्भ्यः। ५—गुपः। गुड्भ्याम्। गुड्भ्यः। ६—गुपः। गुपोः। गुपाम्। ७—गुपि। गुपोः। गुप्सु। सं०—हे गुप्, ब्। हे गुपौ। हे गुपः॥
इसी प्रकार "असुतृप्" "दृप्" आदि के रूप हैं॥

शकारान्त "तादृश्" शब्दः—

१—तादृक्, तादृग्। तादृशौ। तादृशः। २—तादृशम्। तादृशौ। तादृशः। ३—तादृशा। तादृग्भ्याम्। तादृग्भिः। ४—तादृशे। तादृग्भ्याम्। तादृग्भ्यः। ५—तादृशः। तादृग्भ्याम्। तादृग्भ्यः। ६—तादृशः। तादृशोः। तादृशाम्। ७—तादृशि। तादृशोः। तादृक्षु। हे तादृक्, ग्। हे तादृशौ। हे तादृशः॥
इसी प्रकार "यादृश्" "ईदृश्" "कीदृश्" "दिश्" आदि जानो॥
५८—"विश्" शब्द में भेद इतना है कि—
१—विट्, ड्। विशौ। विशः। २—विशम्। विशौ। विशः। ३—विशा। विड्भ्याम्। विड्भिः। ४—विशे। इत्यादि। ७—विट्सु॥
५९—"शत्रुनश्" शब्द में अधिक भेद है। जैसेः—
१—शत्रुनट्, ड्, ग्, क्। शत्रुनशौ। शत्रुनशः। इत्यादि।
३—द्विव० शत्रुनड्भ्याम्, शत्रुनग्भ्याम्। इत्यादि॥

"मर्मस्पृश्" शब्द "तादृश्" के तुल्य है। जैसेः—

अयं मर्मस्पृक् शरोऽस्ति=यह मर्म—(सुलायम जगह) भेदी बाण है। धनगुप्तम् उत्थापय=धनरक्षक को उठा। "असुतृपो" राक्षसा भवन्ति="केवल अपना ही प्राण पालने वाले" (असुतृप्) राक्षस होते हैं। दृपे मा देहि=अहङ्कारी के लिये मत दे। तादृशस्तु ईदृक् एव साधु=वैसे से तो ऐसा ही अच्छा। यादृशः पार्श्वे तिष्ठति तादृक् स्वयं भवति=जैसे के पास बैठता है वैसा स्वयं होजाता है। कीदृशि पुरुषे विश्वसितव्यम्=कैसे पुरुष में विश्वास करना चाहिये?। हे विट्

घृतं विक्रीणीषे=हे वैश्य घृत बेचता है (तू)। विशो राज्ञो हितं कुर्युः=प्रजाएं राजा का हित करें। शत्रुनट् अयं योद्धा=शत्रुनाशक है यह सिपाही ॥

६०-"दृषृष्" शब्द षकारान्त है पर "तादृश्" के तुल्य रूप हैं ॥

१-रत्नमुट्, ड्। रत्नमुषौ। रत्नमुषः। २-रत्नमुषम्। रत्नमुषौ। रत्नमुषः। ३-रत्नमुषा। रत्नमुड्भ्याम्। इत्यादि ॥

"षष्" शब्द केवल बहुवचनान्त है। जैसेः-

१-षट्, ड्। २-षट्, ड्। ३-षड्भिः। ४-षड्भ्यः। ५-षड्भ्यः। ६-षण्णाम्। ७-षट्सु ॥

"पिपठिष्" शब्द।

१-पिपठीः। पिपठिषौ। पिपठिषः। २-पिपठिषम्। पिपठिषौ। पिपठिषः। ३-पिपठिषा। पिपठीभ्याम्। पिपठीभिः। ४-पिपठिषे। पिपठीभ्याम्। पिपठीभ्यः। ५-पिपठिषः। पिपठीभ्याम्। पिपठीभ्यः। ६-पिपठिषः। पिपठिषोः। पिपठिषाम्। ७-पिपठिषि। पिपठिषोः। पिपठीषु। सम्बो० प्रथमा के तुल्य है ॥

"चिकीर्ष्" शब्द।

१-चिकीः। चिकीर्षौ। चिकीर्षः। २-चिकीर्षम्। चिकीर्षौ। चिकीर्षः। ३-चिकीर्षा। चिकीर्भ्याम्। चिकीर्भिः। ४-चिकीर्षे। चिकीर्भ्याम्। चिकीर्भ्यः। ५-चिकीर्षः। चिकीर्भ्याम्। चिकीर्भ्यः। ६-चिकीर्षः। चिकीर्षोः। चिकीर्षाम्। ७-चिकीर्षि। चिकीर्षोः। चिकीर्षु। हे चिकीः। हे चिकीर्षौ। हे चिकीर्षः ॥

"विद्वस्" शब्द (विद्वसु के उकार का लोप हुआ है)

१-विद्वान्। विद्वांसौ। विद्वांसः। २-विद्वांसम्। विद्वांसौ। विदुषः। ३-विदुषा। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भिः। ४-विदुषे। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भ्यः। ५-विदुषः। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भ्यः। ६-विदुषः। विदुषोः। विदुषाम्। ७-विदुषि। विदुषोः। विद्वत्सु। सं०-हे विद्वन्। हे विद्वांसौ। हे विद्वांसः ॥

"पुंस्" शब्द के रूप—

१-पुमान्। पुमांसौ। पुमांसः। २-पुमांसम्। पुमांसौ। पुंसः।
३-पुंसा। पुंभ्याम्। पुंभिः। ४-पुंसे। पुंभ्याम्। पुंभ्यः।
५-पुंसः। पुंभ्याम्। पुंभ्यः। सं०- ६-पुंसः। पुंसोः। पुंसाम्।
७-पुंसि। पुंसोः। पुंसु। हे पुमन्। हे पुमांसौ। हे पुमांसः ॥

"उशनस्" शब्द—

१—उशना । उशनसौ । उशनसः । २—उशनसम् । उशनसौ । उशनसः ।
३—उशनसा । उशनोभ्याम् । उशनोभिः । ४—उशनसे । उशनोभ्याम् । उशनोभ्यः ।
५—उशनसः । उशनोभ्याम् । उशनोभ्यः । ६—उशनसः । उशनसोः । उशनसाम् ।
७—उशनसि । उशनसोः । उशनस्सु । सं०—हे उशनः, हे उशन, हे उशनन् । हे उशनसौ । हे उशनसः ॥

६१—इसी प्रकार "पुरुदंशस्" और "अनेहस्" शब्द के रूप हैं परन्तु सम्बोधन में केवल एक ही रूप होता है । जैसेः—हे पुरुदंशः । हे अनेहः ॥

६२—"वेधस्" शब्द भी "उशनस्" के तुल्य है परन्तु प्रथमा के एकवचन में—वेधाः । ऐसा विसर्गान्त रूप होता है ॥

६३—और "चन्द्रमस्" "सुयशस्" "मृदुअवस्" आदि सकारान्त शब्द "वेधस्" के ही तुल्य हैं ॥

६४—"अदस्" शब्द सर्वनाम में भेद है । जैसे—
१—असौ । अमू । अमी । २—अमुम् । अमू । अमून् ।
३—अमुना । अमूभ्याम् । अमीभिः । ४—अमुष्मै । अमूभ्याम् । अमीभ्यः ।
५—अमुष्मात् । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । ६—अमुष्य । अमुयोः । अमीषाम् ।
७—अमुष्मिन् । अमुयोः । अमीषु ॥

६५—साधारण (अमुक) अर्थ में "अदस्" शब्द के रूप इस प्रकार होते हैं । जैसे—
१—अमुकः । अमुकौ । अमुके । २—अमुकम् । अमुकौ । अमुकान् ।
३—अमुकेन । अमुकाभ्याम् । अमुकैः । ४—अमुकस्मै । अमुकाभ्याम् । अमुकेभ्यः ।
५—अमुकस्मात् । आगे "सर्व" शब्द के तुल्य जानो ॥

यह अकारादि क्रम से प्रायः सब शब्दों की प्रक्रिया (जो पुल्लिङ्ग हैं) दिखाई ॥

उदाहरण—

रत्नमुट् नरकं याति=रत्नचोर नरक को जाता है । षट्सु ऋतुषु वसन्त आनन्ददः=छहों ऋतुओं में वसन्त आनन्ददायक है । पिपठिषं पाठय=पढ़ना चाहने वाले को पढ़ाव । चिकीर्षः कार्य्याणि सिद्ध्यन्त्येव=करना चाहने वाले के काम सिद्ध ही होते हैं । विदुषां भूषणं विद्या=विद्वानों का भूषण विद्या है । पुं-

सु धैर्य्यं भवति=पुरुषों में धीरज होता है । उशनसः दैत्याः शिक्षां गृह्णन्तिस्म= शुक्राचार्य से दैत्यों ने शिक्षा को ग्रहण किया था । अनेहा पुनर्नाऽऽयाति=समय फिर नहीं आता । वेधाः देवानां मध्ये प्रथमः=ब्रह्मा देवतों के बीच में पहिला है । चन्द्रमसः कराः शीतलाः सन्ति=चन्द्रमा की किरणें ठण्ढी हैं । सुयशसां यश एव धनम्=नेकनामों की कीर्त्ति ही धन है । वृद्धश्रवाः स्वर्गराजोऽस्ति=इन्द्र स्वर्ग का राजा है । अमुं देवदारुं पुरः पश्य=इस देवदारु (वृक्षविशेष) को आगे देख । अमुकस्मै दीयताम्–फलाने के लिये दीजिये ॥

इति पुल्लिङ्ग स्वरूपम्

अथ स्त्रीलिङ्गस्वरूपनिरूपणम्–

आप् प्रत्ययान्त "गङ्गा" शब्दः–

१–गङ्गा । गङ्गे । गङ्गाः । २–गङ्गाम् । गङ्गे । गङ्गाः ।
३–गङ्गया । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभिः । ४–गङ्गायै । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः ।
५–गङ्गायाः । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः । ६–गङ्गायाः । गङ्गयोः । गङ्गानाम् ।
७–गङ्गायाम् । गङ्गयोः । गङ्गासु । हे गङ्गे । हे गङ्गे । हे गङ्गाः ।

इसी प्रकार दुर्गा, अम्बिका, रमा, शिवा, सीता, आदि के रूप जानो ॥

"सर्वा" शब्द सर्वनाम—

१–सर्वा । सर्वे । सर्वाः । २–सर्वाम् । सर्वे । सर्वाः ।
३–सर्वया । सर्वाभ्याम् । सर्वाभिः । ४–सर्वस्यै । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः ।
५–सर्वस्याः । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । ६–सर्वस्याः । सर्वयोः । सर्वासाम् ।
७–सर्वस्याम् । सर्वयोः । सर्वासु । सम्बोधन—गङ्गावत् ॥

इसी प्रकार विश्वा, उभा, अन्या, अन्यतरा, इतरा आदि के रूप जानो (जो शब्द पुल्लिङ्ग सर्वनाम में गिनाये हैं "एका" पर्य्यन्त)

६६–जब दूसरे शब्द से मिलकर सर्वनाम आता है तो कहीं २ गङ्गा के तुल्य भी रूप, स्त्रीलिङ्ग में होते हैं और पुल्लिङ्ग में राम शब्द के तुल्य । जैसे– उत्तरपूर्वस्यै, उत्तरपूर्वायै । इत्यादि ॥

द्वितीया, तृतीया में भी ऐसे ही दो २ रूप होते हैं ॥

६७–"जरा" शब्द को गङ्गा से भेद है । जैसेः–

१–जरा । जरसौ, जरे । जरसः, जराः । २–जरसम्, जराम् । जरसौ, जरे । जरसः, जराः । ३–जरसा, जरया । जराभ्याम् । जराभिः । ४–जरसे, जरायै । जराभ्याम् जराभ्यः । ५–जरसः, जरायाः । जराभ्याम् । जराभ्यः । ६–जरसः, जरायाः । जरसोः, जरयोः । जरसाम्, जराणाम् । ७–जरसि, जरायाम् । जरसोः, जरयोः । जरासु । सं० हे जरे । हे जरसौ, हे जरे । हे जरसः, हे जराः ॥

गोपा, विश्वपा, निधिपा, आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द भी "पुल्लिङ्ग विश्वपा" शब्द के ही तुल्य हैं ॥

इकारान्त "मति" शब्द । जैसेः—

१–मतिः । मती । मतयः । २–मतिम् । मती । मतीः । ३–मत्या । मतिभ्याम् । मतिभिः । ४–मत्यै, मतये । मतिभ्याम् । मतिभ्यः । ५–मत्याः, मतेः । मतिभ्याम् । मतिभ्यः । ६–मत्याः, मतेः । मत्योः । मतीनाम् । ७–मत्याम्, मतौ । मत्योः । मतिषु । सं०–हे मते । हे मती । हे मतयः ॥

इसी प्रकार गति, धृति, बुद्धि, रुचि, कृति, भूति, रति, शुद्धि, भक्ति, पङ्क्ति, मूर्त्ति, कीर्त्ति, ख्याति आदि शब्दों को भी जानो ॥

उदाहरण–

हिमवतो गङ्गाऽवतरति=हिमवान् (पर्वत) से गङ्गा उतरती है । सर्वा गृहस्थसामग्रीं कः संस्करोति=सब, गृहस्थसामग्री को कौन संस्कारकरता है । विश्वया रुच्या ईश्वरं चिन्तय=सारी रुचि से ईश्वर को यादकर । उभे कृती कस्य स्तः=दोनों कृतूत किसकी हैं । अन्यस्यै कन्यायै दीयताम्=और कन्या के लिये दीजिये । अष्टासु अन्यतरा रुक्मिणी भवति=आठों में कोई एक रुक्मिणी है । सर्वाभ्य इतरा यशोदा प्रतीयते=सब से निराली यशोदा प्रतीतहोती है । एकस्याः ललनायाः भाषणं साधुतममस्ति=एक स्त्री का व्याख्यान बहुतअच्छा है । उत्तरपूर्वस्यां दिशि धूमकेतुरुदेति=उत्तरऔरपूर्व (दिशा) में पूंछलतारा उगता है । उत्तरपूर्वायां ज्यैष्ठे मासे सूर्य्य उदेति=उत्तरपूर्व (दिशा) में ज्येष्ठ मास में सूर्य्य उगता है । द्वितीयस्यां तृतीयायां वा कक्षायां रक्षको जागर्त्ति=दूसरी वा तीसरी कक्षा में चौकीदार जागता है । जरया पलितो देवदत्तः=बुढापे से देवदत्त पलित (जिस के शिरके बाल पकगये) है । जरसि पितॄन् सेवस्व=बुढापे में पितरों की सेवाकर । गोपे जलं देहि=गौपालनेवाली के लिये जल दे । ईश्वरस्य शक्ति-

विश्वपाऽस्ति=ईश्वर की शक्ति सबकीरक्षिका है । क्वचिद् गृहस्थे स्त्रियो निधिपाः भवन्ति=किसी २ गृहस्थ में स्त्रियां धनरक्षिका होती हैं। वृद्धत्वे मतिः प्रायः नश्यति=बुढापे में बुद्धि बहुधा नष्टहोजाती है । गतिरपि शिथिला जायते=चाल भी ढीली होजाती है । धृतिं धर्मस्य लक्षणं जानीहि=धैर्य को धर्म का लक्षण जान । बुद्ध्या विचारय=बुद्धि से विचार । रुचेरधिकं न भक्षणीयम्=रुचि से अधिक न खानाचाहिये । साधोः कृतिं पश्य=साधु की करनी को देख । भूत्यै यतस्व=ऐश्वर्य के लिये यत्नकर । रतेर्विरम=रति से विरामकर । ख्यात्यै लोको म्रियते=यश के लिये संसार मरता है । इत्यादि और भी ॥

६८—"त्रि" शब्द बहुवचनान्त है और यहां स्त्रीलिङ्ग में उस के रूप ऐसे होते हैं । जैसेः—

१—तिस्रः । २—तिस्रः । ३—तिसृभिः । ४—तिसृभ्यः । ५—तिसृभ्यः । ६—तिसृणाम् । ७—तिसृषु ॥

उदाहरण—

तिस्रः कन्याः क्रीडन्ति=तीन कन्या खेलती हैं । तिसृषु कन्यासु नास्ति दोषः=तीनों कन्याओं में दोष नहीं है । इत्यादि ॥

६९—"चतुर्" शब्द रेफान्त है पर रूप "त्रि" शब्द के तुल्य हैं । जैसे—

१—चतस्रः । २—चतस्रः । ३—चतसृभिः । ४—चतसृभ्यः । ५—चतसृभ्यः । ६—चतसृणाम् । ७—चतसृषु ॥

"द्वि" शब्दः—

१—द्वे । २—द्वे । ३—द्वाभ्याम् । ४—द्वाभ्याम् । ५—द्वाभ्याम् ६—द्वयोः । ७—द्वयोः ॥

(ईप्) ईकारान्त "गौरी" शब्दः—

१—गौरी । गौर्यौ । गौर्यः । २—गौरीम् । गौर्यौ । गौरीः । ३—गौर्या । गौरीभ्याम् । गौरीभिः । ४—गौर्यै । गौरीभ्याम् । गौरीभ्यः । ५—गौर्याः । गौरीभ्याम् । गौरीभ्यः । ६—गौर्याः । गौर्योः । गौरीणाम् । ७—गौर्याम् । गौर्योः । गौरीषु । सम्बो०—हे गौरि । हे गौर्यौ । हे गौर्यः ॥

इसी प्रकार नदी, गोमती, देवी, काली आदि के रूप जानो ॥

७०—"लक्ष्मी" "तरी" "तन्त्री" आदि में इतना भेद है कि प्रथमा के एकवचन में विसर्गान्त रहता है । जैसेः—१—लक्ष्मीः । १—तरीः । १—तन्त्रीः । इत्यादि । शेष रूप "गौरी" के तुल्य हैं ॥

७१–«स्त्री» शब्द को लक्ष्मी शब्द से भेद है । जैसेः—

१–स्त्री । स्त्रियौ । स्त्रियः । २–स्त्रियम्, स्त्रीम् । स्त्रियौ । स्त्रियः, स्त्रीः ।
३–स्त्रिया । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभिः । ४–स्त्रियै । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः ।
५–स्त्रियाः । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः । ६–स्त्रियाः । स्त्रियोः । स्त्रीणाम् ।
७–स्त्रियाम् । स्त्रियोः । स्त्रीषु । सम्बो०–हे स्त्रि । हे स्त्रियौ । हे स्त्रियः ॥

७२–«श्री» शब्द को स्त्री से भी भेद है । जैसे—

१–श्रीः । श्रियौ । श्रियः । २–श्रियम् । श्रियौ । श्रियः ।
३–श्रिया । श्रीभ्याम् । श्रीभिः । ४–श्रियै, श्रिये । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः ।
५–श्रियाः, श्रियः । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । ६–श्रियाः, श्रियः । श्रियोः । श्रीणाम् ।
७–श्रियि, श्रियाम् । श्रियोः । श्रीषु । सम्बोधन–हे श्रीः । हे श्रियौ । हे श्रियः ॥

उकारान्त "धेनु" शब्दः—

१–धेनुः । धेनू । धेनवः । २–धेनुम् । धेनू । धेनूः ।
३–धेन्वा । धेनुभ्याम् । धेनुभिः । ४–धेन्वै, धेनवे । धेनुभ्याम् । धेनुभ्यः ।
५–धेन्वाः, धेनोः । धेनुभ्याम् । धेनुभ्यः । ६–धेन्वाः, धेनोः । धेन्वोः ।
धेनूनाम् । ७–धेन्वाम्, धेनौ । धेन्वोः । धेनुषु । हे धेनो । हे धेनू । हे धेनवः ॥

«क्रोष्टृ» शब्द "गौरी" शब्द के सदृश है ॥

«भ्रू» शब्द «श्री» के तुल्य है ॥

"स्वयम्भू" शब्द जैसे पुंल्लिङ्ग में लिखा है वैसे ही यहां भी जानो ॥

७३—«स्वसृ» शब्द पुंल्लिङ्ग «धातृ» के तुल्य है केवल द्वितीया बहुवचन में इतना भेद है कि–स्वसॄः ॥

७४—«मातृ» शब्द पितृ के तुल्य है केवल द्वितीया बहुवचन में इतना भेद है । जैसेः–मातॄः ॥

«द्यौ» शब्द «गौ» के तुल्य है । «रै» शब्द पुंल्लिङ्ग के तुल्य है ॥

«नौ» शब्द «नौ» के तुल्य है तथा और शब्द भी जो पुंल्लिङ्ग औकारान्त हैं स्त्रीलिङ्ग में भी उसी प्रकार हैं ॥

हकारान्त "उपानह्" शब्द–

१–उपानत्, उपानद् । उपानहौ । उपानहः । २–उपानहम् । उपानहौ । उपानहः ।
३–उपानहा । उपानद्भ्याम् । उपानद्भिः । ४–उपानहे । उपानद्भ्याम् । उपानद्भ्यः ।

५–उपानहः । उपानद्भ्याम् । उपानद्भ्यः । ६–उपानहः । उपानहोः । उपानहाम् । ७–उपानहि । उपानहोः । उपानत्सु । सं०–हे उपानत्, द् ॥

१–उष्णिग्, क् । उष्णिहौ । उष्णिहः । इत्यादि । ३–उष्णिग्भ्याम् । उष्णिग्भिः । ४–उष्णिग्भ्यः । ७–उष्णिक्षु । शेष बीच २ के रूप उपानह् के सदृश हैं ॥

"दिव्" शब्द—

१–द्यौः । दिवौ । दिवः । २–दिवम् । दिवौ । दिवः ।
३–दिवा । द्युभ्याम् । द्युभिः । ४–दिवे । द्युभ्याम् । द्युभ्यः ।
५–दिवः । द्युभ्याम् । द्युभ्यः । ६–दिवः । दिवोः । दिवाम् ।
७–दिवि । दिवोः । द्युषु । सं०–हे द्यौः । हे दिवौ । हे दिवः ॥

"गिर्" शब्दः—१–गीः । गिरौ । गिरः । २–गिरम् । गिरौ । गिरः ।
३–गिरा । गीर्भ्याम् । गीर्भिः । ४–गिरे । गीर्भ्याम् । इत्यादि । ७–गीर्षु ॥

"पुर्" शब्दः—

१–पूः । पुरौ । पुरः । ३, ४, ५–पूर्भ्याम् । ७–पूर्षु । इत्यादि ॥

उदाहरण–

चतसृणां दिशां मध्ये तमो व्याप्तम्=चारों दिशाओं के बीच में अन्धकार व्याप्त है । द्वे गती स्तो मनस्विनाम्=दो गतियां हैं धीरों की । गौर्या शिवः आयाति=गौरी के साथ शिव आता है । नद्याः कूलं विघटयति पूरः=नदी के किनारे को तोड़ता है बाढ़ । गोतम्यै देहि=गोतमी के लिये दे । हे देवि किमहं करवाणि=देवि मैं क्या करूं । कालीं पश्य=काली को देख । व्यापारे लक्ष्मीर्निवसति=व्यापार में लक्ष्मी रहती है । तर्यामुपविश्य पारं गच्छ=नाव में बैठकर पार को चल । तन्त्रीं वादय=सितार को बजा । स्त्रियो भीरवः सन्ति=स्त्रियां डरपोक हैं । श्रिये यतस्व=लक्ष्मी के लिये यत्नकर । धेनूनां पयो मधुरमस्ति=गौवों का दुग्ध मीठा है । क्रोष्टुयाः खरतरः शब्दः=गिदड़ी का कड़ा शब्द है । स्त्रीणाम् भ्रुवौ प्रशस्येते=स्त्रियों की भौंहें प्रशंसाकीजाती हैं । स्वयम्भुवः प्रकृत्याः कार्यं जगत्=अनादि प्रकृति का कार्य्य जगत् है । स्वसुः पुत्रोऽयम्=यह बहिन का बेटा है । मातुः, मातरं स्मर=माता को स्मरणकर । दिवि चन्द्रः प्रकाशते=आकाश में चन्द्र प्रकाशता है । नावमारुह=नाव को चढ़ । उपानहां प्रहारः=जूतों की चोट । उष्णिहाधीते=उष्णिग् (छन्द) के साथ

पढ़ता है । शरदि द्यौः* स्वच्छा भवति=शरद् में आकाश स्वच्छ होता है ॥ पक्षिणां गिरः शृणु=पक्षियों की वाणियों को सुन । आसु पूर्षु के निवसन्ति= इन पुरियों में कौन बसते हैं ॥

"किम्" शब्द सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग में "सर्वा" के तुल्य है । जैसे :-

१—का । के । काः । २—काम् । के । काः । ३—कया । काभ्याम् । काभिः । ४-कस्यै । काभ्याम् । काभ्यः । ५-कस्याः । इत्यादि ॥

"इदम्" शब्द सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग :-

१—इयम् । इमे । इमाः । २—इमाम् । इमे । इमाः । ३-अनया । आभ्याम् । आभिः । ४—अस्यै । आभ्याम् । आभ्यः । ५—अस्याः । आभ्याम् । आभ्यः । ६-अस्याः । अनयोः । आसाम् । ७-अस्याम् । अनयोः । आसु ॥

त्यद्, तद्, यद्, एतद्, ये सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग में:—

१-स्या । त्ये । त्याः । २-त्याम् । त्ये । त्याः । आगे सर्वा के तुल्य ॥

१-सा । ते । ताः । २-ताम् । ते । ताः । आगे सर्वा के तुल्य ॥

१-या । ये । याः । २-याम् । ये । याः । इत्यादि ॥

१-एषा । एते । एताः । २—एनाम्, एताम् । एते, एने । एताः । एनाः । ३-एतया, एनया । ६, ७-एतयोः, एनयोः । शेष सर्वा के तुल्य ॥

चकारान्त "वाच्" शब्दः—

१-वाक्, ग् । वाची । वाचः । २-वाचम् । वाची । वाचः । ३-वाचा । वाग्भ्याम् । वाग्भिः । ४-वाचे । वाग्भ्याम् । वाग्भ्यः । ५—वाचः । वाग्भ्याम् । वाग्भ्यः । ६—वाचः । वाचोः । वाचाम् । ७-वाचि । वाचोः । वाक्षु । हे वाक्, ग् । इसी प्रकार "त्वच्" शब्द भी जानो ॥

पकारान्त "अप्" शब्द केवल बहुवचन में आता है (जल का नाम है)

१-आपः । २-अपः । ३-अद्भिः । ४अद्भ्यः । ५-अद्भ्यः । ६-अपाम् । ७-अप्सु ॥

शकारान्त "दिश्" शब्द "वाच्" के तुल्य है । जैसेः—

१-दिक्, दिग् । दिशौ । दिशः । २-दिशम् । दिशौ । इत्यादि ॥

---

*आकाशवाचक स्त्रीलिङ्ग है ॥

इसी प्रकार "दृश्" शब्द भी जानो ॥

षकारान्त "त्विष्" शब्दः—१-त्विट्, त्विड्। त्विषौ। त्विषः। आगे "रत्नमुष्" (देखो पृष्ठ ३०) के तुल्य जानो ॥

"सजुष्" और "आशिष्" शब्दों के रूप "विपठिष्" के तुल्य (देखो पृष्ठ ३०) जानो ॥

सकारान्त "अदस्" शब्द सर्वनामः—

१-असौ। अमू। अमूः। २-अमूम्। अमू। अमूः। ३-अमुया। अमूभ्याम्। अमूभिः। ४—अमुष्यै। अमूभ्याम्। अमूभ्यः। ५—अमुष्याः। अमूभ्याम्। अमूभ्यः। ६-अमुष्याः। अमुयोः। अमूषाम्। ७-अमुष्याम्। अमुयोः। अमूषु ॥

उदाहरण=

सुपुत्रोऽयं कस्याः कुक्षौ जातः=यह सुपुत्र किस की कुक्षि में उत्पन्न हुआ है ?। अस्याः साध्व्याः=इस साध्वी (पतिव्रता) की। यस्याः देव्याः कन्येऽयं सा क्वाऽस्ति?=जिस देवी की यह कन्या है वह कहां है ?। एषा अस्ति=यह है। त्वया किं प्राप्तम्=तुम ने क्या पाया ?। एताः कन्याः=ये कन्यायें। वाच्यर्था नियताः सर्वे=वाणी में अर्थ, नियत हैं सब। वृक्षस्य त्वचमुत्पाटय=वृक्ष की त्वचा (बक्कल) को उधेड़। अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति=जल से शरीर शुद्ध होते हैं। पूर्वस्यां दिशि सूर्य उदेति=पूर्वदिशा में सूर्य उगता है। दृशं वर्धय=दृष्टि को बढ़ा। त्विषो बिभ्यति=तेज से डरते हैं। आशिषां पात्रम्=असीसों का पात्र। अमूषां महिषीणां अहोभाग्यम्=इन रानियों का अहोभाग्य। अमुष्यै पुत्रमीश्वरो ददातु=इस के लिये पुत्र ईश्वर देवे ॥

इति सङ्क्षेपतः स्त्रीलिङ्गशब्दनिरूपणम् ॥

अथ नपुंसकलिङ्गशब्दनिरूपणम् ॥

अकारान्त "ज्ञान" शब्दः—१-ज्ञानम्। ज्ञाने। ज्ञानानि। आगे गृहशब्द (देखो प्रथमपुस्तक) के तुल्य और समस्त अकारान्त नपुंसक इसी के तुल्य हैं। जैसे—वनम्। धनम्। फलम्। पुष्पम्। मन्दिरम्। इत्यादि ॥

७५-केवल इतरप्रत्ययवाले, इतमप्रत्ययवाले, अन्य, अन्यतर और इतर इन ५ सर्वनामों में प्रथमा के एकवचन में इतना भेद हैः—

१-कतरत्। कतमत्। अन्यत्। अन्यतरत्। इतरत्। आगे गृहशब्द के तुल्य हैं ॥

श्रीपा, मधुपा, विश्वपा आदि आकारान्त भी नपुंसक में ह्रस्वान्तहोकर—

१–श्रीपम् । श्रीपे । श्रीपानि । १–मधुपम् । मधुपे । मधुपानि । इत्यादि गृह-शब्द के तुल्य ही होजाते हैं ॥

इकारान्त "वारि" (जल) शब्दः–१–वारि । वारिणी । वारीणि । २–वारि । वारिणी । वारीणि । ३–वारिणा । वारिभ्याम् । वारिभिः । ४–वारिणे । वारिभ्याम् । वारिभ्यः । ५–वारिणः । वारिभ्याम् । वारिभ्यः । ६–वारिणः । वारिणोः । वारीणाम् । ७–वारिणि । वारिणोः । वारिषु । हे वारे, हे वारि । हे वारिणी । हे वारीणि ॥

७६–इसी प्रकार "सुधी" शब्द भी ह्रस्व होकर जानना चाहिये परन्तु तृतीयादि विभक्तियों में पुल्लिङ्ग (देखो पृष्ठ १७ पं० २०) तुल्य ही होता है ॥

७७–इकारान्तों में केवल अस्थि, दधि, सक्थि और अक्षि इन चार शब्दों का तृतीयादि विभक्तियों में भेद है । जैसे–३–अस्थ्ना । दध्ना । सक्थ्ना । अक्ष्णा । ४–अस्थ्ने । दध्ने । सक्थ्ने । अक्ष्णे । ५।६–अस्थ्नः । दध्नः । सक्थ्नः । अक्ष्णः । ६ । ७–अस्थि, अस्थनि । अस्थ्नोः । दधि, दधनि । दध्नोः । सक्थि, सक्थनि । सक्थ्नोः । अक्षिण, अक्षणि । अक्ष्णोः । शेष सब रूप वारि शब्द के तुल्य जानो ॥

उकारान्त "मधु" शब्द वारि शब्द के तुल्य है ॥

७८–"सुधु" शब्द ह्रस्व होकर सुधी के तुल्य हो जाता है ॥

ऋकारान्त "धातृ" शब्दः–१–धातृ । धातृणी । धातृणि । २–धातृ । धातृणी । धातृणि । ३–धातृणा इत्यादि वारि शब्द के तुल्य जानो । ऐसे ही "ज्ञातृ" आदि भी ।

७९–"प्रद्यु" और "सुनृ" आदि भी ह्रस्व होकर मधु के तुल्य हैं ॥

८०–ऐकारान्त "प्रै" को ह्रस्व होकर–प्रि होजाता है और वारि के तुल्य होता है केवल ३–४–५–प्रिभ्याम् । ३—प्रिभिः । ४–५–प्रिभ्यः । ७–प्रिषु । इतना भेद है ॥

उदाहरण–ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः=विना ज्ञान से मुक्ति नहीं । धनानि के न सेवन्ते=धनों को कौन नहीं सेवा करते । वनानि दहत्यग्निः=वनों को फूंकता है अग्नि । द्वे फले गृहाण=दो फल ले । कतरत् कुलं सुशीलम्=कौनसा कुल सुशील है । कर्मणोऽन्यदेव फलम्=कर्म का अन्य ही फल है । द्वयोरन्यतरत् फलं गृहाण=दो में किसी एक फल को लेले । अहमितरदेव ग्रहीष्यामि=मैं और ही लूंगा । विश्वपं दैवतं किमस्ति=विश्वरक्षक देवता कौन है । ब्रह्मैव=ब्रह्म ही है । मधुपानि भ्रमरकुलानि रुवन्ति=मधु पीने वाले भौंरों के-झुण्ड बोलते हैं । वारीणि वर्षन्ति=जल बर्षते हैं । वारिभिरापूरितं नभः=जलों से भरगया आकाश ।

एषां कुलमेव सुधि=इन का कुल ही सुबुद्धि है । अस्थ्नां संयोगः=हड्डियों का जोड़ । दधि पिब=दही पी । अक्षिणी उन्मीलय=२ आखें खोल । अस्थ्नि आघातो जातः=हड्डी में चोट लगी है । सर्पिः दुग्धं मैरेयं वा मधु वदन्ति=घी, दूध वा मदिरा को मधु करते हैं । सुलु भृत्यकुलम्=अच्छा काटने वाला नौकरों का झुण्ड । एकं ब्रह्म जगतो धातृ वर्त्तते=एक ब्रह्म जगत् का धर्त्ता है । तदेव सर्वस्य ज्ञातृ=वही सब का जानने वाला ॥

हकारान्त "स्वनड्वह्" शब्दः—१=स्वनड्वान्, स्वनड्वाहौ । स्वनड्वाहः । इसी प्रकार द्वितीया में । और तृतीया से लेके पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो (देखो पृष्ठ २२)

रेफान्त "वार्" शब्द :—१—वाः । वारी । वारि । इसी प्रकार द्वितीयाविभक्ति भी । ३—वारा । वार्भ्याम् । वार्भिः । ४—वारे । वार्भ्याम् । वार्भ्यः । ५—वारः । वार्भ्याम् । इत्यादि ॥

"चतुर्" शब्द बहुवचन में ही होता है—१—चत्वारि । २—चत्वारि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य (देखो पृष्ठ २२) हैं ॥

मकारान्त "किम्" शब्द सर्वनाम—१—किम् । के । कानि । २—किम् । के । कानि । आगे पुल्लिङ्ग सर्वशब्द के तुल्य (देखो पृष्ठ २२) है ॥

१—इदम् । इमे । इमानि । २—इदम्, एनत् । इमे, एने । इमानि, एनानि । आगे पुल्लिङ्ग (देखो पृष्ठ २३) के तुल्य है ॥

नकारान्त "अहन्" शब्द—१—अहः । अह्नी, अहनी । अहानि । २—अहः । अह्नी, अहनी । अहानि । ३—अह्ना । अहोभ्याम् । अहोभिः । ४—अह्ने । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । ५—अह्नः । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । ६—अह्नः । अह्नोः । अह्नाम् । ७—अह्नि, अहनि । अह्नोः । अहस्सु । सम्बो० प्रथमा तुल्य है ॥

"दधिहन्" शब्दः—१—दधिह । दधिहनौ । दधीहनि । २—दधिह । दधिहनौ । दधीहनि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है ॥

"सुपथिन्" शब्दः—१—सुपथि । सुपथी । सुपन्थानि । २—सुपथि । सुपथी । सुपन्थानि । आगे पुल्लिङ्ग पथिन् शब्द (देखो पृष्ठ २४) के तुल्य जानो ॥

दकारान्त " तद् " शब्द सर्वनाम—१—तद् । ते । तानि । २ तद् । ते । तानि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है । इसी प्रकार त्यद्, यद्, एतद्, भी जानो ॥

तकारान्त "शकृत्" शब्द—१—शकृत् । शकृती । शकृन्ति । २—शकृत् । शकृती । शकृन्ति । आगे महत् शब्द (देखो पृष्ठ २८) के तुल्य जानो ॥

"ददत्" शब्दः—१—ददत् । ददती । ददति, ददन्ति । २—ददत् । ददती । ददति, ददन्ति । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है इसी प्रकार शासत्, चकासत्, जाग्रत् जक्षत् और दरिद्रत् के रूप भी जानो ॥

षकारान्त-"धनुष्" शब्दः-१-धनुः। धनुषौ । धनूंषि । २-धनुः । धनुषी । धनूंषि । ३-धनुषा । धनुर्भ्याम् । धनुर्भिः । ४-धनुषे । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः । ५-धनुषः । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः । ६-धनुषः । धनुषोः । धनुषाम् । ७-धनुषि । धनुषोः । धनुःषु ॥

स्वनड्वुत् यानं गच्छति-अच्छे बैल वाला यान (रथ) जाता है । वारि निमग्नो बालः=जल में डूब गया बालक। चत्वारि वेदपुस्तकानि सन्ति=वेद पुस्तकें चार हैं । कानि २ ?=कौन २ ? । ऋग्यजुःसामाऽथर्वनामकानि=ऋग् १ यजुः २ साम ३ अथर्व ४ नामक । इमानि धर्मपुस्तकानि सन्ति=ये धर्म-पुस्तक हैं । अद्यौ व्यतीते=दो दिन बीतगये । दण्डीनि यतिकुलानि शोभन्ते=दण्ड वाले संन्यासियों के झुण्ड सुहाते हैं । वनान्यपि सुपन्थानि जातानि=वन भी सुमार्ग वाले होगये । तद्दिनं व्यर्थम्=वह दिन व्यर्थ है । एतान्यहानि उष्णानि=ये दिन गर्म हैं । यानि दिनानि गतानि तानि पुनर्नाऽऽगमिष्यन्ति=जो दिन गये वे फिर न आवेंगे । तस्य शकृत् अवरुद्धम्=उस का दस्त (पाखाना) रुक गया । अमत्यं महत् पापम्=झूंठ बड़ा पाप है । गृहं हर्षं ददत् प्रतीयते=घर हर्ष देता प्रतीत होता है । राजकुलं शासत् महीयते=हुकूमत करता हुवा राजकुल महिमा पाता है । चकासत् रुक्मयं हर्म्यं पश्य=चमकते हुए सुनहरे महल को देख । जाग्रत् उयोतिः पश्य=जागती उयोति को देख । जक्षत् वानरकुलं त्वरयति=खाते हुए वानरों का झुंड जल्दी करता है । सम्प्रति गृहाणि दरिद्रन्ति सन्ति=आज कल घर ग़रीब होते हुए हैं । ऐन्द्रं धनुः पश्य=इन्द्र के धनुष (अर्थात् सूर्य्य का प्रकाश जलकणों पर पड़ के उत्पन्न हुए) को देख । धनुषि बाणः सन्धीयते=धनुष में बाण (तीर) लगाया जाता है ।

सकारान्त "पयस्" शब्द ।

१=पयः । पयसी । पयांसि २-पयः । पयसी पयांसि । ३-पयोभ्याम् आगे पुँल्लिङ्ग "वेधस्" के तुल्य है । (देखो पृष्ठ ३१) ॥

"अदस्" शब्दः—१—अदः । अमू । अमूनि । २—अदः । अमू । अमूनि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है । (देखो पृष्ठ ३१) ॥

पयो वर्षन्ति जलदाः=बादल जल बर्षाते हैं । पयसा कमलानि शोभन्ते=जल से कमल सुहाते हैं । निर्मलमदः पयः=यह जल निर्मल है । अमूनि वनानि शुष्कानि=ये बन सूख गये । अमू सरसी स्वच्छे स्तः=ये दो तालाब स्वच्छ हैं इत्यादि ॥

इति नपुंसकलिङ्गस्वरूपनिरूपणम् समाप्तोऽयं तृतीयश्च भागः ॥

नीचे लिखी पुस्तकादि

पं० छुट्टनलाल स्वा . परीक्षितगढ़ जि० मेरठ से मिलेंगे ॥

ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे प्रथमोंशः -)॥
तथा द्वितीयोंशः -)॥।
भजनेन्दु -)
भजनप्रकाश)।
संस्कृत भाषा प्रथमं पु०)॥।
तथा द्वितीयं पु० -)।
वेश्यानाटक उर्दू =)॥
रामायण का आल्हा पहली मार)।
किराणाशास्त्रार्थ =)
रामचन्द्रदर्शन)१२॥
कलियुग लीला)१२॥
दमयन्तीस्वयंवर नाटक ≡)
अष्टाध्यायी मूल ≡)
भर्तृहरिनीतिशतक भाषा टीकासहित ≡)
गणरत्नमहोदधि १॥) कोष+
तारीखदुनियां (नागरी) =)
यज्ञोपवीतशङ्कासमाधि -)
सात उपनिषद् भाषा और संस्कृत भाष्य ३)
पृथक् २ ईश ≡) केन ।) कठ ॥।) प्रश्न ॥=)
मुण्डक ॥।) माण्डूक्य ≡) तैत्तिरीय ॥।)
मातृशिक्षा ।=)
कामिनीकल्पद्रुम ॥)
कुमारीभूषण -)
विदुरनीति मूल ≡)
दशोपनिषद् मूल ।-)
चाणक्यसारमूल)॥
जीवनयात्रा ≡)
सीताचरित्र नावल (नागरी) प्र० भाग ॥।)
तथा उर्दू चारों भाग १॥।) प्रति भाग ॥)
आयुर्वेदशब्दार्णव १) (वैद्यककोष)

कमीशन—

इकट्ठे लेने वालों को ४) में ५) का, ७) में १०) का, और २०) में ३०) का माल दिया जावेगा ॥ डाकव्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है ॥

विधिपूर्वक बने हुए यज्ञोपवीत ॥

रेशम के अव्वल दर्जे के २० का मूल्य ५)
" दूसरे " " २)
सूत के अव्वल दर्जे " १)
" दूसरे " ॥)
" तीसरे " ।-)